



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Centre

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, S.R.T.M.

महात्मा गांधीजींचे सत्य आणि अहिंसे संबंधी विचार

प्रा. नवनाथ जानोबा पवळे

कालिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय शिरूर कासार

प्रस्तावना :- हे संशोधन महात्मा गांधीजींच्या सत्य आणि अहिंसा तत्त्वज्ञानाचा अभ्यास करण्याच्या हेतूने घेतले आहे. महात्मा गांधी हे एक भारतीय क्रांतीकारक आणि धार्मिक नेते होते. ज्यांनी आपली धार्मिक शक्ती राजकीय आणि सामाजिक सुधारणेसाठी वापरली मोहनदास करमचंद गांधी यांच्या सत्य, अहिंसा आणि सत्याग्रह विचारांमुळे ब्रिटीशांच्या अन्यायी राजवटीचा अंत झाला. महात्मा गांधी यांनी केवळ तत्त्व विचार म्हणूनच सत्य अहिंसा आणि सत्याग्रहाची निर्मिती केली असे नाही तर त्यास प्रत्यक्ष व्यवहारात उतरविले. महात्मा गांधीजींचे सत्य आणि अहिंसा हे तत्त्व म्हणजे आज बगला मिळालेली देणगीच म्हणावी लागेल. आज घडीस दक्षिण आफ्रिकेतील नेल्सन मंडेला अमेरिकेचे राष्ट्राध्यक्ष बराक ओबामा अशा असंख्य देशांना आणि राष्ट्र प्रमुखांना त्यांच्या विचारांची गरज जागतिक शांततेसाठी भासू लागली आहे. गांधीजींच्या या तत्वाचा व्यक्तींनी जर आपल्या दैनंदिन जीवनात अवलंब केला तर निश्चितच तो स्वतःच्या दुर्गुणावर विजय मिळवू शकतो. तो सामाजिक जीवनात एक आदर्श नागरिक म्हणून आपली ओळख निर्माण करू शकतो. हे विचार आजही एकविसाव्या शतकात उपयोगी पडतात. महात्मा गांधीजींने आयुष्यभर सत्य हे साध्य तर अहिंसा हे त्यांनी वापरलेले साधन म्हणून वापरले आहे.

* **सत्य :-** म. गांधी यांनी सत्याला आपल्या जीवनाचे साध्य मानले आहे. सत्याचा अर्थ खरे बोलणे असा आहे. याचाच दुसरा अर्थ खोटे बोलू नये असा आहे. सत्य हा शब्द संतपासून आला आहे. सत्याशिवाय दुसरे काहीही वास्तव नाही म्हणूनच कदाचित सत्य हे देवाचे सर्वात महत्वाचे नाव आहे. खर तर देव सत्य आहे. असे म्हणण्यापेक्षा सत्य देव आहे असे म्हणणे अधिक योग्य आहे. महात्मा गांधीजींनी या प्रकारात एखाद्या निष्ठाप बालकास रडविणे, एखाद्या माणसाचा अपमान करणे, एखाद्यास कामामध्ये अडथळा निर्माण करणे म्हणजे हिंसा करणे असे ते म्हणतात. यामुळेच विश्वात प्रेमाची, कृतीची भावना निर्माण करणे सृष्टीतील प्राणीमात्रेवर दया करणे यातूनच विधायक सत्याची निर्मिती होते. म्हणूनच या प्रकारास महात्मा गांधी खरे सत्य मानतात. जेथे सत्य आहे तेथे ज्ञान आहे. जेथे सत्य नाही तेथे ज्ञान असू शकत नाही. सत्य आणि ज्ञान असले तेथे आनंद असतो सत्य हे चिरंतन असल्यामुळे त्यातून मिळणारा आनंदही चिरंतन प्राप्त होतो.

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 7.139

Indexed (SJIF)



February 2020 Special Issue-23 Vol.2

The Role of Language and Literature in Unity in Diversity

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr. Aqueela Syed Gous

हिंदी साहित्य एवं समाज में सिनेमा का योगदान

डॉ. बापमारे के.एच.

हिंदी विभाग, कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर(कासार) जि.बीड.

संज्ञावना :-

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। यदि इस नजरिए से हिंदी सिनेमा को देखा जाए तो सिनेमा को समाज की अन्यायपूर्णताओं में बहने वाले रक्त की मंजारी की जा सकती है। प्रारंभ से ही सिनेमा ने समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के प्रभाव छोड़े हैं। भारत की पहली फिल्म 'मत्स्य हरिश्चन्द्र' देखकर बालक मोहनदास करमचन्द गाँधी रो पड़े थे और राजा हरिश्चन्द्र की कल्पविद्या से प्रेरित होकर उन्होंने आजीवन मत्स्य बोलने का व्रत ले लिया था। वास्तव में इस फिल्म ने ही उन्हें मोहनदास से महात्मा गाँधी बनने की दिशा में पहला कदम रखने हेतु प्रेरित किया था। सम्मग्राज, नन्दीवन, म-मोड़ अर्थात् सिनेमा ने समकालीन समाज पर समाज को नया मोड़ देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निर्वहण की है। साहित्य ने भी समाज को नया मोड़ देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निर्वहण किया है। साहित्य ने भी समाज के इस महत्वपूर्ण दृश्याभिव्यक्त माध्यम के पुष्पत-पल्लवन में अपना योगदान यदि हम शुरूआती सिनेमा की ओर नजर डालें तो पाते हैं कि इसकी शुरूआत ही पौराणिक साहित्य के सिनेमा रूपान्तरण से हुई। 'मत्स्य हरिश्चन्द्र', भक्त प्रह्लाद, लंका दहन, कालिय मर्दन, अयोध्या का राजा, सौराष्ट्री जैसी प्रारंभिक दौरे की फिल्मों धार्मिक ग्रंथों की कथाओं का अंकन थी। सिनेमा एक अत्यंत शक्तिशाली विधा है इस बात को उसके जन्म के तुरंत बाद ही पहचान लिया गया था। जनसंख्या के एक बहुत बड़े वर्ग तक किसी संदेश को पहुँचाने के लिए कोई भी दूसरी विधा इतनी शक्तिशाली नहीं थी। बल्कि सिनेमा ने अपनी वनावट में रंगमंच, साहित्य, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य आदि सभी रचनात्मक प्रयासों को बड़ी चतुराई और कुशलता से समेट लिया। पूँजीवादी देशों में एक ओर सिनेमा से मनोरंजन की आड़ में उदात्तवादी सामाजिक संदेश दिए और दूसरी ओर समाजवादी देशों में प्रचार की हद तक पहुँचने का खतरा डालते हुए सिनेमा की शक्ति को पालना गया।

साहित्य शब्द की विधा है। स्वर के साथ जुड़कर यह आकाशवाणी और मंच की विधा हो जाती है। कला की अन्य विधाएँ साहित्य की तरह विधा से मिलकर अन्य माध्यमों के साथ नई विधा की रचना करती हैं। साहित्य शब्दों के संकीर्ण अर्थ के अंतर्गत हम मनुष्य की केवल शारीरिक तृप्ति तथा ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा को पूर्ण करने वाली पुस्तकों को ग्रहण नहीं करते, बरन हम केवल उसे ही साहित्य समझते तथा मानते हैं जो कि मनुष्य के जीवन को सरस, सुखी तथा सुन्दर बनाने का प्रयत्न करता है। साहित्य का सिनेमा में अद्भुत रिश्ता है। वर्तमान में तकनीकी विकास ने सिनेमा को सम्पन्न किया है तो चुनौती भी खड़ी की है। जनसंचार एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है, जो लोगों की मनोवृत्ति तथा विचारधारा को बदलने में मानवीय संवेदना को जगाने में तथा जनसामान्य को सचेत करने में प्रभावकारी सिद्ध कर सकता है। मानवीय मीडिया का मूलतः आधार प्रेम ही है और यह प्रेम विकोण विध में प्रकृत है। प्रकृत कथा में कुछ भी गूढ़ता नहीं है। अतः भारत के सांस्कृतिक भावक(दर्शक) को ध्यान में रखाकर लिखी गई यह कथा विन्तुल सपाट व स्पष्ट होती है।

सिनेमा साहित्य की एक विधा है। इसे भी उन्हीं तकजों को पूरा करना चाहिए, जो दूसरी साहित्यिक विधाएँ पूरी करती हैं। काली वह प्रचार या प्रोपोगेंडा नहीं है, वह लोगों को सुख प्रदान करता है तथा इस सुख से वह समाज को स्वस्थ बनाने का लड़ाई लड़ता है जिस तरह कोई नज्म, नाबिल, कहानी या साहित्य जो इस कर्तव्य को पूरा नहीं करता वह बेकार है, उसी तरह जो फिल्म उस कर्तव्य को पूरा नहीं करती वह त्रुटिपूर्ण है। लेकिन जब सामाजिक भलाई की बात करते हैं तो दृष्टिकोण और perspective की बात निकल आती है। उदा. के लिए आज भारत में बहुत से लोग यह समझते हैं कि हमारे समाज का जीवन राम मंदिर के बनने या न बनने पर आधारित है। मंदिर बना तो समाज है न बना तो समाज नहीं है। बहुत से लोग यह समझते हैं कि बाबरी मस्जिद हमारे समाज के स्वास्थ और जीवन का प्रतीक है। तथा कुछ लोग यह समझते हैं कि हमारा समाज राम मंदिर और बाबरी मस्जिद के बिना भी जिन्दा रह सकता है। मतलब यह है कि राम मंदिर भी नहीं है और बाबरी मस्जिद भी नहीं है। अन्तर सिर्फ दृष्टिकोण का है और वास्तव में सही दृष्टिकोण कला का आधार है। दृष्टिकोण के बिना कला की रचना संभव नहीं। इसलिए सिनेमा बनानेवालों के पास भी एक दृष्टिकोण होना चाहिए। जिस तरह साहित्यकार का एक दृष्टिकोण एक point of view होना चाहिए उसी तरह पाठक का भी एक दृष्टिकोण होना चाहिए।

अगर एक बार ये बात तय हो जाती है कि सिनेमा का लेखक कौन है तो सिनेमा को समझने का काम लगभग आसान हो जाता है क्योंकि सिनेमा के लेखक को निर्धारित किये बिना उसकी भाषा भी निर्धारित नहीं की जा सकती क्योंकि यही एक ऐसा आर्ट है जिसमें कई कलाकार भाग लेते हैं। स्क्रिप्ट रायटर अपना काम करता है फिर सिनेमोटोग्राफर अपना फिर अदाकार एक्टर और म्यूजिक कंपोजर और इन सबके ऊपर निर्देशक जो दर्शक को भी अपने दिमाग में रखता है। वह जानता है कि वह जिसके लिए फिल्म बना रहा है। वह जानता है कि उसके दर्शकों का दिमाग सुख को किन रास्तों से परिचित है और वह अपना बयान सदैव दर्शक के मनोरंजन के पैपिंग पेपर में लपेट कर देता है। सिनेमा की असली ताकत यही है कि वह भी कभी देखनेवाले को नजर अंदाज नहीं करता। यह बात कवियों, कहानीकारों का उदात्तवादी लेखकों के बारे में नहीं कही जा सकती संदेश तो वह भी देते हैं लेकिन पाठक का ख्याल किये बिना। लेकिन सिनेमा वह मोर है जो काल में नाच ही नहीं सकता क्योंकि दर्शकों के बिना उसका कोई वजूद ही नहीं है। इसलिए आम आदमी से उसका सीधा संबंध है। अतः उस कला की ओर ध्यान देने की विशेष रूप से आवश्यकता है।

सिनेमा के संबंध में हमारे बुद्धिजीवियों का बहुत दिलचस्प रवैया है। वे फिल्मों देखते तो हैं लेकिन उन पर गंभीरवर्चा नहीं करना चाहते। वे मुह तो खाते हैं लेकिन गुलगुला में परहेज करते हैं। हमारे मध्यवर्ग की दोहरी नैतिकता यहाँ भी अड़े आती है। सिनेमा हमारे समय की कलाक कला है और इसे संपूर्ण कला कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। बीसवीं शताब्दी के ज्ञान-विज्ञान की यह सबसे महत्वपूर्ण देन है। इसमें कालक, संगीत, काव्य, उपन्यास आदि का अद्भुत समन्वय होता है। साहित्य की तरह यह व्यक्तिगत प्रयास नहीं है बल्कि सामूहिक प्रयास है।

VOL. 5
SPECIAL ISSUE 1
SEPTEMBER 2019



ISSN:2454-5503

IMPACT FACTOR: 4.197 (IIJIF)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of NAAC sponsored seminar on

Use of Technology and E-Content in Teaching and Learning

23rd September, 2019



Issue Editors

Dr Vishnu Patil

Dr Avinash Dhotre



Organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
DEOGIRI COLLEGE, AURANGABAD



Current Scenario of Indian Education System: A Review

Mr. Lahoti Ramesh Kachrual
Asst. Professor, Dept. of English
Kalikadevi College, Shirur Kasar Dist Beed

Introduction:

Every human being is some or less is engrossed in his or her work. Everyone is busy in the hustle and bustle of life. India is developing and densely populated country. India has got independence in 1947, from that time special stress is given by Indian government. In spite of all these efforts, it is seen that, India is seen nowhere in the top ranking list of education system. The present research paper is going to focus on the present scenario of India's education system. The Indians feel very comfortable if the children either choose medical or engineering field. It is seen that the parents feel mentally satisfactory if children become either doctor or engineer. In this process the parents never take in to consideration the mentality of their children. It is fact that the level of intellectuality differ from person to person. So it becomes important to find the root cause behind it.

Indian Education System:

The structure of Indian education system is as, "The education system in India is sometimes called a "10 + 2 + 3" system. This means that the first decade of a child's education is mandatory, per the federal government. Most students begin their schooling at age five, in the form of preschool. By the time they're six, primary school begins. Students remain obligated to attend school until age 14, at which point they may choose to halt their education." (<https://transferwise.com/gb/blog>) Education is a lifelong process. Man learns from each and every experience of life. One can get knowledge, skills, values and habits from education. In present education system students spend more time in school compared to their home. The main thing is that the schools like machines only behind the completion of curriculum. Imparting knowledge and inculcating values becomes secondary.

In the process, students concentrate only on the marks. To fulfill this purpose, they attend extra coaching classes. As a result, their personality development lacks behind, they only remain confined to their readings. The students are not given enough time to think except reading. Throughout the day, they have to memorize lessons and on the day of exam, they are expected to write as it is in the answer sheets. On return, they are even asked about the number of pages of answer sheets. Such is the condition of the students. In such a suffocating atmosphere, students even do not speak the curious and innocent questions due to fear. The aim of this paper is not to blame anybody for this as the whole system seems to be involved in the

process. Sport is a kind of elixir in the overall development of children. Most of the parents do not allow their children to go outside and play games. The same is followed in some schools. In the period of sport, some teachers are after the completion of incomplete syllabus.

If we peep in the other countries contribution to sport, it is evident that the counties like China, America, England, the Olympic medals are to the name of these countries. The feeling and passion of sports is to be inculcated from the young age i.e. from school life. If this opportunity is missed, all the efforts in the later life are vain. The overall development of personality should be the purpose of education. It is also important to get acquaint to the modern technology as it is the need of the hour. With the use of modern technology, the study can become enjoyable. The study with entertainment is ever lasting. The problems in education at various levels are focused below.

Problems of Primary Education:

Most of the parents do not bother about their children's education. The reason behind it is their poor condition. In most of the families the girl child is resisted from going to school. This partiality is clear in the villages. They use the power of the girls for the domestic purposes. They have to fetch water and take care of the siblings in the family.

Migration of the family is also a reason of not getting education to the children. The family in search of food wonders from one place to another. In these efforts, the family doesn't get enough time to think about the

children's education. Due to illiteracy of the parents, they ignore the importance of education. They don't feel the need of imparting education to their children. In some regions the rate of giving birth to the children is surprising. In big and joint families, it is very difficult to give concentration to the education of the children. In some villages, there is only facility of primary education. The parents either have a option to send the children to the taluka for further education or to stop the education up to primary level. It is also being noteworthy to take in to consideration the problems of the resources in some schools. A few schools in India don't have furniture, urinals and even drinking water. As a result, most of the parents are not interested in the education system. From all the mentioned things, it becomes necessary to give the education to the children and bring them to mainstream. It is also a fact that the teachers are not happy to go to the villages and to the slums. So the most of the schools run with unqualified staff. Even the syllabus seems to be neither child nor life oriented. The emphasis on the creativity of the student is important. Activity based education is important.

Problems of Secondary Education

The syllabus of the secondary school is heavy. In curriculum, there is no scope for experimentation and research. The parents cannot afford the heavy expenditure. It creates a kind of burden on the family. The compulsion of all subjects is rather boring and uninteresting for the students. To overcome these problems, updating in the syllabus is important.



Problems of Higher Education:

The condition of the higher education is also same. Some colleges are expensive. Most of the students take admissions but leave college without completing the degree. Some students do not take interest in study. Due to the facility of online education, they think, they can complete their education without going to college.

Colleges are too expensive and inefficient. Students don't work very hard and learn little. A minority of students graduate on time and many don't graduate at all. The availability of online education will create laziness among students. Some of the students think that there is no need to go to college and waste time as the fear of unemployment.

Conclusion:

To overcome all these problems, the parents should give freedom to their children to go to the field of their own interest. The recruitment of quality teachers at school and college level is important. The syllabus should be student centered. The attitude of the parents regarding education system should be changed. Vocational courses should be given importance. It is a step in lessening the unemployment. Remedial classes should be arranged for the weaker students

Works Cited:

<https://www.caclubindia.com/articles/current-scenario-of-indian-education-system-28474.asp>

<https://transferwise.com/gb/blog/indian-education-overview>

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
October-2019 Special Issue - 200

Cotemporary Problems in India and Remedies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)



- This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
 - Cosmoc Impact Factor (CIF)
 - Global Impact Factor (GIF)
 - International Impact Factor Services (IIFS)

65	आतंकवाद : समस्या तथा नियंत्रण	संदीप गोरे	261
66	समकालीन हिंदी कविता में स्त्री संवेदना	संतोष नागरे	265
67	हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श	डॉ. सुनिल डहाले	271
68	कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में दलित नारी जीवन	डॉ. रजनी शिखरे, अशोक उधडे	275
69	विनय मिश्र की गज़लों में बाजारवाद	डॉ. रजनी शिखरे	278
70	वाहूरू सोनवणे की कविताएँ ('पहाड हिलने लगा है' के संदर्भ में)	संतोष नागरे	281
मराठी विभाग			
71	पर्यावरण प्रशासन : काळाची गरज	डॉ. व्ही. पी. सांडूर	287
72	भारतीय लोकशाही मधील 'भ्रष्टाचार' एक प्रबळ समस्या	डॉ. अंकुशराव चव्हाण	290
73	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	साम्यश्री पानढवळे	293
74	बीड जिल्ह्यातील इमारत बांधकाम कामगारांच्या आर्थिक स्थितीचा अभ्यास	एस. ई. भोसले	298
75	नक्षलवाद एक सामाजिक समस्या : सामाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. दत्तात्रय भूताळे	304
76	शेतकरी आत्महत्या भारतीय समाजासमोरील अन्धान व उपाय योजना	टी. एस. बिडवे	308
77	नक्षलवादी चळवळीची विचारसरणी	डॉ. रजनी बोरोळे	312
78	भारतीय राजकारण आणि धर्म, जात, भाषा	डॉ. देविदास नरवाडे	318
79	माँव लिचींग : एक गंभीर समस्या	डी.एन. रिठे	321
80	भ्रष्टाचार : एक विवेचन	डॉ. डी.के. डास	325
81	दहशतवाद	डॉ. बी.एस.चव्हाण	330
82	मानसशास्त्र आणि दहशतवाद : एक आकलन	डॉ. अतुल पवार	335
83	भ्रष्टाचार : कारणे व उपाय	डॉ. भगवान वाघमारे	338
84	नक्षलवाद : भारतातील कडव्या साम्यवादी संघटनांची सशस्त्र चळवळ	डॉ. भारत त्रिचितकर	342
85	मराठवाड्यातील सिमांत शेतकऱ्यांच्या समस्या आणि त्यांसाठी उपाय	गोविंद काळे व दीपक भारती	347
86	शेतकरी आत्महत्या : कारणे आणि उपाय	डॉ. दत्तात्रय हुंबरे	350
87	नक्षलवादी चळवळीची विचारधारा आणि व्यवहार	डॉ. एस. पी. घायाळ	353
88	मराठी कादंबरी आणि अर्थकारण : विशेष संदर्भ 'फेसाटी'	डॉ. गोविंद काळे	359
89	सामुहिक हिंसाचार	डॉ. विठ्ठल जाधव	363
90	त्रिटिशांच्या कायद्याचा भारतीय समाजावर झालेला परिणाम	सचिन पांडव, डॉ. लक्ष्मीकांत जिरेवाड	368
91	वनतोडीमुळे उदभवणाऱ्या समस्यांचे अध्ययन (संदर्भ : पवन तालुक्यातील मिन्ती या गावातील कुटुंब)	डॉ. न्योती नाकतोडे	373
92	पर्यावरणविषयक मुद्दा	डॉ. काकासाहेब पोफळे	389
93	स्वयंसहाय्यता गट आणि सशक्तीकरण : एक अवलोकन	डॉ. संतोष काकडे	383
94	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	डॉ. काशिनाथ पल्लेवाड (सावळीकर)	387
95	सामाजिक समस्या आणि नव्वदोत्तरी मराठी कविता	डॉ. समिता जाधव	390
96	भारतातील दारिद्र्य	डॉ. शिवाजी पाते	395
97	जेष्ठ नागरिकांच्या समस्यांचे सामाजिक निराकरण	डॉ. सुधीर येवले	400
98	भ्रष्टाचार : भारतीय समाजासमोरील एक ज्वलंत समस्या	डॉ. सुनंदा आहेर	404
99	पर्यावरण आणि भारतीय शेती	डॉ. योगेश पाटील	409
100	समकालीन राजकीय परिस्थिती आणि विरोधी पक्षाची भूमिका	डॉ. भुजंग पाटील	412



सामुहिक हिंसाचार

Dr. Jadhav Vitthal Sakharam

Head & Asst. Prof. Dept. of Pub-Administration

Kalikadevi Arts, Comm. & Science College, Shirur (Ka.) Dist. Beed

Jadhavvitthal40@gmail.com मो.नं. 9404024032

गोपवारा (Abstract)

गेल्या काही वर्षात झुंडबळी प्रकरणे भारतात त्याचबरोबर महाराष्ट्रात घडत आहेत. त्यात समाजातील दुर्बल घटक, अल्पसंख्याक, दलित व महिला-मुलींवर होणाऱ्या सामुहिक हिंसाचाराचा उल्लेख करावा लागेल. त्यात घुळे जिल्ह्यातील राईनपाडा येथे भटके विमुक्त यांची संशयावरून झालेली सामुहिक हत्या, राजस्थानमधील अलवर येथे जमावाकडून अल्पसंख्याक समाजातील शेतकऱ्यांची हत्या, बिहार, उत्तर प्रदेश येथे वसतिगृहातील मुलींवर झालेला सामुहिक अत्याचाराची घटना, इत्यादी घटनांवर त्याचबरोबर देशातील व राज्यातील विचारवंत, कलावंत यांचे या संबंधाने मत व त्या संबंधाने झालेला वाद-प्रतिवाद, मुख्य मुद्दा आणि सारांश मांडण्यात आला आहे व शेवटी शिफारशी सांगितल्या आहेत.

मुख्य शब्द (Key Words)

समुह, हिंसा, धर्म, मानसिकता

प्रस्तावना

सामुहिक हिंसाचार, समुह हत्या, झुंडबळी इत्यादी नावाने त्याचे विश्लेषण आपण करू शकतो आपल्या महाराष्ट्रात व देशात गेल्या काही वर्षात गोवि लिचिंग अथवा सामुहिक हिंसाचार घटना घडलेल्या आहेत. त्यात पहिलुखान मर्डरकेस लिचिंग मधील ६ आरोपी निर्दोष मुक्त केले, ही घटना राजस्थान येथील अलवा जिल्हा येथे १ एप्रिल २०१७ रोजी जयपूर मधून गावी घेऊन पहिलुखान यांची दोन मुले व इतर जण हरियाणातील आपल्या गावी निघाले होते. यावेळी गो तस्करी करीत असल्याच्या संशयातून या सर्वांना गोरक्षकांनी बेदम मारहाण केली होती. त्यात पहिलुखान यांचा ३ एप्रिल २०१७ रोजी मृत्यू झाला. यातील आरोपींना 'बेनेफिट अॅण्ड डाऊट' च्या आधारावर योगेंद्रसिंग खटाणा यांना व साथीदारांना सजा माफ केली. या सामुहिक हिंसाचार प्रकारात जमावाने ठेचून मारणे, अस्पृश्यांना मारणे, मुस्लीम व इतर सवर्णातील काही जातींना जमावाने मारून टाकणे ही घटना मुळात योग्य नाही. त्याच बरोबर चित्रपट क्षेत्रातील दिग्गज त्यात अनुराग कश्यप आणि इतर ४९ माननीय व्यक्तींनी इ झुंडबळी विषयी पंतप्रधान यांना पत्र लिहीले. त्यास ६१ प्रतिभावतांनी उत्तरही दिले. यात मतभेद होणे सहाजिक आहे. पण माणूस या मतभेदापेक्षा महत्वपूर्ण आहे. त्याच प्रकारे सुप्रीम कोर्टाला सुध्दा म्हणावे लागते की, 'कोर्टाला प्रत्येक गोष्टीत दखल का घ्यावी लागते, सरकार स्वतः का नाही करू शकत या गोष्टी ? अशा प्रकारे, चित्रपट सृष्टीतील दिग्गजांचे मतभेद, सेक्रेट गेम्स २' त्याचबरोबर रायनपाडा सामुहिक हिंसाचार, कोर्टाच्या आवारात व्यक्तिला दगडाने ठेचून मारणे. नितीन आगे प्रकरण अहमदनगर, झारखंड येथील जॉंगल लोहारा प्रकरण, लिचिंग कल्वर, रामाच्या नावावर हिंसाचार, गोरक्षेच्या नावाखली झुंडबळी, इत्यादी प्रकरणे हे देशात व अनेक राज्यात घडतांना निदर्शनात येत आहे.



अशाप्रकारे इत्यादी प्रकरणांचा विश्लेषक अभ्यास करून या विषयाला न्याय देण्याचा प्रयत्न केला आहे. कुठल्याच धर्मास ही सामुहिक हिंसाचार संकल्पना मान्य नाही. संविधान संस्कृतीला व संविधानिक राष्ट्रवादाच्या चौकटीत तर ती बसणे शक्य नाही. म्हणून संविधान संस्कृती व संविधानिक राष्ट्र जोपासणे गरजेचे आहे. त्याचबरोबर समता, स्वातंत्र्य, बंधुत्व व न्याय या तत्वावर प्रत्येक मानवाने चालले तर सामुहिक हिंसाप्रवृत्ती वाढू शकत नाही. आम्ही प्रथम भारतीय व शेवटी भारतीय आहोत तत्वाने जगल्यास कोणताच मानव या झुंडबळी प्रवृत्तीकडे वळणार नाही. म्हणून संविधानाने सांगितलेला राज्य समाजवाद, कल्याणकारी राज्य, धर्मनिरपेक्षता या तत्वानुसार प्रशासन, शासन यांनी चालले तर इ झुंडबळी प्रवृत्ती, काढणार नाहीत. त्यासाठी मानवाला शिस्त, समन्वय, प्रशिक्षण, नैतिक, गुल्य, संविधान साक्षरता, संविधान संस्कृती व संविधानिक राष्ट्रवाद जोपासना करणे गरजेचे आहे. त्यामुळे झुंडबळी या प्रकारास निश्चितच खिळ बसेल असे अभ्यासकारास वाटते.

साधने आणि पध्दती (Sources & Method)

या संशोधनासाठी वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा उपयोग करण्यात आला आहे. यात वृत्तपत्र लेख, पुस्तके व सामाजिक पत्रकारितेतील मान्यता प्राप्त व्हिडीओ मुलाखती यातून माहिती मिळविली आहे. त्याचबरोबर प्राथमिक व दुय्यम साधन सामुग्री या संशोधन पध्दतीचा उपयोग करण्यात आला आहे.

सामुहिक हिंसाचार व सामाजिक वास्तव

या संदर्भात सुप्रीम कोर्ट म्हणते की "कोर्टाचा प्रत्येक गोष्टीत दखल का घ्यावी लागते, सरकार स्वतः का नाही करू शकत या गोष्टी देशातील विविध राज्यात जमावाकडून होणाऱ्या हत्याच्या घटनांची सर्वोच्च न्यायालयानं गंभीर दखल घेतली आहे. अशा हिंसक घटनांना आळा बसावा. आरोपींना कठोर शिक्षा व्हावी. यासाठी संसदेला राष्ट्रवादा करावा असे निर्देश न्यायालयाने दिले आहे. मुले पळवून नेणारी टोळी किंवा गोरक्षणाच्या नावाखाली जमावाकडून निष्पापापांच्या हत्या करण्यात आल्याच्या घटना, देशभरात विविध ठिकाणी घडल्या आहेत. गो तरकरीच्या संशयातून इ ालेल्या मारहाणीच्या आणि हत्यांच्या पार्श्वभूमीवर सर्वोच्च न्यायालयात याचिका दाखल झाली होती. त्यावर सरन्यायाधीश दिपक मिश्रा, ए.एम. खानविलकर आणि डी.वाय. चंद्रचूड यांच्या खंडपीठासमोर सुनावणी झाली. यावेळी खंडपीठानं निष्पाप नागरीकांच्या हत्या बद्दल तीव्र चिंता व्यक्त केली. अशी दुष्कृत्य अजिबात खपवून घेतली जाता कामा नये व तसा भयंकर पायंडा पडता कामा नये. कायदा हातात घेण्याचा अधिकार कुणालाही नाही. असं न्यायालयानं बजावलं. भविष्यात 'भविष्यात झुंडशाहीतुन असल्या हत्या होऊ नयेत, यासाठी संसदेनं उपाययोजना कराव्यात तसेच नेमक्या काय उपाययोजना केल्या, त्याचा अहवाल राज्य व केंद्र सरकारांनी सादर करावा. असही न्यायालयानं जमावाकडून करण्यात आलेल्या हत्यांच्या घटनांवर तीव्र नाराजी व्यक्त केली होती. जमावाकडून हत्या हा गुन्हाच आहे. त्यामागील हेतू कोणता हे महत्वाचं नाही. असं मत न्यायालयानं नोंदवलं होतं. प्रधानमंत्री यांना देशातील झुंडबळीच्या घटना रोखण्यासाठी विविध क्षेत्रातील ४९ दिग्गज व्यक्तींनी पत्र लिहून चिंता व्यक्त केल्यानंतर त्यांच्या उत्तरादाखल देशभरातील ६९ सेलीब्रिटींनी खुले पत्र प्रसिध्द केले आहे. इ झुंडबळी विरोधात ४९ दिग्गजांनी लिहीलेले पत्र हे 'सिलेक्टिव्ह आऊटरेज' आणि 'फॉल्स नॅरेटीव्हज' चा (खोटे कथन) प्रयत्न करणारे असल्याचे ६९ प्रतिभावानांच्या खुल्या पत्रात म्हटले आहे. मॉब लिंचिंगवर नियंत्रण मिळविण्यासाठी पश्चिम बंगालमध्ये विधेयक दि. ३१ ऑगस्ट २०१९ रोजी मांडले व दि. ०९



सप्टेंबर २०१९ रोजी झुंडबुळी विधेयक मंजूर करण्यात आले. त्यात ३ वर्षे शिक्षा, जन्मठेपेची शिक्षा किंवा मृत्यूदंडाची शिक्षा होऊ शकते. असा कायदा करण्याचा मार्ग मोकळा झाला आहे.

नितिन आगे - सामूहिक हिंसाचार होऊन ४ वर्षे झाली. नितिन आगे यांचे वडील राजू आगे म्हणतात. या प्रकरणाचा निकाल लांबण्याचे कारण पोलीस, वकील व कोर्ट हे कारणीभूत आहेत. कोपर्डीचा निकाल मात्र लवकर लागतो. म्हणजे २ वर्षात लागतो. याला कारणीभूत आजची जातीयवादी मानसिकता. अशा सामाजिक प्रश्नांवर अभ्यास करणारे विचारवंत रामपुनियानी म्हणतात. या घटनेमुळे धर्मा-धर्मात द्वेषाच्या भिंती निर्माण केल्या आणि भेद करणारी समाज व्यवस्था निर्माण झाली.

दिग्दर्शक अनुराग कश्यप म्हणतात की, देशभक्तीची परिभाषाच बदलत चालली आहे, एक छोटीशी गोष्टी सांगतो की, जय श्रीराम या घोषणेबद्दल सगळ्यात अगोदर कुठे बोललं गेलं ----- तर रामायणात ! पहिल्यांदा जेव्हा वानर सेना लंकेवर आक्रमण करणार असते, त्यावेळी सेतू बांधताना दगडावर 'जय श्रीराम' लिहून त्यांनी नारा दिला होता. मी ही रामायणामध्ये लिहिलेल्या गोष्टीबद्दल बोलतोय, वैज्ञानिक दृष्ट्या नाही. एक गोष्ट लक्षात घेतली पाहिजे की, रावण हा दिवसभर सतत यज्ञ करणारा एक ब्राम्हण होता. त्याच्यावर हल्ला करण्यासाठी वानरसेना जेव्हा आक्रमण करत होती. त्यावेळी 'जय श्रीराम' हा नारा दिला जात होता. तो नारा कोणत्याही धर्माचा नारा नव्हता आणि हा नारा दिल्यामुळे तुम्ही हिंदू ठरत नाहीत. तो एक नारा होता, जो लंकेवर आक्रमण करण्यासाठी वानर सेनेने दिला होता. त्यानंतर 'जय श्रीराम' हा नारा राम विजयी होऊन अयोध्यात परतले. त्यावेळी सेलिब्रेशन करतांना दिला गेला. जय श्रीराम आता एक लायसन्स झालयं.

आज कोणीही उठतो आणि दलितांना मारतो मुसलमानांना मारतो. झारखंडमध्ये गेल्या चार वर्षात या मॉब लिचींगचे प्रकार घडले. ज्यात ११ मुसलमान, २ दलित, चार हिंदू आणि चार सवर्ण हिंदू आहेत. मुलांना पळवणारी टोळी समजून चार सवर्ण हिंदूंना झुंडीने ठार केलंय. इतक्या मोठ्या प्रमाणात 'लिचिंग' का होतयं ---- 'लिचिंग कल्चर' का वाढत चाललयं ----- 'लिचींग' वर जेव्हा आम्ही बोलतो तेव्हा आम्हाला सातत्याने ट्रोल केलं जातं.

मला विचारण्यात येतं की, दिल्लीच्या अंकित सक्सेनावर तुम्ही बोलत नाही. मी म्हणेन तो एक खून होता, लिचिंग नव्हे ----- तो व्यक्ति एका मुलीवर प्रेम करत होता. तर तिच्या मुस्लीम कुटूंबाच्या लोकांनी त्या मुलाचा खून केला. त्यावेळी 'अल्ला हु अकबर' चा नारा घेऊन त्याला मारलं नव्हतं. जर एका मुस्लीम आणि हिंदूमध्ये भांडण होऊन मारामारी झाली तर ती एक वेगळीच घटना असते. अशा प्रकारच्या घटनांमधील व्यक्तिंना शिक्षा झालीये, ते तुरुंगात आहेत. मात्र 'मॉबलिचिंग' चे तसे नाहीये, खून आणि 'लिचिंग' मध्ये खुप फरक आहे. 'लिचिंग' फक्त आणि फक्त धर्माच्या नावावर गायीच्या नावावर होत आहे. त्याला लोकांची सहानुभूती मिळतेय. लिचिंग मध्ये सहभागी झालेल्यांना नौकरी ऑफर केली जातेय आणि या विरोधात कायदा केला जात नाहीये ही गंभीर गोष्ट आहे. राम बहुसंख्य समुदायासाठी पवित्र आहे, यामुळे रामाचे नाव खराब करणे थांबले पाहिजे. रामाचे नाव घेवून देशात आजवर जमावाकडून मारहाणीचे २५४ गुन्हे घडले आहेत. ८४० घटनांमध्ये दलितांवरील अत्याचार झाले आहे. आपण अशा घटनांवरील गुन्हेगारीवर काय कारवाई केली ? यातील दोषींवर अजामीनपात्र गुन्हा दाखल करून त्यांना अशा आशयाचे पत्र काही चित्रपटसृष्टीतील मंडळींनी पंतप्रधानांना लिहिले.



यापै अर्थी दिव्य-पुण्ये भूयुत परम आहे, भारतीय समाजाला यथे हा शब्द आणखी अर्थीने

वापरला यथे हा शब्द चौदहशेवर्षीय मिनादीबारा, कर्मचारी मिनादीबा आहे. रितीतान यज्ञांगणे परंपरेवरवी अधिष्ठाण करते. भाषणा यथेन भिन्न वास्तव्याचे स्वदेला स्वामी नाही. अर्थात तार फारत हा विचारात की परिस्थिती बदलली सातत राहिले. शेकेड येनसामणे त्या मुलाचे संवर्धितयिच साधि पडले. खाजती ररया, मादीला बागुन सांघातीयक रिल्या संवृण वाढलेल्या फाटी यात ररा साधियात परक नाही. परंतुयान सिंगला नजरदरवी पायाव्याली दत्तुन देयात येत रितीभादरे काही वेळे पाहणा-या अंतुराण करवण या मुदीला, बायकोला दिवेदररर रिण्या देत गय बलाबला पाण फाजत. त्या अर्थीने १५ ऑगस्ट २०१९ 'सेकेड येनस २' ने नेटव्हिस्स प्रदर्शित होणे याना विशेष महत्त्व आहे.

आपल्याला आपली भूलभूत तत्त्वे, मुल्ये न गणवता, सदृश भिन्नक बुद्धी आणुत ठेवून अधिकारी युक्तीर सावा भिळयता येऊ शकतो? नायबोडे सादरेच आपल्याजती काही यथेन पार्थीय गरज पडेल तेव्हा आपली यथेविषयक यथेबला काय करील? रायाय प्रभाती उत्तर असतेला काळाभयात आपण ते शोचणार की, आपल्या यथेनशेवर्षीय, बाणुकीशी मिनादीत असतल की नाही हे उपायुन यणणार? नायबोडे भणायले की, ये वेले हन सतले आपले मुलते बजा हे ' नला या प्र-पतीत उत्तर देण मुन्या आपल्या धार्मिक, रावकीय विचारावृण येठ काळा.

संरात :-

देशाल यार्तीय्या, धर्मय्या, मादीय्या, देवाय्या नागार ती जगात हिताधार पावु आहे. ती भारतीयाराती योरय जोड नाही, आपला अर्थेड भारत राहायला अरतल तर धार्मिक शशी, धर्म निरुभेला, राज्य समाजवार व मिनिभरेत एका एका संस्कृतीने यथेभरतेल आडेन. योडक्यात सांगुदिक हिताधार हा धार्मिक, यार्थीयाराती मादीय्या अर्थियाय परक असल्याने निदर-नयत येते. एक युंड उठले, कुणाला मालन टक्के येते, यथेसिनी कर्मादी विरय करता नाही आधि युस्वीकेडे येन करणा-यांना याव एकशीत विरय होणे, हे नायेन आहे. आपल्याकेडे सांगुदिक हिताधारय बळी पडलात. त्वावर घर्वा होत नाही कारकाडे दुख मिदीय्या अशा नदर सादरयायली यणा राहले. उठले काय करावे काय, आता फार करतया करक हितायत नाही उदारणनायत्या नायबाली आदत्याय लोकांचा एक गड करून राहणे समाज भयुन यावरलाय यला यातक बाळगे. मिनिद यथे, माण, यंत साधियातीयक राट्टुवाड हीया आपली अंजलत आहे. अरते यथेयथायया ययन युठ आहे. माय सांगुदिक हिताधारचा तर्क कोणला? जोड यथेने येमके वास्तव काय, ३०० काळभणणारे यथे काय... याकी स्पष्टीकरणे भिळत मादीया, यणुन साधियातीयक राट्टुवाड यर भारतीयशी योयासला तरय भारतया विकास होईल हे सत्य आहे.

विचारयोगी :-

१. यथेकमुन्याचे परिशाल येणे गरजेचे आहे.
२. नायबोडाली समाजशासक मादीय्येला यार्थीये गरजेचे आहे.
३. यार्थीय, धार्मिक देश कमी करवाय्याती संविधानातील यथेनिरुभेलात व राज्य समाजोवाड तत्याची योयासला, प्रचार, प्रचार करणे गरजेचे आहे.
४. साधियातीयक राट्टुवाड व साधियातीयक संस्कृती योयासने गरजेचे आहे.
५. सांगुदिक हिताधार यात आता पाहण्यायारी सांगुड भारतीयकरता, बाडर धार्मिकता यर यथेदीन काडले पाहिजे.



६. झुंडबळी हा देशाचा कलंक आहे हा पुसला पाहिजे.

संदर्भ सुचि :-

1. Mob Lynching : A Rising Threat - legal service India.
2. On Lynchings by Ida B. wells- Barnett. Goodreads.
3. maharashtra times.India times. com.
4. maharashtra facebook A/c.- vedio.
5. maharashtra times.com.
६. दैनिक दिव्य मराठी - रसिक दिनांक ०४ ऑगस्ट २०१९.
७. दैनिक दिव्य मराठी - रसिक दिनांक २५ ऑगस्ट २०१९.
८. दैनिक दिव्य मराठी - दिनांक ३१ ऑगस्ट २०१९ पेज ९.
९. दैनिक सम्राट - दिनांक ०२ सप्टेंबर २०१९ पेज १.



MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



नागरीकत्व सुधारणा कायदा २०१९

विचार मंथन विशेषांक

संपादकीय मंडळ

प्रा. डॉ. संजय कांबळे

लोकप्रशासन विभाग प्रमुख

राजर्षी शाहू कला व विज्ञान महाविद्यालय, वाळूज

ता.गंगापूर, जि. औरंगाबाद

श्री. श्रावण वनंजे

सचिव

सुवैश्विक बहुउद्देशिय शिक्षण प्रसारक मंडळ, औरंगाबाद

प्रा. डॉ. रमेश वाघमारे

लोकप्रशासन विभाग प्रमुख,

गोदावरी महाविद्यालय, अंबड, ता. अंबड जि. जालना



Reg.No.U/4120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post Limbaganesh, Tq. Dist. Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

- 13) नागरिकत्व सुधारणा कायदा : भ्रम आणि वास्तव
आरगडे अंबादास रोहिदास ||65
- 14) नागरिकत्व सुधारणा कायद्याचे देशपातळीवर पडसाद
प्रा. डॉ. मधुकर चाटसे, औरंगाबाद ||69
- 15) नागरिकत्व दुरुस्ती कायदा : अविवेकी निर्णय
प्रा. डॉ. गजानन हनवते, औरंगाबाद ||71
- 16) नागरिकत्व सुधारणा कायदा भ्रम व वास्तव
प्रा.डॉ. जायव विठ्ठल सखाराम, बीड ||73
- 17) नागरिकत्व सुधारणा कायद्याविषयी जनमानसात उमटणारे पडसाद
लांडगे मनिषा वामनराव ||75
- 18) नागरिकत्व सुधारणा कायदा आणि राष्ट्रीय एकात्मता
प्रा.डॉ. तिडके केशव दत्तराव, बीड ||78
- 19) नागरिकत्व सुधारणा कायदा निर्वासितांचा प्रश्न
शिल्पा प्रकाश तुपे ||80
- 20) नागरिकत्व सुधारणा कायद्यामुळे जनमानसात उमटणारे पडसाद एक मानसशास्त्रीय अभ्यास
डॉ. यशवंत विठ्ठल सुरवसे ||81
- 21) भारतीय संविधान आणि नागरिकत्व कायदा
वनमाला मारोती लोखंडे, औरंगाबाद ||84
- 22) नागरिक सुधारणा कायदा आणि अवैध घुसखोरी
डॉ. भालेराव जे. के., बीड ||88
- 23) नागरिकत्व सुधारणा कायद्याचे राजकारण
किर्ती विजय करंजावणे, हडपसर ||91
- 24) नागरिकत्व सुधारणा कायदा आणि राष्ट्रीय एकात्मता
डॉ. गजानन देवराव चिट्टेवाड, औरंगाबाद ||94
- 25) नागरिकत्व सुधारणा कायदा आणि धार्मिक अल्पसंख्यांकाचे फायदे आणि तोटे
ज्योती प्रकाश गावंडे, औरंगाबाद ||98

नागरीकत्व सुधारणा कायदा भ्रम व वास्तव

प्रा.डॉ. जायव विठ्ठल सखाराम

विभाग प्रमुख- लोकप्रशासनशास्त्र, कालिकादेवी महाविद्यालय,
शिरूर (का.), जि. बीड

सारांश :- (Abstract) 'नागरीकत्व सुधारणा' कायदा-२०१९' हा भारतीय संविधानाच्या कलम १५ चे उल्लंघन करतो. हे वास्तव भारतीयांनी लक्षात घेणे आवश्यक आहे. यात बौद्ध, जैन, हिंदू, पारशी, ख्रिश्चन इ. जाहेर देशातील धार्मिक पीडित लोकांना नागरीकत्व देण्यात येणार आहे आणि मुस्लीम धर्मीयांना वगळण्यात आले आहे. यामुळे भ्रम निर्माण झाला आहे. त्याच बरोबर संविधानातील धर्मनिरपेक्षता या तत्वाचे उल्लंघन होताना दिसून येत आहे. यात बऱ्याच मोठ्या प्रमाणात हिंदू ही बाधित झाल्याचे निदर्शनास येते. मुळात हा कायदा आसाम व बांगलादेश यांच्या शरणार्थी संदर्भात निर्माण झाला होता. तो देशपातळीवर करण्याची गरज होती का ? तसेच देशातील बेरोजगारी, शेतती, उद्योजक, जी.एस.टी. आदी मुलभूत प्रश्नांवरून लक्ष हटविण्यासाठी हा जाणवपूर्वक करण्यात आलेला कायदा असे वाटते. त्याच बरोबर देशातील अधिक मंदीमुळे रोजगार, व्यवसाय, उत्पन्न, महागाई या प्रश्नावर जनता, युवक यांचे लक्ष विचलीत करण्यासाठी या कायद्याचा केंद्र शासनाने घाट घातल्याचे वास्तव या पेपरमध्ये मांडले आहे.

मुख्य शब्द (Key Words) : नागरीकत्व कायदा, समता, धर्मनिरपेक्षता, मुलभूत प्रश्न :

प्रस्तावना :-

भारत देशातील आजचे वास्तव मांडतांना असे म्हणावे वाटते की, संविधानातील धर्मनिरपेक्षता, नागरीकत्व, मुलभूत प्रश्न इत्यादी प्रश्नांची सोडवणूक करण्यासाठी संसदेने विविध विधेयक पारित करणे गरजेचे आहे. परंतु जनतेच्या हिताचा, मुलभूत प्रश्नांचा विचार न करता, विशिष्ट राज्यापुरता मर्यादित असलेल्या विषयाला संपूर्ण भारतभर करण्याची गरज होती होती का? संविधान तत्वांचे उल्लंघन होतेय का ? यावर विचार न करता विशिष्ट एका धर्माचा अनादर, धृष्टा करणारा कायदा पारित करणे योग्य आहे का ? यावर सविस्तर विचार होणे गरजेचे वाटते. यात आफगाणिस्थान, बांगलादेश,

पाकिस्तान व इतर देशांचे धार्मिक लोक भारतात नागरीकत्व घेवू शकतात पण मुस्लीम घेवू शकत नाहीत. हा भ्रम व धर्मनिरपेक्षता या संविधानातील तत्वांचे हनन करणारा कायदा पारित केला आहे. यावर सर्वोच्च न्यायालयाने मत प्रदर्शन केलेले नाही. कारण संसदेने केलेला कायदा संविधानाचे पालन करणारा असावा. हा सोपस्कर असतो. म्हणून कोणताही कायदा जनहित, कल्याण, धर्मनिरपेक्षता, नागरीकत्व, मुलभूत प्रश्नांवर उपाय व अंमलबजावणी करणारा असावा. त्यातच देशाचे कल्याण आहे.

म्हणूनच भारतीय नागरीकत्व कायदा, भ्रम व वास्तव हा विषय चर्चेस घेणे गरजेचे वाटले. त्याचबरोबर जनता, कायदा, त्यातील समस्या, वास्तव व उपाय मांडणे गरजेचे आहे.

नागरीकत्व दुरुस्ती विधेयक भ्रम :- हा कायदा प्रथम १९५५ च्या कायद्यात नव्याने दुरुस्ती करणारा कायदा म्हणून आपण अभ्यास करणार आहोत. तो १२ डिसेंबर २०१९ रोजी राष्ट्रपतींनी पारित केला. यात धार्मिक अत्याचारीत शरणार्थींना सहारा देण्यात आला आहे. जे ३१ डिसेंबर २०१४ च्या पुढे आफगाणिस्तान, बांगलादेश आणि पाकिस्तान या देशातून धार्मिक अत्याचारित भारतात आलेले बौद्ध, शिख, जैन, हिंदू, पारसी आणि इसाई यांना नागरीकत्व देण्यात येणार आहे. पण मुस्लीमांना नाही याला काय म्हणावचे ? या आधीपण सरकारने हा कायदा पारित करण्याचा प्रयत्न केला होता. पण तो असफल ठरला. परत आजच्या बहुमतच्या जोरावर त्याला पारित करण्यात आले. सुधारीत कायदा हा भारतीय राज्यघटनेच्या मुळ गाभ्यावर खोलवर प्रभाव टाकणारा असून त्याचे दिर्घकालीन परिणाम होणार आहेत.

नागरिकत्व दुरुस्ती विधेयकाद्वारे मुळ कायद्यात बदल करण्याचा घाट घातल्याचे आपणास दिसून येते. नागरीकता कायदा त्या लोकांना देशातून हाकलून देऊ इच्छितो, ज्यांच्या चार पिढ्या त्या जागी राहत आहेत ! अशा प्रकारचा भ्रम निर्माण करून केंद्रशासनाने धर्मा-धर्मात द्वेष निर्माण केलेला दिसून येतो.

नागरीकत्व दुरुस्ती कायदा वास्तव :- केंद्रीय गृहमंत्री अतिम शहा बहुसंख्याकवादी शाल अधिमानाने धारण करतात. हिंदू आणि मुस्लीम बहुल सरखेल मधून आमदार झालेल्या शहा यांना गुजराथी हिंदूचे प्रतिनिधी ठरवण्याच्या प्रयत्नाला त्यांनी कधी विरोध केला नाही. '२०१९: हाऊ मोदी वॉन इंडिया' या राजदिप सरदेसाई यांच्या पुस्तकात एक किस्सा नमूद केला आहे. तो म्हणजे २००२ मधील गुजरात दंगलीच्या काही आठवड्यांनंतर जेव्हा सरखेल मधील एका पत्रकाराने या परिसरातील तणावाची कल्पना अमित शहा यांना दिली. त्यावेळी शहा म्हणाले, "तुम्ही इतकी काळजी का करता?

तुम्ही जेथे राहता तेथे काही होणार नाही, जो काही हिंसाचार होईल तो मुस्लीमबहुल भागात होईल" यावरून असे दिसते की, ज्या माणसाच्या मनात मुस्लीम द्वेष आहे, तेच आज देशाचे गृहमंत्री आहेत. याबद्दल भारतीयोंच्या मनात शंका उत्पन्न होणे सहाजिकच आहे की, सरकारने हिंदू-मुस्लीम द्वेष कमी करण्याऐवजी वाढण्यासाठी हिटलरी विचारधारेचा वापर करतांना दिसतात.

नव्या कायद्यामुळे आपलं नागरीकत्व हिसकावून घेतले जाते की काय, ही सामान्य मुस्लीमामधील भीती देखील समजू शकते. आंदोलक त्यापैकी अगदी मोजक्या लोकांनी 'सीए' पूर्णतः वाचलेला असेल आणि 'एनआरसी' चा मुद्दा तर अजूनही ज्वलंत आहे. परंतु सत्तारूढ नेत्यांचे राजकीय संकेत हेच स्पष्ट करतात की, यामुळे घेऊन जाणारे ध्रुवीकरण टाळणे अशक्यच आहे. 'सीए' आणि 'एनआरसी' चा आरंभ अशा काळातच होतोय, जेव्हा देशातील एकमेव मुस्लीम बहुल राज्याची विभागणी करून दोन केंद्रशासीत प्रदेशाची निर्मिती करण्यात आली, आयोगेतील वादग्रस्त भूमी सर्वोच्च न्यायालयाने रामजन्मभूमी न्यासाकडे हस्तांतरित केली आणि ट्रिपल तलाकला गुन्हा ठरवला. यामुळे मुस्लीमांना असे वाटते की, केंद्र सरकार त्यांच्या विरुद्ध भूमिका घेत आहे. त्यामुळेच त्यांच्या संतापाचा वणवा देशभर पसरत चालला आहे. मग जामिया असेल किंवा अलिगड, पूर्व दिल्लीतील सिलमपूर किंवा प. बंगाल मधील मुस्लीम बहुल प्रांतातील आंदोलनामुळे हिंदू-मुस्लीमांचे ध्रुवीकरण साधू इच्छिणाऱ्या राजकीय प्रोपगंडा मशीनचे केवळ उदरभरण सुरू आहे. 'सीए' च्या मुद्यावरील चर्चेचा वेळी सभागृहात गैरहजर राहिलेले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यांनी दुमकामध्ये जे वादग्रस्त विधान केले ते पहा... 'जे लोक मालमतेला आग लावत आहेत त्यांना टीव्हीवर पाहू शकता. त्यांच्या पेहरावावरून ओळख पटू शकते.' निवडणूक काळातील अशा विधायी राजकारणाचे अन्य कोणते उदाहरण असू शकेल? मायक्रोसॉफ्टचे सीईओ सत्या नाडेला यांनीही 'सीए' बाबत भाष्य करतांना सध्या जे काही होत आहे. ते दुखद असल्याचे म्हटले आहे. तथापि, विरोधामागची कारणे समजावून घेत संवादातून तोंडगा काढण्याऐवजी विरोधकांचा आवाजच दडपून टाकण्याची सत्ताध्याऱ्यांची प्रवृत्ती अनेक उदाहरणांतून पुढे आली आहे.

एनआरसीचे माफदंड खूप सोपे असतील तर त्यामुळे प्रत्येक जण एनआरसीत येईल. फक्त तीन साक्षीदार किंवा सध्याचे ओळखपत्रच त्यासाठी पुरेसे असले तर भारताच्या भूमी वरील प्रत्येक जण एनआरसीत असेल भारताच्या प्रत्येक सरकारी कामाप्रमाणे त्यासाठी रांगा लागतील. विशाल कागदोपत्री प्रक्रिया असेल, कारण प्रत्येकजण असेल त्यामुळे तिचा शेवट असणार नाही. आपण एक

पुकांनी भरलेले रजिस्टर बनवण्यासाठी प्रचंड पैसा, वेळ आणि उत्पादकता वाया घालवू असे वाटते असे चेतन भगत यांचे मत आहे.

सारांश व शिफारशी :- भारतीय नागरीकत्व दुरुस्ती कायद्याची वास्तविकता सांगायची झाल्यास वस्तुस्थिती अशी की, 'सीए' एनआरसी १९८५ च्या आसाम कराराचे उल्लंघन आहे, कारण यामध्ये हिंदू आणि मुस्लीमांमध्ये कोणताही भेदभाव न करता सान्या बांगलादेश, निर्वासितासाठी १९७१ हे कट ऑफ वर्ष मानले गेले होते. भाजपने निवडलेला मार्ग हिंदू आणि मुस्लीम निर्वासितांमध्ये भेदभाव करतो. हिंदूना तात्काळ नागरिकत्व मिळते, मग येथील जातीय संघर्ष कितीही धार्मिक स्वरूपाचा का न ठरो !

एप्रिल-मे २०२१ मध्ये आसाम आणि बंगाल या दोन्ही राज्यात निवडणूका होऊ जात आहेत. भाजप आसामात सत्तेत आहे आणि बंगालमधील लोकसभा निवडणूकीत चांगली कामगिरी केली असतानाही भाजप अंतिमवार करण्याच्या बेतात आहे. येथे भाजपने उघडपणे हिंदू कार्ड चालवले आहे. सीए -एनआरसी ने भाजपाला एक चर्चेचा मुद्दा दिला आहे. देशाच्या अन्य राज्यांतील धगाधगती आग या राजकीय डावपेचांचा परिणाम असला तरी २०२१ मधील प. बंगाल मधील निवडणूक युद्ध जिंकणे हेच त्यामागचे उद्दिष्ट आहे. केवळ गरीब बंगाली लोकांना आपल्या नागरिकत्वासाठी कागदपत्रे गोळ करण्यासाठी संघर्ष करावा लागणार आहे. ममता बॅनर्जी या संघर्षाला बंगाली उपराष्ट्रवाद विरुद्ध हिंदू राष्ट्रवाद आणि हिंदू मुस्लीम ऐवजी गरीब विरुद्ध श्रौमंत असे स्वरूप दिले आहे.

अशा प्रकारे भारतीय नागरीकत्व दुरुस्ती कायद्यातील भ्रम व वास्तव मांडणी करतांना भारतातील सर्व धर्मियांची आस्ता व संविधानातील धर्मनिरपेक्षता, समता या तत्वांचे कसे पालन होईल व आसामपुरता प्रश्न सोडवून, त्यात घुसखोर जे असतील त्यांची योग्य नोंद ठेवली गेली पाहिजे. त्याच बरोबर धर्माधारित द्वेष न करता सर्व धर्मियांना नागरीकत्व देण्याच्या संविधानातील मुल्यांची अंमलबजावणी करावी आणि मूलभूत प्रश्न, बेकारी, आर्थिक, शेतकरी व औद्योगिक इ. प्रश्नावर सरकारने गांभीर्याने लक्ष देण्याची गरज आहे.

शिफारशी :-

१. संविधानातील समता, धर्मनिरपेक्षता तत्त्वानुसार धर्मावर आधारित नागरीकत्व जनतेस किंवा विशिष्ट धर्मास नागरिकत्व नाकारू नये.
२. संविधान तत्वावरील जे कायदे नागरीकत्व संबंधीत बनले आहेत. त्यावर आधारित नागरिकाता विधेयक कायद्याचा पुर्नविचार करावा.

३. ब्रह्मताच्या जोरावर भारताची अखंडता एकता व समानता या तत्वांना तडा जाणार नाही, याची दक्षता घ्यावी.
४. संविधान मुल्यानुसार नागरिकत्व दुरुस्ती कायदा पारित केला असला तरी जनमत व जन आक्रोश लक्षात घेऊन सर्वोच्च न्यायालयाने सत्यता पडताळावी.

संदर्भ :-

१. <https://www.orfonline.org>.
२. <https://www.loksatta.com>
३. दैनिक दिव्य मराठी - लेख- पडद्यामागीलल - लेखक - जयप्रकाश चौकसे
४. दैनिक दिव्य मराठी, दि. २० डिसे. २०१९ पेज नं. ४ संपादकोय-लेख राजदीप सरदेसाई
५. दैनिक दिव्य मराठी, दि. १६ जाने. २०२०, संपादकोय-लेख
६. दैनिक दिव्य मराठी, लेख चेतन भगत दि. १६ जाने. २०२० पेज नं. ६.



Vol. 13 Special Issue -3 | October 2019

Impact Factor: 4.107

ISSN: 2454-5603

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

43. The Gandhian Approach to Rural Development | R.S. Gangarde | 209
44. Khadi –The Economic Wheel | Dr.Parmeshwar Bhosale | 212
45. Mahatma Gandhi: A Management Guru for Successful Life | Dr. Doke A.T. | 217
46. Mahatma Gandhi's: A views | Dr. Bhise N. H. | 223
47. Mahatma Gandhi's Thoughts Regarding Education | Vijaykumar R. Soni | 228
48. Gandhian Ideology: Study of Rara Rao's Kanthapura | Dr. Ahilya B. Barure | 233
49. Philosophy of Education: Aspects of M.K. Gandhi | Mr. Sumit D. Nanaware | 242
50. Mahatma Gandhi-National Integration | Mr. Shaikh G. Ahmed | 249
51. Mahatma Gandhi's Message to Students' | Dr. V.J.Chavan | 217
52. The Gandhian Approach to Rural Development | Dr.Ramakant Ghadge | 261
53. Mahatma Gandhi and women Empowerment | Dr. Jadhav S. B. | 267
54. Gandhi's Views on Morality | Shital R. Yerule | 271
55. Mahatma Gandhi and Women Empowerment | Dr. Rama Pande | 275
56. Ruminaton on Gandhi thoughts of Modern India | Dr. Deshmukh A. B. | 278
57. Gandhian Ideology and Women Empowerment | Mr.Pawar D.V. | 281
58. Gandhiji's View on Rural Reconstruction | Dr. A. D. Joshi | 286
59. Path of Rural Development and Gandhian Philosophy | Dr. S. P. Gaikwad | 293
60. Mahatma Gandhi's Contribution to Indian Freedom Struggle | Dr. Korde R.C. & Dr. Donglikar C.V. | 300
61. Mahatma Gandhis Thoughts on Economics | Dr. Mule P.M | 306
62. Environmental Sustainability and Mahatma Gandhian | Dr. Shaikh M. Hanif Ismailsab | 312

Mahatma Gandhis Thoughts on Economics

Dr. Mule P.M

Head & Assistant Professor, Department of Economics
Kalikadevi Arts, Commerce and Science College, Shirur
Kasar, Dis-Beed 413249

INTRODUCTION: Gandhi was not an academician even he was a charming leader of the Indian National Movement with prime intention of obtaining freedom from the British rule and reestablished self-reliance of India's population. He always works for the wellbeing of the Indian people who were suffering from the policies of East India Company during the era of British's. He was not a basically economist but given his ideas on economic issue and always struggled against the exploitation policy of British's. Gandhi was also influenced by the Marxian doctrine of neutrality, and its emphasis on the "exploitation of labor". Gandhi was very much infatuated by Ruskin's heterodox doctrine that the wealth of a nation consisted, not in its production and consumption of goods, but in its people (Chavan,2013).

His economic philosophy was mainly concerned with individual dignity and the welfare of the poor people. Gandhi's stress on individual's liberty includes a sense of responsibility towards oneself, to others, to society and perhaps to the world beyond. Thus individual would have more choices of enterprises and prospects. This type of arrangements would ensure a smooth relationship between the labor and entrepreneur which may enhance efficiency with increased labor welfare. Definitely, these institutional arrangement did not fully fruitful and develop an institutional arrangement for harmonious relationship between the capital and labor (Pani,2002). Gandhiji's economic ideas are understand in his whole philosophy. His main idea aims at the socio-economic reconstruction of society. These days, some people criticised the Gandhian thought as —not up to date and un-progressive.

He thinks about a total socio-economic reform, so his economic thought must be analysed in this context. He did not give any economic model regarding the development of economics but gave some basic canons based on which we can decide what kind of economic composition is most preferable for Indian economy (Ishii, 1994). Gandhi has given the concept of useful work which would be helpful among all communities, lack of untouchability, ban (of liquor), small scale and village industries, focus on basic education, Gram Swaraj. These are necessary social inputs without them economic development

is not possible. Reconstruction in the rural areas is the main source of development in villages. In his views, each village is a totally independent and efficient which will fulfill their needs (Bhuimali, 2014). Gandhian mode have very important place in the history of economic thought. Gandhiji's sponsored the rule of control

ECONOMIC THOUGHTS OF GANDHIJI:

Gandhi's views on economics were simple and straight forward which would make India economically self-sufficient, manufacturing and satisfying its own needs in domestic market, home-grown ways. This would not only improve the composition of the rural economy of India, it had also demoralized the British economic motives of the exploitation of Indian people. The ethics of economic self-sufficiency were spread all over India by Gandhiji's during the colonial period.

VILLAGE INDUSTRY, KHADI AND SMALL SCALE INDUSTRY:

Gandhi's great approach of Self-reliance and Swadeshi is playing a significant role for the improvement of human beings. He presented a very useful model for economic development in India. Gandhi saw the importance of the rural economy and thought that poverty could be eased by stimulating village economies of agriculture and labor intensive production by using simple technologies on a ground level. Gandhiji wanted to re-establish India from the lowest level. Therefore, he gave an idea to Indians to reconstruct the villages. He had imagined self-reliant villages, free from dependency on big cities which cure them from exploitation. He has also strongly advocated for decentralization of economy. According to Gandhiji's, if we want Swaraj to be built on nonviolence, we will have to give the villages their proper place.

He said that development of the village is depended on their own self-sufficiency which is only possible when there is no more exploitation. On the other hand the use of large scale industries will create problem of competition and marketing in the economy. Gandhi felt that India's dependence on imports from other countries was the main reason of such adversity in India. His basic approach has always supposed about the intentional needs, the need for independent villager and very close to his philosophical and sociological thoughts. He was paying attention to the development of common person and more significantly the development of the depressed and needy group of people.

The term Swadeshi which used by Gandhi consists to promoting and stimulating indigenious industries like small scale and cottage industry of Khadi, Handloom spinning and weaving mills. He offered khadi as a

sign of patriotism, equal opportunity and independence. It was his idea by using Khadi India can defeat the British rule and which can also rebuild of the Indian society. Therefore, Gandhiji's has started his movement for khadi in 1918. He suggested that if we wear and produce such type of clothes then British cloth must be abolished from the Indian market and India become an independent economy. He imposed small scale and cottage industry in India which would beneficial to Indian economy because these industries are based on family labor and low investment. Raw material is easily available in villages from agricultural products like cotton, food and many other crops. So this would lead indigenous market. Gandhi gives pressure on the growth of the rural industries like khadi, handlooms, sericulture and handicrafts. Gandhi was of the opinion that large-scale industries have capital intensive which would concentrate of wealth in the hands of few.

If small scale industries introduced then people would never face the problem of production and external market. Small scale industries play major role in Indian economy it is a source of Employment generation. The most probable problem is faced by the Indian economy is increasing pressure of population therefore there is need of employment opportunities. Only small-scale industries can solve the problem of unemployment because small- scale industries use lab our intensive technique. The small-scale industries gives equal distribution of income and wealth in the among lab our .This is mainly due to the fact that small scale industries are wide-ranging as compared to large scale industries and are having large employment potential. These industries have more capability to generate or attract innovation. They provide abundant opportunities for the advance technology. The entrepreneurs of small industries play a deliberate role in expansion of new innovation and goods. It also make easy to transfer the technology from one to the other. As a result, the economy collects the benefit from small units. In the age of globalization, there is a deferent scene in India due to the mass effect of globalization. India becoming is an emerging economy and plays a significant role in global world. Actually in 21st century the economic views of Gandhi were not adopted by Indian

Government. Jawaharlal Nehru had given other idea of development which not only an indigenous growth of small industries and villages. It is happen with the significant effect of rapid westernization and industrialization during recent period. (Baviskar, 1999). But in the global world the perspective of economies is to construct heavy and large scale industries. Globalization possibly will be supposed as a development of 'global external market'. The main source of globalization is 'privatization' and 'liberalization' (Kurian, 2013). Therefore, India also concentrates on the industrial growth which may

be enhancing the growth of India. The growth of industrial sector leads to a more utilization of natural resources which have easily available in the particular country as a result, production of goods and services has increased employment opportunities has been generated and increased the standard of living of common people.

In this ongoing process of globalization country framed various policies aimed at development of industries in the public and private sectors. Due to this effect India emphasis on large scale industries and multinational companies (Dodh, 2012). The main effects of globalization in the Indian economy are that many foreign companies established industries in India. The benefit of Globalization on Indian economy is that the foreign companies acquire highly advanced technology and this would help to make the Indian economy more technologically advanced. But the real picture is totally different because this is one sided development in India. Due to the effect of Globalization small scale sector has abolished its existence from Indian economy. Large scale industries have use capital intensive technique which would increase unemployment because India is a most populated country and people wants more jobs. However with the effect of globalization or technology based industrial expansion and use of machines have created more unemployment in country.

The rapid growth of large industries due to globalization has not passed benefits to everyone. It has tremendously increased in the informal sector which affected the working population. The informal sector is not included in the lab our legislation because these workers have not good health, terrible working situation and more burdens. Child lab our has been forced to work in industries because in this ongoing period of globalization, the people who work in the large scale industries are living in extreme poverty. Profits are goes to only entrepreneurs therefore gap between the rich and the poor has been increased. Apart from this, large scale industries has also ruin of the environment through pollution which affects the health of human beings.

GANDHIAN ECONOMIC THOUGHTS IN PRESENT SENARIO:

The great economic ideology of Gandhi enhanced the development of rural areas and minorities by giving them equal and sustainable earnings, therefore question presents itself: What is his relevance of economic thought of Gandhi ji today for Indian economy. Globalization has been playing a vital role in Indian economy. The economy of India is currently the world's fourth largest in terms of real GDP (Gross Domestic Product) after the USA, China and Japan. It has

registered ninth position in terms of GDP (Gross Domestic Product) and fourth position in terms of PPP (Purchasing Power Parity) and recorded highest constant growth rates in the 21st century. It has accounted for a remarkable rate of growth in 2011-12, which is estimated at 7.1 per cent (Economic Survey 2011-12). Going back, in the Year of 1947, when India achieved independence from British rule, it had faced stagnation in economy and was caught up in a vicious circle of poverty. Then Indian government took a policy of 'laissez-fair', which was articulated by Jawaharlal Nehru. India focused on the import substitution policy.

Due to this ongoing process India has give stress on expansion of industrialization on large scale. As a result new and foreign industries are coming to Indian market which enhances India's growth. But this type of progress is on sided because the profits goes to only entrepreneurs and people who are benefitted from these reforms and globalization are entrepreneurs and belonging to business class. Therefore the gap between the rich and poor has increased. Most of the private enterprise is established in urban and big cities so that villages are totally ignored by the industrialist who would lead them demoralize. On the other hand India is a country of villages where most of the people lives (Nanchang, 2007). However, the production on large scale would create conflicts between lab our and capital. Here capital takes upper hand over lab our. Such conflicts may not occur in the case of rural industries. Rural industries are the symbols of unity and equality. In India large-scale industries have been concentrated in a few big cities and in rural areas there is no big industry like khadi, handlooms, sericulture and handicrafts.

The small-scale and cottage industries would give a deliberate place in our planned economy towards the fulfillment of the socio economic objectives of Gandhi's particularly in achieving equitable and sustainable growth. So there is need to move back to Gandhian economic ideology who was always in fever of Swedes and self-reliance of villages. If all the land and resources that is available was fully utilized, it would definitely fulfill the needs of all

CONCLUDING REMARKS:

Gandhi's economic thoughts have great impact on Indian economy. He emphasized on cottage and small scale industries which have significant importance for the development of the Scio-economic condition of the common people. He has proposed very constructive economic ideas and if these ideas implemented, India would have been relieved many socio-economic problems. India should emphasis on the policy of Gandhi ji which specially represent the Swedish policy and

work for human being. In the age of globalization, Indian society is facing many socio-economic problems on account of large scale industries and mechanization. In such scenario, there is urgent need to rethink over Gandhi's economic ideology. Small scale industries play a key role in our economy for its development. These industries are basically using labour intensive and high potential for employment generation. Gandhi's thought that industrialism which uses capital intensive technique is based on the exploitation of people. As a result most of the people would be suffered from this type of mechanism.

REFERENCES:

1. Ishii, K. (1994). "The Socio-Economic Philosophy of Mahatma Gandhi: with a Particular Focus on his Theory of Trusteeship. The Economic Review 154.
2. Bhuimali, A. (2014). "Relevance of M .K. Gandhi's Ideal of Self-Sufficient Village Economy in the 21st Century" Articles on Gandhi. Sarvodaya Vol1 (5).
3. Nayak, p (2005). "Gandhian Economics is Relevant The Times of India. 6. Economic Survey.
4. (2012). See at Accessed 2012, September 24
5. Deshmukh, S (2011). "Relevance of Gandhian Thought In 21st Century". International Referred Research Journal. VOL-III (26).
6. Friedman, J. S. (2008). "Mahatma Gandhi's Vision for the Future of India: The Role of Enlightened Anarchy". Penn History Review: VOL 16(1).
7. Romesh, D and Mark, L. (1985). "Essays in Gandhian Economics Gandhi Peace Foundation"
8. New Delhi
8. Anjaria, J.J., Essays on Gandhian Economics (1945).
9. Ayyangar, K.V.R., Aspects of Ancient Economic Thought (1965).
10. Bepin Behari, The Gandhian Economic Philosophy (1963).
11. Dasgupta Ajit. K. (1996). Gandhi's Economic Thought Routledge, London



Special Issue August 2019

विद्यावाणी
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद
आणि

भारतीय शिक्षण प्रसारक संस्थेचे

खोलेश्वर महाविद्यालय, अंबाजोगाई

यांच्या संयुक्त विद्यमाने समाजशास्त्र विषया अंतर्गत
राष्ट्रीय चर्चासत्र

**वृद्धांच्या समस्या
कारणे आणि उपाय**



संपादक
डॉ.बाळासाहेब मुंडे

55

जेष्ठ नागरीकांच्या समस्यांची सामाजिक कारण मिमांसा

प्रा.डॉ. सुधीर आ.येवले

संशोधन मार्गदर्शक व समाजशास्त्र विभाग
प्रमुख,

कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर(का.)

जि. बीड

प्रस्तावना :-

प्रत्येक व्यक्तीला बालपण, तरुणपण, प्रौढत्व आणि म्हतारपण या अवस्थेतून जावे लागते. ६० ते ७० वर्षांपर्यंत शारीरिक कष्ट करून स्वावलंबी राहण्याचे स्वप्न प्रत्येक जण बाळगून असतो. भारतीय समाजात ब्रम्हचर्य ग्रहस्थ, संन्यास आणि वानप्रस्थ या चार आश्रमात व्यक्तीच्या कार्याचे विभाजन निश्चित केलेले आहे. सरकारी नोकरींना देखील निवृत्तीचे वय ६० करण्यात आले आहे. वृद्धत्वाकडे वाटचाल सुरु होते. परंतु अनेक जण सत्तरी उलटली तरी स्वतःला वृद्ध म्हणून घ्यायला तयार नसतो. अर्थात वृद्धत्व हे मानसीकतेवर सुध्दा अवलंबून आहे असे असले तरी वृद्धत्व हा निसर्गाचा नियम आहे. महिलांच्या बाबतीत रजो निवृत्तीचा काळ हा वृद्धत्वाकरीता आठ वार समजला जातो. प्राचीन काळी शरीराच्या विविध घटकाची झीज झाली की वर्षक्य येते असा विचार आयुर्वेदात मांडण्यात आला आहे. आधुनिक वैद्यकशास्त्राचा पिता हिपोक्रेटस याने वृद्धत्वाची तुलना शिशिर ऋतुशी केले आहे.

वय हा वृद्धत्वाचा प्रमुख आधार आहे. जेव्हा एखाद्या व्यक्तीची शारीरिक, मानसिक बौद्धिक क्षमता कमी घेत जात तेव्हा त्या व्यक्तीला वृद्ध असे म्हणतात. एलीझाबेथ हरलॉक यांच्या मते जीवनक्रमातील अंतीमचरण म्हणजे वृद्धावस्था होय. (बवसवेपदह चमतपवक वी जीम सपमि चंद) पाश्चात्य देशात वृद्धांचा अभ्यास करण्यासाठी ळमतवजवसवहल म्हणजे बपमदबम वी वसक हेम. वृद्धापकाळाचे शास्त्र या नावाने स्वतंत्र शास्त्र आहे. भारतात वृद्धांना आता जेष्ठ नागरीक या नावाने ओळखले जाते.

तरुण वयात अनेक अडचणी येवून समस्या निर्माण होत असल्या तरी त्या सोडविण्याचे सामर्थ्य तरुण वयात असते. परंतु वृद्धापकाळात फक्त मन तरुण असून चालत नाही तर त्यासाठी शारीरिक क्षमतेची जोड हवी असते. म्हणूनच या काळात जेष्ठ नागरीकांना अनेक समस्यांना तोंड द्यावे लागते.

प्रत्येक व्यक्तीच्या जीवनात वृद्धत्वही अटळ अवस्था असली तरी आधुनिक काळाची एक सामाजिक समस्या म्हणून मी उभी राहिली आहे. प्रत्येक व्यक्तीला या अवस्थेचा सामना करावा लागतो. प्राचीन काळी वृद्धत्व ही वैयक्तिक समस्या होती. सामाजिक समस्याचे स्वरूप धारण केले नव्हते. काळाबरोबर समाजातील अनेक घटकात बदल होत गेले आणि वृद्धत्वाने सामाजिक समस्येचे स्वरूप धारण केले.

पूर्वी भारतात संयुक्त कुटुंब पध्दती होती ह्या कुटुंबात वयोवृद्ध व्यक्तीला मान सन्मान होता. त्यांच्या मार्गदर्शानुसारच कुटुंबातील निर्णय होत असत. त्यामुळे कुटुंब जेष्ठ नागरीकांना भार मानले जात नव्हते. लहान मुलांना सांभाळणे, मार्गदर्शन करणे, इत्यादी कामे केली जात असे. त्याच बरोबर त्यांची सुश्रुता

Impact Factor - 6.625

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEYMultidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue - 200

Cotemporary Problems in India and Remedies

Guest Editor :

Dr. R. V. Shikhare

Principal

R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -

Mr. H. B. Helambe

Mr. B. S. Jogdand

Mr. R. B. Kale

Mr. S. S. Nagare

Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS



जेष्ठ नागरीकांच्या समस्यांचे सामाजिक निराकरण

प्रा.डॉ. सुधीर आ.येवले

संशोधन मार्गदर्शक व समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,

कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर(का.) जि. बीड

Email_ syevale20@gmail.com

Mob. No. 9689066846

प्रस्तावना :-

प्रत्येक व्यक्तीला बालपण, तरुणपण, प्रौढत्व आणि म्हतारपण या अवस्थेतून जावे लागते. 60 ते 70 वर्षांपर्यंत शारीरिक कष्ट करून स्वावलंबी राहण्याचे स्वप्न प्रत्येक जण वाळगून असतो. भारतीय समाजात ब्रम्हचर्य ग्रहस्थ, संन्यास आणि वानप्रस्थ या चार आधमात व्यक्तीच्या कार्याचे विभाजन निश्चित केलेले आहे. सरकारी नोकरांना देखील निवृत्तीचे वय 60 करण्यात आले आहे. वृद्धत्वाकडे वाटचाल सुरु होते. परंतु अनेक जण सत्तरी उलटली तरी स्वतःला वृद्ध म्हणून घ्यायला तयार नसतो. अर्थात वृद्धत्व हे मानसीकतेवर सुध्दा अवलंबून आहे असे असले तरी वृद्धत्व हा निसर्गाचा नियम आहे. महिलांच्या बाबतीत रजो निवृत्तीचा काळ हा वृद्धत्वाकरीता आधार समजला जातो. प्राचीन काळी शरीरिराच्या विविध घटकाची झीज झाली की वर्धक्य येते असा विचार आयुर्वेदात मांडण्यात आला आहे. आधुनिक वैद्यकशास्त्राचा पिता हिपोक्रेटस याने वृद्धत्वाची तुलना शिशिर ऋतूशी केले आहे. वय हा वृद्धत्वाचा प्रमुख आधार आहे. जेव्हा एखाद्या व्यक्तीची शारीरिक, मानसिक बौद्धीक क्षमता कमी घेत जात तेव्हा त्या व्यक्तीला वृद्ध असे म्हणतात. एलीझाबेथ हरलॉक यांच्या मते जीवनक्रमातील अंतीमचरण म्हणजे वृद्धावस्था होय. (closing period of the life span) पाश्चात्य देशात वृद्धांचा अभ्यास करण्यासाठी Gerontology म्हणजे Science of old age. वृद्धापकाळाचे शास्त्र या नावाने स्वतंत्र शास्त्र आहे. भारतात वृद्धांना आता जेष्ठ नागरीक या नावाने ओळखले जाते.

तरुण वयात अनेक अडचणी येवून समस्या निर्माण होत असल्या तरी त्या सोडविण्याचे सामर्थ्य तरुण वयात असते. परंतु वृद्धापकाळात फक्त मन तरुण असून चालत नाही तर त्यासाठी शारीरिक क्षमतेची जोड हवी असते. म्हणूनच या काळात जेष्ठ नागरीकांना अनेक समस्यांना तोंड द्यावे लागते. या समस्यांचे निराकरण पुढील सामाजिक पध्दतीने केल्यास जेष्ठांच्या सामाजिक समस्यांचे निराकरण करता येईल.

कोणत्याही व्यक्तीची कार्यक्षमता ही तिच्या शारीरिक आणि मानसीक निरोगीपणावर अवलंबून असते. वृद्धावस्था ही शरीर आणि मनाचा दुर्बलेशी संबंधित असते. मनाची उमेद असली तरी त्याला शरीर साथ देत नसेल तर व्यक्तीच्या कार्यक्षमतेवर परिणाम होतो. मानव किंवा कोणत्याही प्राण्यामध्ये वृद्धावस्था अपरिहार्य असते. वृद्धावस्था ही व्याधी नसली तरी या काळात अनेक शारीरिक आणि मानसीक व्याधी निर्माण होतात. वृद्धावस्था ही आयुष्याची संध्याकाळ असते. त्याकरीता या अवस्थेत काळजी घेणे, सेवा करणे त्यांना मानसीक आणि कौटुंबिक शांती लाभने इत्यादी गोष्टी आवश्यक आसतात.

या अवस्थेत व्यक्तीच्या शरीरात बऱ्याच प्रमाणात जैवीक बदल घडून येतो. उतारवयात हातापायाची सांधे दुखणे, दात पडणे, ऐकू न येणे, स्पष्ट बोलता न येणे, चालता न येणे, कमरेस बाक निर्माण होणे, कमी

National Seminar	The New Miraj Education Society's Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra)	Special Issue 1 st February, 2020
------------------	---	---



The New Miraj Education Society's
Kanya Mahavidyalaya, Miraj

One Day National Multidisciplinary National Seminar
On

Emerging Trends and Issues in Social Sciences

Saturday, 1st February, 2020

Organized by

Department of Economics, Geography, History, Political Science,
Psychology, Sociology and Physical Education & Sports

Editor

Prof. Babasaheb Sargar

Co-editor

Prof. Ramesh Kattimani

Volume II

VIDYAWARTA Peer Reviewed International Refereed Research Journal
ISSN 2319 9318

Impact Factor: 7.041(IJIF)

1 | Page

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 7.139

Indexed (SJIF)

March 2020

Special Issues- 25 Vol. 3

The Current Issues in Social Sciences in India (CISSI-2020)



Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Chief Editor
Prof. Dr. B. D. Kokate (I/C Principal)

Dr. S. S. Umbare (Vice Principal)
Dr. G. A. Mahite (Vice Principal)

Editor
Dr. R. K. Kale

Co-Editors
Dr. S. N. Akadgar
Dr. B. D. Jadhavkar
Dr. S. E. Ghumatkar

Balbhairav Arts, Science & Commerce College, Beed

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 25, Vol. 3
March 2020

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

March 2020 Special Issue- 25 Vol. 3

The Current Issues in Social Sciences in India (CISSI-2020)

**Chief Editor
Mr. Arun B. Godam**

**Guest Chief Editor
Prof. Dr. B. D. Kokate (I/C Principal)**

**Dr. S. S. Undare (Vice Principal)
Dr. G. A. Mohite (Vice Principal)**

**Editor
Dr. R. K. Kale**

**Co-Editors
Dr. S. N. Akulwar
Dr. B. D. Jadhavar
Dr. S. E. Ghumatkar**

Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed

Shaurya Publication, Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 25, Vol. 3
March 2020

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

14.	भारतातील शेतकरी शेतकरी नवनाथ विभवनाथ खेरी	41
15.	अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध व त्याचे भारतावर होणारे परिणाम निकम राजाराम दिगंबर , डॉ.हनुमंत एस. भूमकर	45
16.	"सहिली संशोधन संशोधनाचा राष्ट्रीय विकाससाठी भूमिका" राहुल सुरेश निकम	49
17.	सहिली सक्तीकरण (परकामणार सहिलीच्या विशेष संशोधन) निर्मला कारभारी काय	51
18.	सहिलीच्या राजकारणावर जातीय प्रभाव डॉ. मिलीन आंदे	54
19.	भारतातील विरोधकारीचे कारणे आणि उपाय बी. हुये नितीन मंगाराम	57
20.	भारतीय राजकारणात जातीय भूमिका: एक संघर्ष समीक्षा डॉ. लोदने वीरेंद्र शिवराम	61
21.	पानिपत पराभवानंतरही सध्याच्या व राज्यस्थानात मराठी सत्तेचे वर्चस्व : एक चिंतन डॉ.टी.प्रकाश फड	64
22.	"भारतीय संसदेचा विकास" डॉ. पी.वी. शिरसाट	67
23.	केसरीस जाकार आणि भारतीय अर्थव्यवस्था शिवकुमार केसरीराव पांडे	70
24.	"भारतीय राजकारणातील प्रमुख समस्या : जातीयता एक अन्वयन" डॉ. एकाद बंदू कावत	73
25.	राज्यपालांची भूमिका : एक दृष्टीकोन? पवार परत सुर्यकांत	76
26.	सहिली व संशोधनाची राष्ट्रीय विकाससाठी भूमिका श्रद्धा भीहन पवार	79
27.	जातीयकोकरण आणि शेतकरी आत्महत्या : एक अन्वयन डॉ. सोबळे एस.एस.	83
28.	मूलतत्त्ववाद : अर्थ, व्याप्ती व धोके डॉ. फोटनरे एस. डी.	86

"भारतीय राजकारणातील प्रमुख समस्या : जातीवाद एक अभ्यास"

प्र. पवार बंधू धावत

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, कानिबकडेचे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सिडनर (वा.) जि. बीड.

प्रस्तावना :

जे विद्वान जात नाही तो 'जात' असे जातीयिका जाती संस्थेवरून समीचेने घटने जाते. पाल विनोद असाता तरी तथ्य आहे. कारण जाती हा प्राचीन आधुनिक, मध्ययुगीन काळापासून ते शेकडो हजारो वर्षांपासून अस्तित्वात आहेत. भारतीय समाज रचनेचा तो अधिभाज्य भाग बनला आहे. 'जात' ही एक सामाजिक संस्था आहे. असे समान्यतरावरून म्हणतात.

जातीचा संस्था केवळ अभ्यासापुरता मर्यादित राहिले नसून त्यांचा संस्था भारतीय अर्थव्यवस्था, विज्ञान संस्था, समाजशास्त्र, राजकारण, औद्योगिकरण, शिक्षण संस्था, संस्कृती, मंडी, प्रथा, परंपरा इत्यादींशी घेत असते. म्हणून भारतीय राजकारणाचा अभ्यास बहुकेटी आणि आंतरदृष्टीकोनी (Inter-disciplinary) बनला आहे. एखादी विशिष्ट समस्या तिच्या पुरती मर्यादित न राहता तिचा संस्था इतर अनेक सामाजिकीत एक महत्त्वाची समस्या आहे. काही जातीच्या नावावरून त्यासाठी समुदाये व्यवसाय, उद्योगधंदे निरिचल झाले. काही व्यवसाय उध्व यानले रोले तर काही कनिष्ठ घटनांमुळे बदलत झाल्ये, काही त्यांच्या व्यवसायांमुळे कनिष्ठ किंवा कनिष्ठ स्थानाचा गेल्याबरोबरीने आगल्या विकासामाठी अडथेलेने केले. ती पसमने करणाऱ्यांसाठी घडवळी घालील्या, सोपट्या, संस्था, स्वयंसेवा केल्या परिणामी वरिष्ठ जाती पासून सामान्यतेच्या घटका, विमुक्त जातीचे गट समूह निर्माण झाले.

भारतीय राजकारणात ज्यांचा प्रभाव जास्त प्रमाणात जाणवतो त्या जातीची लोकसंख्या किंवा ती जात जास्त प्रमाणात आहे. म्हणून राजकारणात त्याजातीचा प्रभाव फारसे उदा प्रमाणात जाणवतो असे जरी असले तरी २९ जाने १९५० रोजी भारतीय राज्यघटनेची अंमलबजावणी ३ ताणांनंतर भारतीय राज्यघटनेत धर्म निरपेक्षता हा सभ्य राज्यघटनेत १९६८ म्हा ८२ ची घटनासुद्धाही कमज 'धर्मनिरपेक्षता' समाजवाद हे सभ्य टाकण्यात आले आज ही भारतीय समाजात 'जात' धर्म, यांचा फार महत्त्व प्राप्त झाले आहे.

भारतात विविधतेत एकता जरी असेल तरी समाज रचनेत जाती व्यवस्थेचे स्थान कमी होण्याबरोबर प्रभावीरणी बळकट होत आहे. प्राचीन काळापासून जाती व्यवस्थेचा जो प्रभाव कायम सुरू आहे ते आजपर्यंतच्या आधुनिक काळात ही तसाय टिकूनआहे. पाल भारतीय समाज व्यवस्था जसाबरा आहे.

जातीमाठी घाली खात्री वा उक्तीप्रकारे जातीवाद भारतात विद्यमान विद्यमान आसले मुळे जात घट्ट करत आहे असे म्हणणे लागत.

उद्दिष्टे :

- १) 'जात' व जातीवाद यांचा अभ्यास करणे.
- २) लोकसंख्येचा प्रभाव अभ्यासणे.
- ३) जातीव्यवस्थेत (Vote Bank) का म्हणतात.
- ४) जातीचे राजकारण की राजकारणात जात यांचा अभ्यास करणे.
- ५) राजकारण आणि जात एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहे.

पुढीलके :

- १) 'जाती' हा प्राथमिक गट असतो. जाती जन्मोपधित असतात.
- २) जातीनुसार अर्थीकरीय दर्ज ठरतो. जात बरान घेत नाही.
- ३) जातीनुसार सामाजिकदृष्टी ठरतो. सामाजिकस्थान ठरते.
- ४) जाती संस्थेत धर्मसंस्थे अधिपत्य मिळाले जाते.
- ५) सामाजिक आचार (खातण), विवाह संस्था (रोटी-बेटी व्यवसाय)

संशोधन पद्धती :

सामाजिक शास्त्रात संशोधन पद्धतीत अन्य साधारण महत्त्व असते.

जे माध्यम संशोधनविषयी निवड करत असतात

भारतीय राजकारणातील प्रमुख समस्या : जातीवाद एक अभ्यास याचे संशोधन करत असतांना यथोत्तमक अवधाने केला आहे.

जाती व्यवस्थेचे वैशिष्ट्ये :

- १) जातीचा स्व जातीचे काही आघात पाडणे लागतात त्याचे उन्नयन करणाऱ्यांचा शिक्षा करणे,दंड लावणे, जातीबंदी टाकणे अशा भयानक स्वरुपाच्या शिक्षा जातीचेघालीकातून केल्या जातात. कन्यजाती, घटकाजाली पाल हे प्रकार जास्त प्रमाणात आढळतात.
- २) व्यवसाय स्वार्थीयता मर्यादा राहतात, परंतु आधुनिक युगातील परिघमाय शिक्षण, समाज, स्वार्थीयते कायदा यामुळे या पद्धतीत बदल होऊ लागला. राज्यघटनेने व्यवसाय स्वार्थीय (कालम १९ (७)) काढत केले आहे.
- ३) जातीत वरिष्ठ - कनिष्ठ अशी भेदभाव पुन्हा निर्माण झाले. त्यांच्यात स्तरीकरण झाले.
- ४) वरिष्ठ जातीत शैक्षणिक, आर्थिक, राजकीय फायदे मिळतात तसेच जातीचा मिळाले नाही.

जातीवाराचे फायदे किंवा गुण :

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 25, Vol. 3
March 2020

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

- १) व्यवसाय कौशल्य टिकून राहते. कारण व्यवसायाचे काळकरू लहान पत्तासून मिळते त्यामुळे कार्यक्षमता निव्वळ करता येते.
- २) वेत शुद्धी, रक्त शुद्धी टिकून ठेवता येते.
- ३) प्राचीन काळापासून समाजात ऐक्य राखत आले.
- ४) आधार - विद्यार्थ्यांच्या बंधुतामुळे कुटुंब संस्थेचा वैयक्तिक आधार सुदृढ झाला.
- ५) प्रायेंक जालेले अल्पआयुष्या कर्तव्यकार (कर्म) धर्तरेल्यामुळे सामाजिक संस्थांचे प्रत्य निर्माण होत राहते.

जातीवाराचे दोष किंवा तोंडे :

आधुनिक समान जीवनता जल ही प्रकृत बनली आहे. धार्मिक एकतातेत हल्लेच्या काळात जातीचे अनेक प्रत्य निर्माण केले आहेत काही दोष पुढील प्रमाणे.

- १) जातीचे धर्मशास्त्रासून कनिष्ठतापेक्षा उतरेंड असल्यामुळे सर्वोत खासत्या मानल्या गेलेल्या जातीचे शोषण झाले. त्यांचा गुणवत्ता सरासरीनीचन जाण्याची पाळी आणली.
- २) जाती व्यवस्थेत गुणवत्तेपेक्षा जन्माना म्हात्य असल्यामुळे, जातपक, अकार्यक्षम जाकी वर्धेच्या घातू लहान्या बुद्धीमान असुनी केवळ कनिष्ठ जातीत जन्म झाल्यामुळे त्यांच्यावर अत्याय झाला.
- ३) अनेक जातीत सामाजिक बंधिष्कार, विषय कायचुक, मदीर प्रवेसबंदी, सार्वजनिक ठिकाणी बंदी या प्रत्यांच लोड घाते लागत.
- ४) धर्मत जाती प्रत्यांचे तहिल्यामुळे त्यांनी सामाजिक अधिपत्याच्या प्रक्रियेत राती घाली नाही हा वग निष्कृत राहिल.
- ५) काही जाती समुदायात शिष्य शिक्षणापासून बंधीत राहिल्या. समाजात त्यांच बंदी होती. धर्मतये शिष्यांची प्रती सुटली.
- ६) जाती - जातीत एकामेकांच्या अत्याय, त्यांच्यातील अन्यायकार आणि व्यवसाय स्वातंत्र्यकार बंदी घातूले राष्ट्रीय प्रणालीत येत आला नाही.
- ७) जातीत संस्था, लागतताय वाढले. निवडणुका, सामाजिक, धार्मिक उपासकाच्य वेळी जातीत लोड उपासून घेत. 'सामाजिक समरसता' राहता नाही. इत्यादी.

सामाजिक सुधारणांचा कालखंड :

१९ व्या शतकाच्या प्रारंभापासून जाती संस्थेस विधायक आणि अनुयाय परिचरणाची दिशा लक्षणी भारतीयच्या स्वयंसेवी संघटना आणि ब्रिटीश सरकारने केलेले कार्ये घातूले समाजाची सुधारणा करणारे वातावरण तयार झाले. इंग्रजी राजवट हे वरदान ठाले. ब्रिटीश सरकारने इंग्रजी शिक्षण सुरू केले. शैक्षणिक संस्था सुरू केल्या. परिषदाय लोकशाहीतील समता, स्वातंत्र्य समता, स्वातंत्र्य, समान संस्था, स्त्री-पुरुष समताता या गोष्टे समाजात हल्लुहल्लु सुरू लागल्या. शिष्य शिक्षण लागल्या आणि रोटी - केटी व्यवहार सुरू झाले.

जातीचे राजकीयकरण :

भारतीय राजकारण हे जातीबंधित आहे हे कळू साय आता कोणी नकारत नाही. जाती व राजकारण (Politics) एकमेकांवर प्रत्याय पाडोले असतात जाती व जातीपचार या समस्थांचा संबंध प्रामोण आणि राज्य पाडोलेपेक्षा राजकारणांशी अधिक घेत असतो. जाती विचारात घेउन राजकीय वारंन घडू लागले आहे. एकछा मातदार संघात एकघटी जल संघटने जल असल्यास त्याच जातीचा उमेदवार तेषे उपा केवळ जाती. जल घडून मातदार केले जाते. जातीच्या हितसंबंधी धार्मिक आवाहन करून मते (Votes) मिळविता घेतत. हल्लुहल्लु मिळाल्याच या मातंन एकघट्ट (Vote- Bank) घणतात. अधिक, सामाजिक, राजकीय हितसंबंध जातींच्या निर्माण झाले आहे. उमेदवारांचे पाडता, राजकीय हितसंबंध जातींच्या निर्माण झाले आहे. उमेदवारांची पाडता, राजकीय बंधिलकी शिक्षण, राष्ट्रीयता यांचा विचार म्हात्य होत नाही. संस्थांत जातींच्या शिक्षण संस्था, एकाचट निवडणुकीच्या काळात त्या जातीच्या उमेदवारांत म्हात्य करीत असतात. राज्यघटनेतील मातंनसलेल्या (अनुसूचित जाती-जमाती) जातींसाठी राजकीय जागांची तरतूद आणि श्री. श्री. पी. सिंग यांनी शिष्यकारलेल्या (१९८०) संघटन आयोगाच्या शिष्यकारां घातूले भारतीय राजकारणात जातीचे म्हात्य अधिक घाले आहे.

श्री रंजनी कोडारी यांनी भारतातील जाती व राजकारण यांचा सूच्य अत्याय केला आहे त्यातील पुढील एक परिच्छेद प्रस्तुत विषयेंवर घातय करणारे आहे.

राजकारण हा स्पष्टोपक व्यवहार असून निश्चित धोरण राखने हे त्यांचे उद्दिष्ट असते. त्या उद्दिष्टांसाठी सार्वजनिक आय घातंन (समत) मिळवाया लागते. राजकारण हे जनतेचा पठिवा (संघट) मिळवाया लागते. राजकारण हे जनतेचा पठिवा लाभनारे क्षेत्र (Mass-based) असल्यामुळे त्यांच्याकडून पठिवा मिळवणे (त्या निश्चित धोरणासाठी) सार्वजनिक संघटनेच्या (Mass-organization) शोषण असतात. 'जाती' अस्त संस्था आहेत ज्यांच्या माध्यमातून जातीचे राजकारण किंवा राजकारणात जातीचे तय्यतान घुडे आले. जातीचे राजकीयकरणाच्य संस्थांत वारंन उतरा माननीय आहे. राजकारण आणि जाती यांनी परस्परांत जळत आणले आहे.

विषयाच्या शासकीय संस्कृतीकरण:

१९ व्या शतकाच्या अखेरपेक्षा धर्मत जातीचे वर्धेन्य होले. साहित्य, वाङ्मय, संस्कृती, शिक्षण पार त्यांचेच निर्वाण होले त्यांचेच जीवन वचने मूण शिष्यकारी. कनिष्ठ जाती या सर्व कायद्या पासून बंधीत होत्या, परंतु ब्रिटीशांच्या आगल्यानंतर त्यांनी आगलेली शिक्षण घडली. इंग्रजी शिक्षणाचा समावेश, वाहलुकीच्या शासकीय परिचरन घातूले प्राचीन भारतीय जातींच्यासंबंधे धिग कडनु लागले. शैक्षणिककरणांच्या प्रक्रियेमुळे कडरुहल्लु, शिक्षण संस्था, प्रवृत्तता अनेक जाती - धर्मांचे लोक एकच वेड लागले. ब्रिटीशांनी शिक्षणात प्रोत्साहन दिल्यामुळे

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 25, Vol. 3
March 2020

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

संघीय विभाग विद्युत लागू. परिणामी बर्निष्ठ जालीने बर्निष्ठ जालीचे अनुकरण करून त्यांची संस्कृती स्वीकारली या प्रक्रियेत संस्कृतीकरण (Sanskritisation) असे म्हणतात.

निष्कर्ष :

- १) 'जाली' मुळे आधुनिकीकरणाने अनुकरण करण्यात आले. त्याचे कारणे बर्निष्ठ जालीत झाले.
- २) जालीने बर्निष्ठ संघीय नियंत्रणाच्या प्रक्रिये व त्यामुळे परिवर्तन सक्षम झाले.
- ३) बर्निष्ठ जालीच्या पायाभार पाडून ठेवण्यामुळे सामाजिक पायाभूत परिवर्तन (Social Infrastructure) सुरू झाले.
- ४) आधुनिकीकरणाने प्रक्रिया म्हणजेच आधुनिकीकरण. (Modernization)
- ५) सारांश भारतीय जाली संस्थेचा पाया बदलून टाकण्यात आला या मानवशास्त्रीय विश्लेषक परिवर्तनासाठी राजा राममोहन रॉयच्या डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पत्रालया मुंबईकरांचे त्यांनी स्वतःच केलेल्या संस्था - संघटना - परिवर्तन आणि कृपया यांचा मोठा वाटा होता हे कधीच विसरता येत नाही.

संदर्भ सूची :

- १) Ram Ahuja Society in India Rawat Publication, २००२.
- २) Irawati Karve, Hindu Society (१९५९)
- ३) Rajani Kothari, Politics in India.
- ४) डॉ. सुभाकर जोशी - भारतीय समाज आणि राजकारण, विद्या युवा परिवारता ऑरिजिनल, ऑरिजिनल जून २००३.
- ५) डॉ. आर.एन. त्रिवेदी डॉ. एम.पी.आय - भारतीय संविधान, प्रकाशन कोलेज बुक टिपिंग प्रिन्सिपल, जयपूर २००९.
- ६) मुद्रा लेख एम. जयदीकांत अनुवादक श्रीकांत गोखले इंडियन पॉलिटी संस्करण - 'संघटक के साथ के' सागर प्रिन्सिपल Marathi Version (c) Secured first Edition : २०१०.



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

‘महात्मा गांधींच्या विचारांची प्रासंगिकता’, ‘गांधी विचार - काल, आज आणि उद्या’ हे विषय महात्मा गांधींच्या काळापासून ते आज तागायत अनेकांना चक्रावून टाकतात असे दिसते. महात्मा गांधी असे म्हणत की, मी नवीन कांहीच सांगत नाही. जे सांगतोय ते पूर्वीपासून वेद, उपनिषदे, भगवद्गीता, बायबल, कुराण इत्यादी विविध धर्मग्रंथातून मांडणी केलेली तत्वेच मी पुन्हा सांगतोय. आणि ते अर्थातच खरे आहे. आजही ही सनातन मूल्ये, तत्वे, आपणा सर्वांना आचरण्यासारखी आहेत. ही आपण जेवढ्या प्रमाणात आचरणात आणू तेवढ्या प्रमाणात या सृष्टीवरील सर्व घटकांना सुखसमाधानाने आपल्या जगण्यातली इतिकर्तव्यता लाभण्याची परिस्थिती आपण निर्माण करू शकू. म. गांधी स्वतःला ‘सनातन हिंदू’ म्हणवून घेत. सनातन धर्माच्या व्याख्येत ‘अस्पृश्यता’ बसू शकत नाही. अस्पृश्यतेचा तीव्र धिक्कार करणे, स्वतः व इतरांनाही ती पाळू न देणे हेच सनातन्याचे प्रमुख कर्तव्य आहे असे ते सांगत. चातुर्वर्ण्याची तरफदारी करताना ते चातुर्वर्ण्य जन्मावर नाही तर कर्मावरूनच ओळखले पाहिजे असा त्यांचा आग्रह असे. धर्माचरणापासून धर्माधता बाजूला काढून ती दूर करण्याकडे त्यांचा कटाक्ष असे. म. गांधींनी अशी कोणतीही बाब सांगितली नाही जी त्यांनी स्वतः आचरणात आणली नाही. जे मूल्य आचरणात आणता येत नाही ते मूल्य निरुपयोगी असून काळाच्या रेट्यात ते तकलादू ठरते आणि नष्ट होते असे त्यांचे मत होते. जी जी मूल्ये दैनंदिन जीवनात आचरणे शक्य आहेत ती स्वतः त्यांनी आचरणात आणून दाखवली आणि आदर्श जीवनाचा वस्तुपाठ सर्व जगासाठी निर्माण केला. असा आचाराने मजबूत झालेला गांधी विचार काल, आज, उद्या किंवा कितीही कालांतराने तितकाच कालसुसंगत व अनुकरणीय असतो. त्या बदल शंका घेवून त्याला कालबाह्य करून बाद करण्याची फळे सर्व जग भोगत आहे. बरबर विचार करणा-यांना जगाच्या भौतिक प्रगतीच्या घोडदौडीच्या वाटेवर गांधी विचार कालविसंगत वाटेल ही भीति म. गांधींनी अगदी 1909 सालापासून म्हणजे त्यांनी ‘हिंद स्वराज्य’ लिहिल्यापासून वारंवार व्यक्त केली आहे. पण लोक जसजसा खोलवर विचार करतील तसतसे या विचारातील सुसंगती त्यांना पटेल अशी आशा त्यांना वाटे. गांधी विचाराची कालबाह्यता त्या विचारामुळे नसून, तुम्ही आम्ही त्या विचारांना आपल्या आचारात स्थान देण्याच्या नकारामुळे आहे.

आपण स्वतःला व स्वतःच्या व्यवहारांना केवढे महत्त्व देतो ! आपल्या आचार विचारातला पोकळपणा म. गांधींनी परदेशी पाहुण्यांच्या बरोबर आंतरराष्ट्रीय विषयावर चर्चा चालू असताना मध्येच उठून जावून त्यांच्या शेळीचे चारापाणी करून घेण्याच्या प्रसंगाने दाखवला आहे. शेळीचे चारापाणी हि तुमच्या आमच्या चर्चेपेक्षा जास्त महत्त्वाचे आहे असे सुचविण्या-या या अवलियाला आपण समजून घेणार नसू तर तो दोष आपला आहे. 19 व्या शतकात जन्मलेला, 20 व्या शतकात सर्व जगात धर्म, नीति, समाजकारण, अर्थकारण व राजकारण हे सत्य, प्रेम, अहिंसा, न्याय या तत्वावर प्रत्यक्ष करून दाखवणारा हा महात्मा ! आज 21 व्या शतकातही त्यांच्या विचारांनीच जगाचा विनाश रोखता येईल आणि सर्व सृष्टीवासियांना सुखी करता येईल असे अनेकांना वाटत आहे. म्हणूनच मार्टिन ल्युथर किंग म्हणाले होते. ‘You may ignore Gandhi at your own risk’.

-डॉ. सुरेश खुरसाळे

अध्यक्ष, योगेश्वरी शिक्षण संस्था, अंबाजोगाई

Authorised Distributor
 **NEW MAN**
 PUBLICATION
www.newmanpublication.com

Printed and Published by:
 Mahatma Gandhi Education Society's
 Centre For Humanities and Cultural Studies,
 A- 102, Sanghavi Regency, Sahyadri Nagar, Kalyan (W)
 Email: chcskalyan@gmail.com Web: www.mgsociety.in
 Mob. +91 9730721393 +91 8329000732



३२. भारतीय लोकशाहीला प्रबळ करणारा-गांधी विचार | डॉ.भास्कर गायकवाड | १५४
३३. ग्रामोद्योग - काल, आज, उद्या | प्रा.पाटील अनुराधा ल. | १५९
३४. महात्मा गांधी : एक सत्याची प्रयोगशाळा | डॉ.रुद्देवाड बी.पी. | १६३
३५. महात्मा गांधीचे सर्वोदय तत्वज्ञान एक दृष्टिक्षेप | गौतम गायकवाड | १६५
३६. महात्मा गांधीजींची शैक्षणिक ध्येय एक अवलोकन | डॉ. कालिदास दि.फड | १६८
३७. गांधीवादी विचारांची प्रासंगिकता | डॉ.संतोष कोल्हे | १७१
३८. महात्मा गांधीजींचे भारतीय राष्ट्रीय ... | जयश्री पं. पोटपल्लेवार | १७९
३९. सत्य आणि अहिंसेचा वर्तमान काळात ही उपयोगीतेचा ... | पवार बी.टी. | १८३
४०. म.गांधीजींची ग्रामस्वराज्याची कल्पना आणि ... | डॉ.कुंभारकर के.जी. | १८८
४१. मराठी साहित्याची प्रेरणा : महात्मा गांधी | डॉ. लहू दि. वाघमारे | १९१
४२. गांधीजींचे अहिंसावादी विचार | संजय मोहाडे | १९७
४३. महात्मा गांधीजींचे सत्य आणि अहिंसे संबंधी विचार | नवनाथ ज्ञा. पवळे | २०३
४४. महात्मा गांधी यांचे राष्ट्रीय एकात्मताविषयक विचार .. | सोनवणे जी.एन. | २०५
४५. गांधीजींचे विचार - स्त्रियांसाठी वरदान... | सय्यद अफरोज अहेमद | २०९
४६. म. गांधीचे राजकीय विचार | नितीन शिंदे | २१२
४७. महात्मा गांधी व अस्पृश्यता निर्मुलन | श्रीमती. धुमाळ सीमा का. | २१५
४८. महात्मा गांधीजींचे पर्यावरण विषयक विचार : ... | डॉ.पिसाळ हरिदास जी. | २१८
४९. राष्ट्रपिता म.गांधीचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीत ... | डॉ.आचार्य आर.डी. | २२०
५०. महात्मा गांधीचे आर्थिक विचार :- एक दृष्टिक्षेप | मनिषा धनराज केंद्रे | २२३
५१. महात्मा गांधीजींचे समाजसुधारणा विषयक विचार | अंबुरे ऋषिकेश स. | २२७
५२. परकीयांच्या नरजेतून गांधी मिमासा | डॉ.सदाशिव बा. दंदे | २३२
५३. म. गांधी आणि सत्याग्रह | डॉ. जगदिश देशमुख | २३५
५४. महात्मा गांधी ग्रामस्वराज्य | डॉ.सौ.ममता म. देशमुख | २४२
५५. महात्मा गांधीजींचे आरोग्य व आहार विषयक विचार | डॉ. अरविंद व.कदम | २४५
५६. गांधी विचार हि काळाची गरज | डॉ. गंगणे आर.व्ही. | २४९
५७. महात्मा गांधीजींच्या 'ग्रामस्वराज्य' संकल्पनेची ... | डॉ.जे.के.भालेराव | २५३
५८. गांधी :काल, आज आणि उद्या | डॉ. शामराव म.लेंडवे | २५७
५९. महात्मा गांधी यांच्या आर्थिक विचारांची... | डॉ. निलेश व्ही. होदलुरकर | २६०
६०. महात्मा गांधींचे शैक्षणिक विचार | डॉ. एस.एम. कोनाळे | २६६
६१. महात्मा गांधी यांच्या विचारांची ... | चिकटे व्यं. दगडू / डॉ. लिगाडे ओ.व्ही. | २६९

सत्य आणि अहिंसेचा वर्तमान काळात ही उपयोगीतेचा : एक अभ्यास

प्रा. पवार बी.टी.

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

कालीकादेवी कला, वाणिज्य, व विज्ञान महाविद्यालय, शिरूर (का) जि. बीड

प्रस्तावना : महात्मा गांधी हे भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामातील प्रमुख नेते व तत्वज्ञ होय. अहिंसात्मक मार्गाने स्वातंत्र्य मिळवण्यासाठी त्यांनी संपूर्ण जगाला प्रेरित केले. रविंद्रनाथ टागोर यांनी सर्वप्रथम त्यांना महात्मा ही उपाधी दिली. भारतातील लोक प्रेमाने त्यांना राष्ट्रपिता म्हणून संबोधले. भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात गांधीजीची भुमीका मात्र स्वातंत्र्य प्राप्ती पर्यंत न राहता जीवनातील सर्व क्षेत्रामध्ये क्रांती कशि परिवर्तना संबधी आहे. गांधी यांचा परिवर्तन सिद्धांत सत्य आणि अहिंसावर आधारित आहे. त्यांनी भारतीयांना एकता या सुत्रात बांधून स्वतंत्र्य प्राप्त करावे असे सांगितले. ते सत्याग्रहाचे जनक व अहिंसेचे पुजारी म्हणून ओळखल जातात. त्यांची जयंती जगभरात आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिन म्हणून साजरी केली जाते. गांधींचे तत्वज्ञान केवळ पुस्तकरी नसून उपयोगिता वादावर आधारित आहे.

गांधींनी भारताला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यात महात्मा गांधींचे मोठे योगदान आहे. गांधींनी सत्य आणि अहिंसा यांना आपल्या विचाराचे मुलभूत तत्व मानले. सत्य हे त्यांच्या जीवनाचे साध्य होते. तर अहिंसा हे सत्यापर्यंत पोहचण्याचे साधन होते. गांधीजीच्या मते, साध्य व साधना परस्परपुरक असतात. अहिंसेच्या मार्गाने त्यांनी सत्याग्रहाचा लढा दिला. महात्मा गांधींनी देशातील राजकीय आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक आदी प्रश्नांचा विचार केला जसे की, मद्यपान विरोध, स्त्रियांना समान दर्जा देण्यासाठी ग्रामीण भारतात ग्राम राज्याची कल्पना मांडली लघुउद्योगाला महत्व दिले. सत्तेचे विकेंद्रीकरणाला महत्व, श्रमाला महत्व दिले. पंचायत राज व्यवस्थेचा विचार केला.

उद्दिष्टे

- १) सत्य व अहिंसा यामुळे राजकीय चळवळ ही नैतिक केंद्र बिंदु बनली
- २) सत्य आणि अहिंसा यामुळे जगात सत्याचा प्रभाव पडला का ?
- ३) गांधीजीच्या सत्य, अहिंसा या तत्वामुळे देशात शांतता प्रस्थापित झाली का ?
- ४) गांधीजीच्या सत्य व अहिंसा या विचारामुळे देशाला स्वातंत्र्य मिळविण्यास हातभार लागले काय ?
- ५) अहिंसा हे एक साधन असून या साधनाद्वारे साध्यापर्यंत पोहचाता येते का ?

गृहितके :

- १) राजकीय दृष्टीकोनातुन सत्य व अहिंसा यशस्वी झाले का ?
- २) आर्थिक दृष्टीकोनातुन सत्य आणि अहिंसा यांचा कसा उपयोग झाला.
- ३) सामाजिक दृष्टीकोनातुन उपयोगी आहे का ?
- ४) स्वतंत्र्य मिळविण्यासाठी अहिंसा हा एक मार्ग होता का ?
- ५) सत्य आणि अहिंसा यामुळे देशात ऐक्य निर्माण झाले का ?

संशोधन पद्धती :- महात्मा गांधीजींच्या सत्य आणि अहिंसेचा या विचाराचा वर्तमान काळातही उपयोगितेचा : एक अभ्यास करीत असताना जी संशोधन पद्धती वापरली आहे ती वर्णात्मक संशोधन पद्धती.

सत्य आणि अहिंसा : महात्मा गांधींच्या राजकीय विचारांचा पाया सत्य हे साध्य तर अहिंसा हे त्यांनी वापरलेले साधन आहे.

सत्य :- गांधीजी सत्याला आपला जीवनाचे साध्य मानले होते. सत्याचा अर्थ खरे बोलणे असा आहे याचाच दुसरा अर्थ खोटे बोलु नये असा आहे. गांधींनी आपल्या जीवनातील सत्यापर्यंत पोहचण्यासाठी अनेक प्रयोग केले. त्यासाठी त्यांनी आपल्या विचारात बदलही केले. या सत्यासाठी केलेले विविध प्रयोग त्यांनी, My Truth Experiments या पुस्तकातून व्यक्त केले आहे. गांधीजींनी सत्याचे दोन प्रकार सांगितले आहे. १) सापेक्ष सत्य २) निरपेक्ष सत्य

१) सापेक्ष सत्य :- सापेक्ष सत्य याचा अर्थ जे सत्य परिस्थितीनुसार बदलत असते म्हणजेच कायम स्वरूपी नसते याला गांधीजींनी सापेक्ष सत्य म्हटले आहे. सर्वसामान्य व्यक्तीच्या जीवनात सापेक्ष सत्याचा वापर केला जातो. व्यक्तीला दैनंदिन जीवनात कधी कधी खोट्याचाही आधार घ्यावा लागतो. मात्र गांधीजींना हे मान्य नाही. त्यांच्या मते, प्रत्येक व्यक्तीने आपला आत्मिक व नैतिक विकास करून सापेक्ष सत्याकडून निरपेक्ष सत्याकडे जाण्याचा प्रयत्न करावा.

२) निरपेक्ष सत्य :- हे सत्य परिस्थितीनुसार बदलत नाही. याचाच अर्थ जे कायमस्वरूपी असते चिरंतन असते. जे सत्यम, शिवम, सुंदरम असे ही म्हटले जाते. ह्यालाच ते सच्चिदानंद असे ही म्हणतात. हे सत्य फक्त साधु किंवा देवांना शक्य असू शकते.

सत्याचे प्रकार :- म. गांधींच्या विचारातील सत्य आणि अहिंसा ह्या मुलभूत संकल्पना होतः या सर्वच संकल्पना त्यांच्या मुळ आध्यात्मिक अधिष्ठानाशी निगडित आहेत. त्या परस्पर पुरक आहेत. सत्याशिवाय अहिंसा व अहिंसेशिवाय सत्य प्रत्यक्षात आणणे कठीण आहे. गांधीजींना सत्य याचा अर्थ केवळ खरे बोलणे इतका मर्यादित अभिप्रेत नव्हता. त्यांनी सत्याचा व्यापक दृष्टीकोनातुन विचार केकला. आचार, विचार आणि उच्यारात त्यांनी सत्यता अभिप्रेत होती.

सर्वज्ञानी असलेल्या व्यक्तीलाचा सत्याची खरी ओळख होऊ शकते त्यामुळे काय करावे व काय करू नये, काय योग्य व काय अयोग्य हे त्यांना सहज समजू शकते. सत्यात कमीपणा व माठेपणा नसतो. सत्यानुसार आचरण करण्याच्या व्यक्तीवरी पश्चातापाची वेळ येत नाही.

दररोजच्या जीवनात पावलोपावली आपल्याला असल्याचा आधार घ्यावा की घेवू नये असा प्रश्न पडतो. अशा वेळी व्यक्ती असल्याच्या आहारी गेल्यास फसव्य गोष्टीत सापडणे हा सत्याला झाकण्याचा मार्ग गांधीजी मानतात ते गांधीजींना मान्य नाही. त्यांच्या मते, प्रत्येक व्यक्तीने कोणत्याही परिस्थितीत सत्याचे पालन करावे त्याच्याशी तडजोड करू नये.

समाजातील सर्व व्यक्तींचे विचार सारखे नसतात. त्यामुळे सत्य हे नेहमीच तुकड्या तुकड्यांत व भिन्न दृष्टीकोनातून पाहावयास मिळते यासाठी आपण एकमेकांविषय सहिष्णुता बाळगावयास हवी असे गांधीजींचे मत होते. मानव भावनेच्या भरात अतिशयेक्ती करतो अथवा काही गोष्टी लपवून ठेवण्याचा प्रयत्न करतो. यासाठी गांधीजी म्हणतात सत्याच्या पुजकाने मौन पाळणे आवश्यक आहे.

अशा प्रकारे गांधीजींनी केवळ खरे बोलणे एवढा मर्यादित अर्थ न घेता व्यापक दृष्टीकोनातून विचार केला गांधीजींच्या मते, सर्वसामान्य व्यक्तीने सापेक्ष सत्यामधून निरपेक्ष सत्याकडे जाण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. म्हणजेच सामान्य व्यक्तीने आदर्श बनण्याचा प्रयत्न करावा यासाठी व्यक्तीने सत्याला साध्य मानून सत्यापर्यंत पोचण्याचा प्रयत्न करावयास हवा असे महात्मा गांधींना अपेक्षित होते.

अहिंसा :- म. गांधीजींनी सत्याप्रमाणेच अहिंसेलाची महत्त्व दिले. त्यांच्या मते, सत्याचा व अहिंसेचा मार्ग जितका सरळ तितकाच तो अरुंदही आहे. तलवारीच्या धारेवर चालण्या सारख तो प्रकार आहे. डोंबारी ज्यादोरीर नजर खिळवून चालतो त्यापेक्षाही सत्य - अहिंसेची दोरी सुक्ष्म आहे. तेव्हा यात गाफीलपणा योग्य नाही. असे गांधीजींचे मत होते.

अहिंसेशिवाय सत्याचा शोध अशक्य आहे. सत्य आणि अहिंसा एकमेकांना पुरक आहे. एकाच नाण्याच्या दोन बाजू सत्याप्रमाणे अहिंसा हा आत्म्याचा गुण आहे. अहिंसेच्या मार्गाने सत्यापर्यंत जाता येते. क्रोधाने स्वार्थासाठी तसेच दुसऱ्याला जाणीवपूर्वक त्रास देण्याच्या भावनेतून केलेली कृती म्हणजे हिंसा अहिंसा याचा अर्थ हिंसा न करणे होय. या हिंसेत शारीरिक, मानसीक, वाचिक (काया, वाचा, मने) हिंसा गांधीजींना मान्य नव्हती. गांधींनी अहिंसेचा अर्थ म्हणजे, पृथ्वीच्या पाठीवरील वस्तू मात्राला तसेच प्राणी मात्राला विचारांने शब्दाने तसेच कृत्याने संभावणारी दुखापत टाळणे असा अर्थ अहिंसेचा गांधीजींनी स्पष्ट केला आहे.

गांधीजीच्या मते अहिंसा म्हणजे प्रेमाचा प्रतिशब्द असून प्रेमात ज्या गुणांचा समावेश होतो ते सर्व गुण अहिंसेत अंतर्भूत असतात. दुसऱ्याच्या हितासाठी स्वतःच्या त्रासाची अगर कष्टाची परवा न करत झुरणे म्हणजे अहिंसा होय. गांधींनी अहिंसेचे तीन अर्थ स्पष्ट केले आहेत. ती पुढील प्रमाणे.

१) **कायिक / शारीरिक अहिंसा** - या अहिंसेत कोणीही कोणालाही शारीरिक त्रास देऊ नये. इजा करू नये, हे गांधीजींना अपेक्षित होते. हातात शस्त्र घेवून अथवा विना शस्त्राने इतरांना मारणे ही शारीरिक हिंसा झाली अशा प्रकारची हिंसा गांधीजींना अजिबात मान्य नाही

२) **वाचिक अहिंसा** - याचा अर्थ कोणत्याही व्यक्तीला खोचून बोलू नये तिला बोलून दुखवू नये तिच्याबद्दल अपशब्द काढू नये अथवा भांडू नये जेणेकरून त्या व्यक्तीला वाईट वाटेल याला वाचिक अहिंसा म्हणतात.

३) **मानसिक अहिंसा** - याचा अर्थ दुसऱ्या व्यक्ती विषयी आपल्या मनात वाईट विचार येणे तसेच एखाद्या व्यक्ती विषयी व्देष तिरस्कार स्वार्थ, अहंकार, मत्सरांची भावना बाळगणे ही सुद्धा मानसिक हिंसा होय अशा प्रकारे गांधीजींनी काया - वाचा - मने या तिन्ही अर्थाने अहिंसेचा अर्थ घेतला.

अहिंसेचे प्रकार :- गांधीजींनी अहिंसेचे तीन प्रकार सांगितले आहेत. ते पुढील प्रमाणे

१) **निषेधात्मक अहिंसा :-** गांधीजींच्या मते, व्यक्तीने आपल्या कार्याद्वारे तसेच शब्दांद्वारे इतरांना न दुखविणे म्हणजे निषेधात्मक अहिंसा होय. कोणालाही त्रास अगर दुःख होईल असा विचार, आचार उच्चर न करण्याबरोबर दुःख ने देणे तसेच कुणाची हत्या न करणे कुणाला कठोर शब्द, अपशब्द न बोलणे, क्रोधीत न होणे व शत्रुबद्दल द्वेषाची भावना न बाळगणे याला निषेधात्मक अहिंसेचे पालन करणे असे म्हणतात.

२) **विधायक अहिंसा** - केवळ दुसऱ्याला दुःख न होणे. त्याची हत्या न करणे, त्रास न देणे म्हणजे अहिंसा नसून दुसऱ्यावर प्रेम करणे त्याच्या सुखासाठी झटणे याला गांधींनी विधायक अहिंसा म्हटले आहे. अत्याचारी व्यक्तीला रोखणे त्याच्यावर अन्याय होत असेल त्याच्या मदतीला धावणे याला गांधींनी विधायक स्वरूपाची अहिंसा म्हटले आहे.

३) **निरपेक्ष अहिंसा :-** धर्माचे पुर्णपणे पालन करणे म्हणजे निरपेक्ष अहिंसा होय. या अहिंसेला गांधीजी सर्वश्रेष्ठ मानले आहे. निरपेक्ष अहिंसेच्या मार्गाने सत्याची म्हणजे ईश्वराची प्राप्ती होत असते. म्हणून अहिंसेच्या मार्गाने सत्याची म्हणजेच ईश्वराची प्राप्ती होत असते म्हणून अहिंसेच्या तत्वाचे पालन करणे हे श्रेष्ठ तसेच सामर्थ्याचे मुख्य लक्षण आहे. यालाच महापुरुषाची अहिंसा असे म्हणतात.

अहिंसेचे उपप्रकार :- यात दोन व्यक्ती किंवा दोन राष्ट्रे यांच्यात संघर्ष झाल्यास व्यक्ती किंवा राष्ट्र सामर्थ्यवान असूनही प्रतिकार करीत नाही. हिंसा करण्याला माफ करते. त्यामुळे समोरच्या व्यक्तीचे च्दय परिवर्तन होते. अशी व्यक्ती सामर्थ्य असून ही प्रतिकार करीत नाही त्याला गांधींनी सामर्थ्यवानाची अहिंसा म्हटले आहे. म्हणजेच

नैतिक आत्मबल व आंतरीक विश्वास याद्वारे व्यक्ती जेव्हा अहिंसेचा स्वीकार करते तेव्हा ती अहिंसा म्हणजे सामर्थ्यवानाची अहिंसा होय. अहिंसा जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात आढळून येते. या अहिंसेत पहाड हलविण्याची शक्ती असल्यामुळे तीचे पालन हे वीर पुरुषांची लक्षण होय. हिंसा करण्यासाठी पात्रता असूनही ते केवळ तत्व म्हणून अहिंसेचा स्वीकार करतात यालाच गांधीजी वीर पुरूषाचे लक्षण होय.

२) दुर्बलाची अहिंसा :- गांधीजीच्या मते दोन व्यक्ती किंवा दोन गट यांच्यात संघर्ष होतो या व्यक्ती किंवा गटातील एखादी व्यक्ती किंवा गट दुर्बल असेल म्हणजे त्यात प्रतिकार करण्याची क्षमता नसेल तेव्हा त्याच्या हातून हिंसा होत नाही यालाच गांधीनी दुर्बलाची अहिंसा म्हटले आहे.

३) भित्र्याची अहिंसा :- गांधीच्या मते, जेव्हा एखादी व्यक्ती किंवा गट भित्रा असल्यास तो प्रतिकार करण्या ऐवजी रणांगण सोडून जात असेल तर त्याच्या हातून हिंसा होण्याचा प्रश्नच उद्भवत नाही. म्हणून गांधीनी याला भित्र्याची अहिंसा असे म्हटले आहे. याचाच अर्थ भिती व अहिंसा या दोन्ही गोष्टी एकत्र राहू शकत नाही. अशा प्रकारची अहिंसा मणुष्याला न शोभणारी असते व्यक्ती जेव्हा परिस्थितीचा सामना करू शकत नाही तेव्हा ती अहिंसेचा आधार घेते.

निष्कर्ष :-

अहिंसा म्हणजे भेकडपणा नाही तर ती उच्चनैतिक स्वरूपाच्या मनोधैर्यातून साकारलेले वे तत्व आहे. भित्रे माणसे अहिंसेचा स्वीकार करतात कारण त्यांच्यात प्रतिकार करण्याची शक्ती नसते. खरे तर त्यांना हिंसा करण्याची इच्छा असते मात्र त्यांच्यातील भित्रेपणामुळे ती ते करू शकत नाही. गांधीजी भित्र्या लोकांच्या अहिंसेचा विरोध केला आहे. ते म्हणतात की भित्र्या व्यक्तीची अहिंसा आणि हिंसा यापैकी मला एकाची निवड करावयाची असेल तर मी हिंसा करणे पसंद करीन. अहिंसेच्या प्रकारात सर्वात श्रेष्ठ अहिंसा नाही तर त्यांना व्यापकता हवी होती आचार उच्चारात व विचारात त्यांना सत्यता अभिप्रेत होती.

संदर्भ ग्रंथ :-

- १) प्रा. डी. वैभव भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीचा इतिहास सरस्वती प्रकाशन १८८५
- २) डॉ. व्ही.जी. कुलकर्णी - भारतीय राजकीय विचारवंत कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद जुन २००५
- ३) प्रा. डॉ. शुभांगी राठी - भारतीय राजकीय विचारवंत कैलाश पब्लिकेशन्स औरंगाबाद १ ऑगस्ट २०१६





CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC



21. M. K. Gandhi & His Impact on R. K. Narayan's "Waiting For the Mahatma" | Miss. Shama A. Kendre | 111
22. The Journey from Mehan to Mahatma | Dr. K. D. Bhundari | 115
23. Gandhiji's Values in Raja Rao's Kanthapura | Udhav A. Tate | 121
24. Gandhian Concept of Gram Vikas and Development Policy | Dr. Shinde P. R. | 124
25. Mahatma Gandhiji's Thoughts on 'Gram Swaraj' | Dr. Bhosle P. M. | 128
26. Gandhian Philosophy in Mulk Raj Anand's Untouchable | Inamdar M M | 131
27. Indian Languages and Mahatma Gandhi | Dr. Abdul Samad | 134
28. Language & the Views of Mahatma Gandhi | Dr. Khalil Ahmed | 141
29. Gandhian Idea of Socialism | R. Y. Sonkamble | 147
30. Gender Equality and Mahatma Gandhi | Shikare M.P. | 151
31. Influence of Mahatma Gandhi's Philosophy on Raja Rao's Kanthapura | Dr. Mali Arjun Pralhad | 154
32. Economic Justice: View of M.K. Gandhi | 156
33. Dr. D. D. Choudhary | 159
34. Gandhian Thought and R.K. Narayan's "Waiting for the Mahatma" | Vidya Mane | 164
35. Gandhian Impact on Indian writings in English: A Reading of Kanthapura and Inquilab | Dr. Manisha Gabefot | 170
36. Gandhian Philosophy and Indian Democracy | Dr. Chitrashekhar Chiralli | 176
37. Gandhian Ideology Reflected In R. K. Narayan's *Waiting For Mahatma* | Dr. P. D. Shitole, Dr. M. D. Pathan | 180
38. Vision of Mahatma Gandhi on Women Empowerment: A Review | Dr. Vaishali E. Aher | 184
39. Mahatma Gandhi's *Satya and Ahimsa* | Vithal B Gunde | 189
40. Mahatma Gandhi's Views on Equality | Dr. Pradeep Dnyanoba Shelke | 193
41. Relevance of Gandhian Education System in Contemporary Indian Scenario | Bharat Gore | 198
42. Gandhian Thoughts of Economics | Dr. L.P Parmar | 204

Mahatma Gandhi's *Satya and Ahimsa*

Vithal B Gunde

Head & Assistant Professor

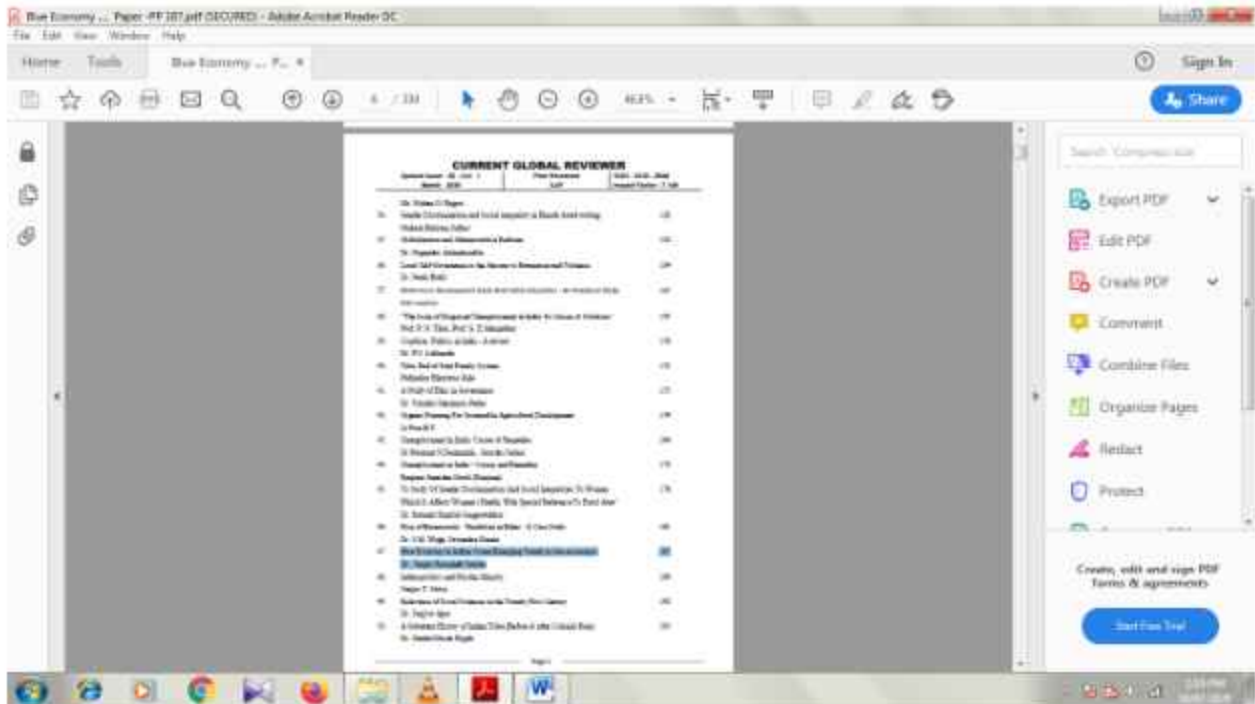
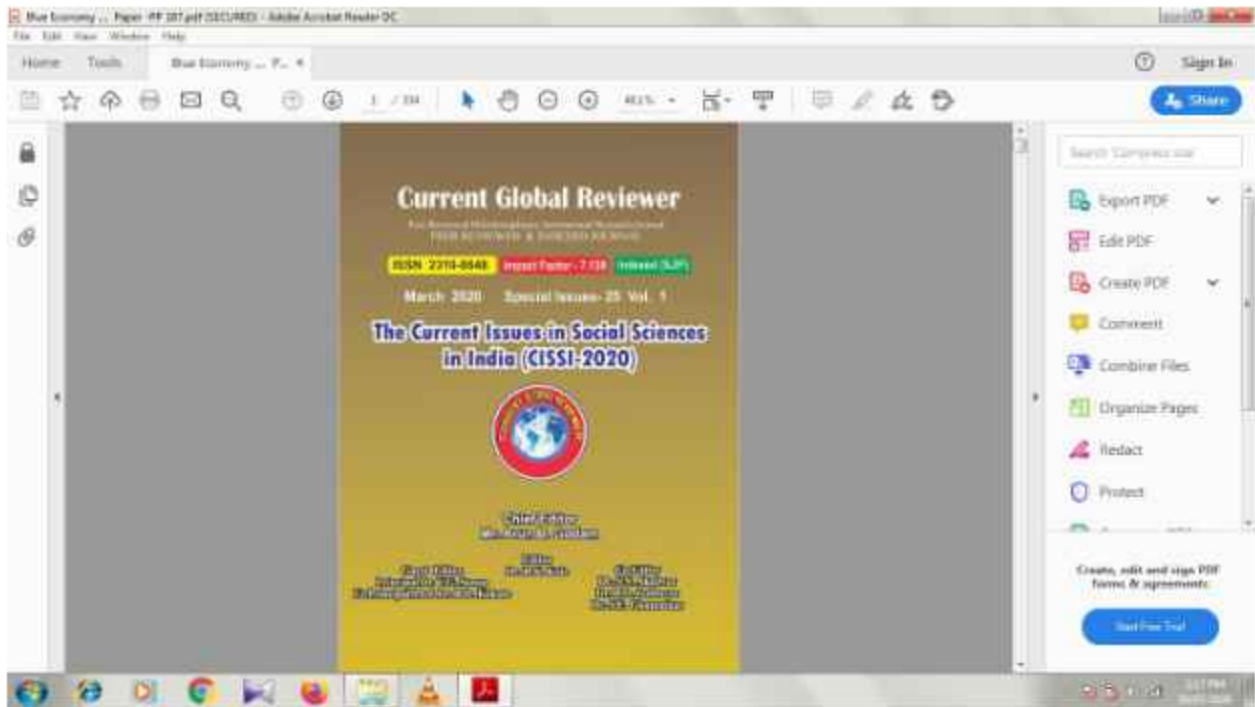
Dept. Of History, Kalikadevi Arts, Commerce and Science College
Shirur Kasar, Dist. Beed 413249

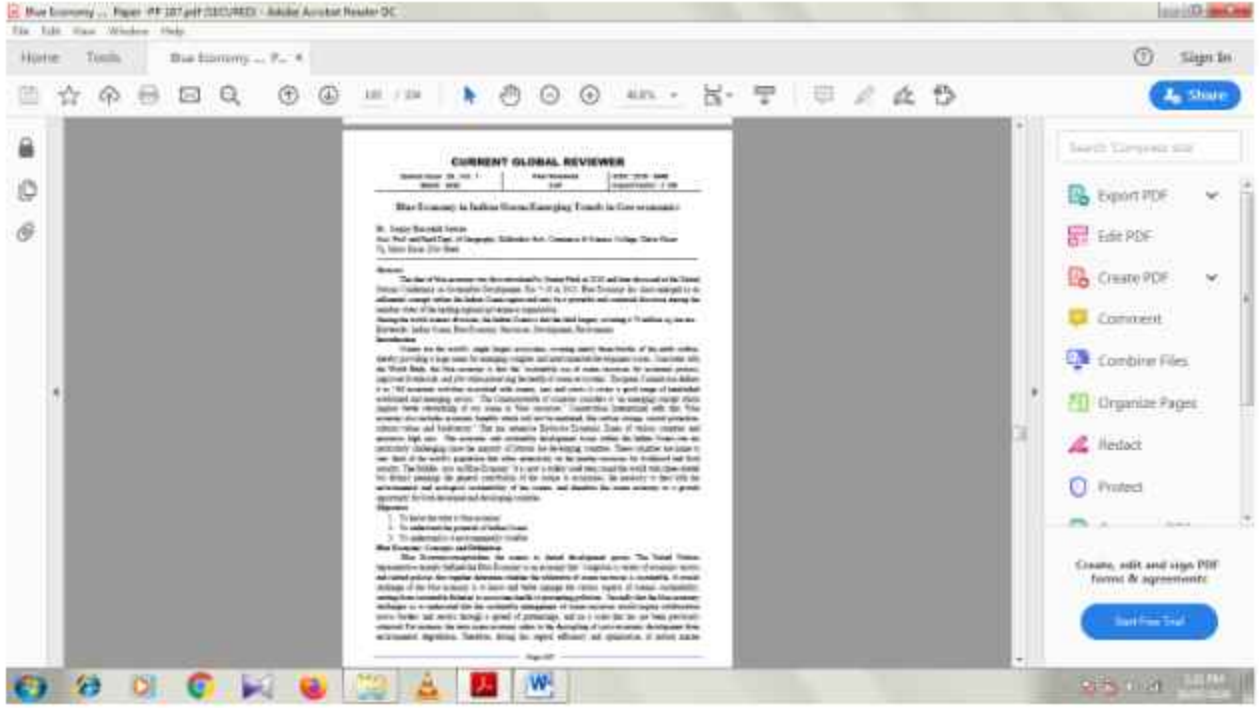
INTRODUCTION: This research paper makes an attempt to study the truth and non-violence philosophy of Mahatma Gandhi was an Indian revolutionary and religious leader who used his religious power for political and social reform. Although he held no governmental office, he was the main force behind the second-largest nation in the world's struggle for independence. Mohandas Karamchand Gandhi was born on October 2, 1869, in Porbandar, India, a seacoast town in the Kathiawar Peninsula north of Bombay, India. His wealthy family was from one of the higher castes. In September 1888 Gandhi went to England to study. Before leaving India, he promised his mother he would try not to eat meat. He was an even stricter vegetarian while away than he had been at home. In England he studied law but never completely adjusted to the English way of life.

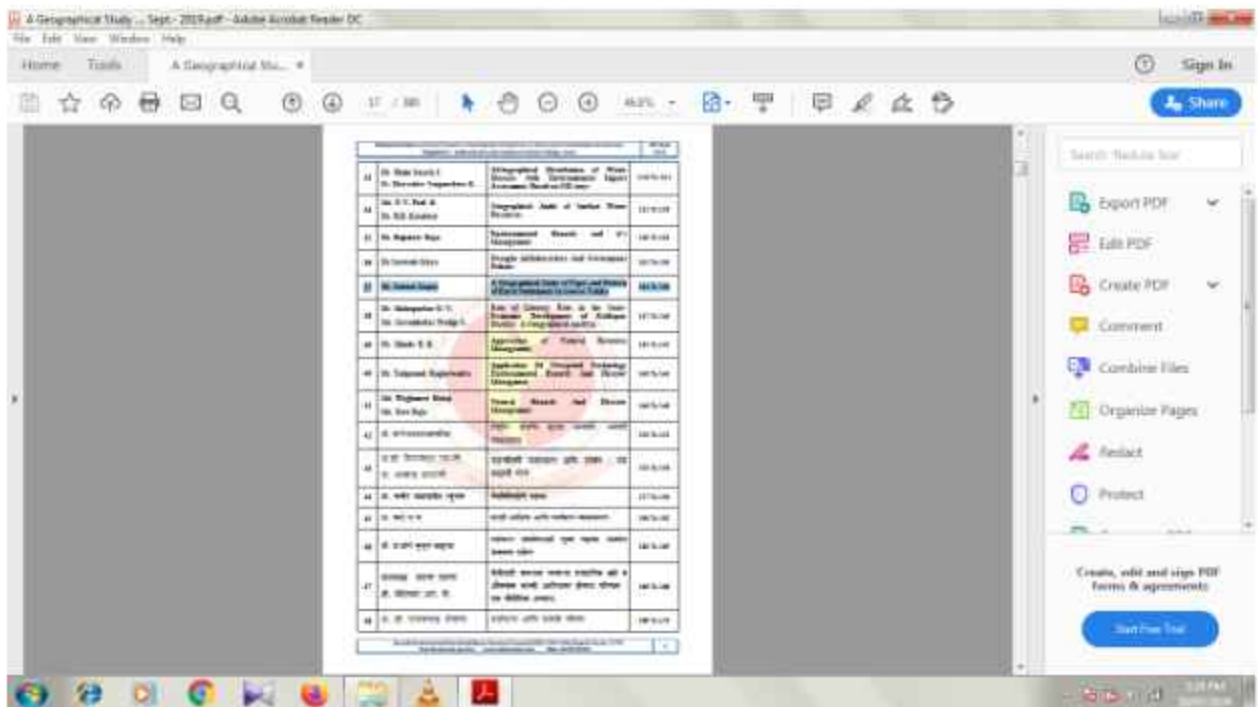
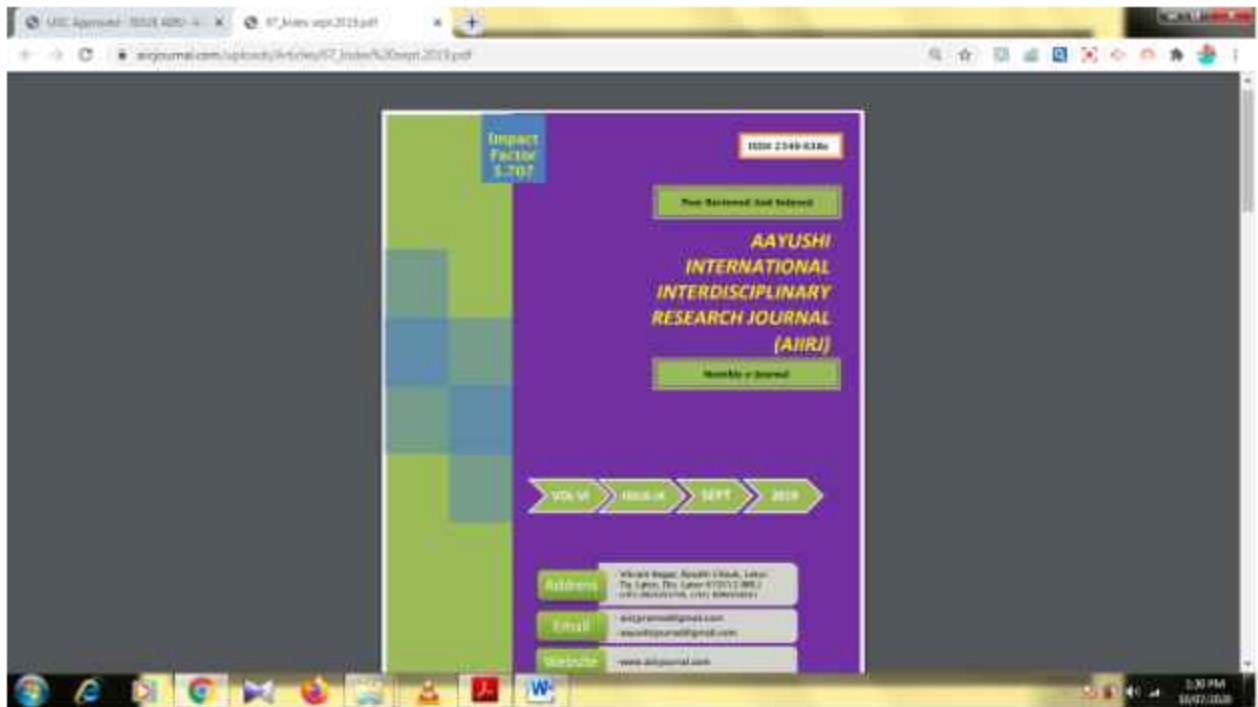
He became a lawyer in 1891 and sailed for Bombay. He attempted unsuccessfully to practice law in Rajkot and Bombay, then for a brief period served as lawyer for the prince of Porbandar. In 1896 Gandhi returned to India to take his wife and sons to Africa and to inform his countrymen of the poor treatment of Indians there.

His vision also presents a more complex and realistic understanding, than some other contemporary pluralists, of political philosophy and of political life itself. In an increasingly multicultural world, political theory is presented with perhaps most vigorous challenge yet. The main problem of violence has also become coterminous with issues of pluralism, many have advocated the banishing of truth claims from politics altogether. Political theorists have struggled to confront this problem through a variety of conceptual lenses. Debates pertaining to the politics of multiculturalism, tolerance, or recognition have all been concerned with the question of pluralism as one of the most urgent facts of political life, in need of both theoretical and practical illumination.

TRUTH (*Satya*): The word *Satya* (Truth) is derived from Sat, which means 'being'. Nothing is or exists in reality except Truth. That is why Sat or Truth is perhaps the most important name of God. In fact it is more correct to say that Truth is God, than to say that *God is Truth*. But







A Geographical Study... Sept. 2013.pdf - Adobe Acrobat Reader DC

File Edit View Window Help

Home Tools A Geographical Study... Sign In Share

155 / 200 48.8%

A Geographical Study of Types and Phases of Rural Settlements in Central Tablelands

By **James Taylor**
Head of Geography
James.Taylor@adelaide.edu.au

Abstract
This study is an examination of the role of rural settlements in shaping the landscape of the Central Tablelands region of South Australia. It examines the historical development of rural settlements in the region and the impact of these settlements on the landscape. The study also examines the role of rural settlements in the development of the region and the impact of these settlements on the landscape.

Introduction
Rural settlements in a broad sense of the term, including both the rural and urban areas of the region, have played a significant role in the development of the Central Tablelands region of South Australia. This study examines the historical development of rural settlements in the region and the impact of these settlements on the landscape. The study also examines the role of rural settlements in the development of the region and the impact of these settlements on the landscape.

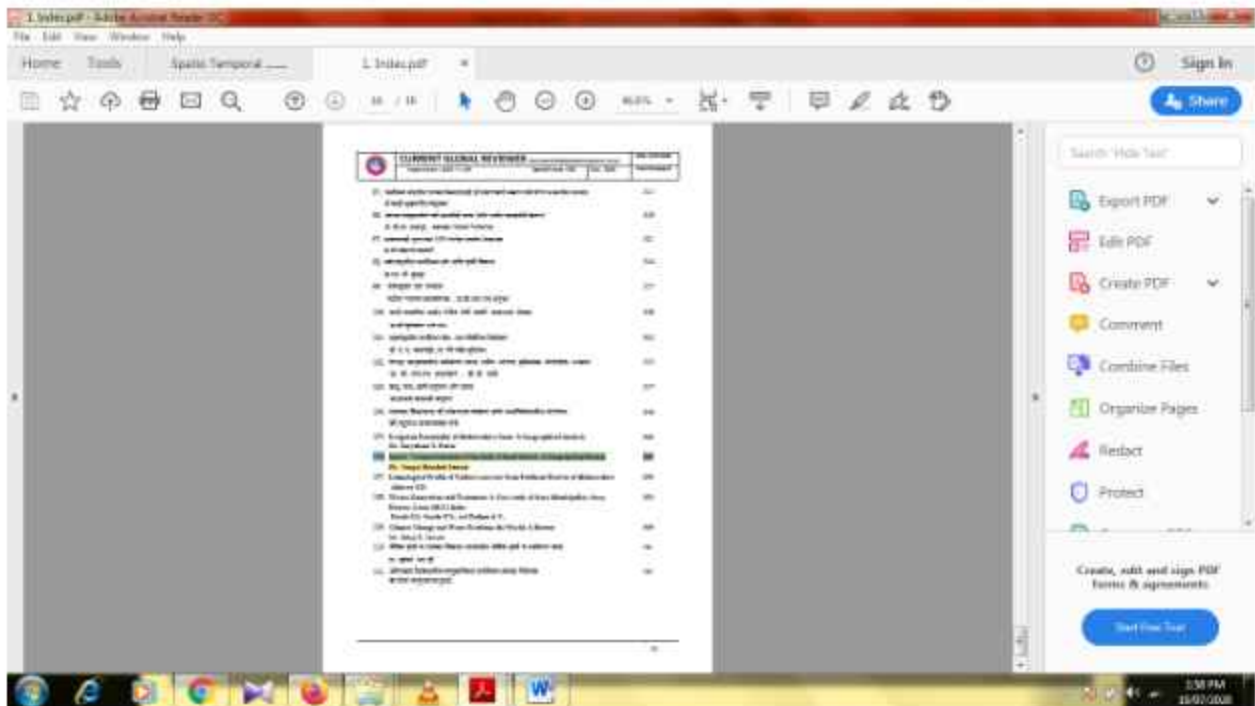
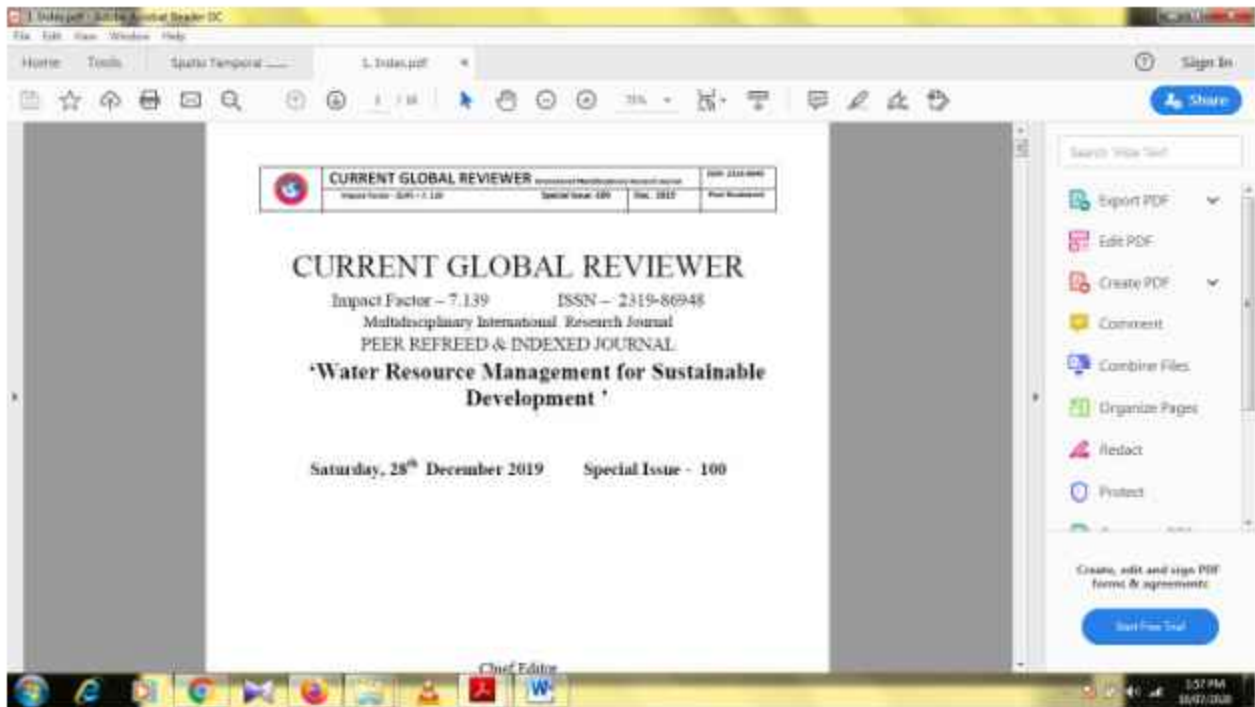
Methodology
This study is a historical study of rural settlements in the Central Tablelands region of South Australia. It examines the historical development of rural settlements in the region and the impact of these settlements on the landscape. The study also examines the role of rural settlements in the development of the region and the impact of these settlements on the landscape.

Conclusion
This study has shown that rural settlements in the Central Tablelands region of South Australia have played a significant role in the development of the region and the impact of these settlements on the landscape. The study also shows that rural settlements in the region have played a significant role in the development of the region and the impact of these settlements on the landscape.

1. To study the historical development of rural settlements in the Central Tablelands region of South Australia.
2. To study the impact of rural settlements on the landscape of the Central Tablelands region of South Australia.

The study is a historical study of rural settlements in the Central Tablelands region of South Australia. It examines the historical development of rural settlements in the region and the impact of these settlements on the landscape. The study also examines the role of rural settlements in the development of the region and the impact of these settlements on the landscape.

1. To study the historical development of rural settlements in the Central Tablelands region of South Australia.
2. To study the impact of rural settlements on the landscape of the Central Tablelands region of South Australia.



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

Contens

1. सत्याग्रही कस्तुरबा गांधी | डॉ.शैलजा भा. बरूरे | 13
2. Mahatma Gandhi and the Award Politics | Dr RT Bedre | 19
3. Gandhian Thoughts: Perceptions of Non-Myths |
Sonwalkar Ramesh Shankarrao | 24
4. Mahatma Gandhi and Literature With Special Reference to
"Untouchable" by Mulk Raj Anand | Dhanaji W. Arya | 36
5. Mahatma Gandhi's Views on Women Empowerment |
Dr. S.P. Mundhe, Dr. Shinde S.S. | 41
6. Educational Thoughts of Mahatma Gandhi |
Dr. R. S. Katare | 44
7. Waiting for the Mahatma: A Prototype of Human Values |
Mantha P. P. | 49
8. Gandhian View About Sustainable Development: A Critical
Review | Dr. S. R. Sawate | 55
9. Gandhian Economical Thoughts | Dr. R. C. Jadhav | 59
10. Economic Views of Mahatma Gandhi |
Gurunath Deshmukh | 63
11. Mahatma Gandhi's Humanitarian views on Contemporary
Social issues | Dr. J. P. Kokane | 69
12. Mahatma Gandhi And Literature | B.K. Amlapure | 72
13. Mahatma Gandhiji and Women Empowerment |
Mr. Kawale S. T. | 76
14. Gandhi's Thoughts on Education | Dr. M. B. Karajgi | 81
15. Raja Rao and Mulk Raj Anand's adherence to Mahatma Gandhi |
P. D. Mamadge | 87
16. The Impact of John Ruskin's *Unto This Last* On Gandhian
Thoughts | G.P. Aaklod | 91
17. Mahatma Gandhi's Views on Education: A Review |
Mr. Lahoti R. K. | 94
18. Mahatma Gandhij's Concept of 'Gram Swarajya' |
Dr. Vanmala Gundre (Reddy) & Bhabardode B. K. | 98
19. My Exprimt with Truth: Literary Outlook Values |
Dr. Swati C. Sawant | 103
20. Mahatma Gandhi's View on Rural Reconstruction |
Dr. Sandhya Beedkar | 108

Gandhian View About Sustainable Development: A Critical Review

Dr. Sanjay Raosaheb Sawate

Dept. of Geography, Kalikadevi Arts, Commerce & Science
College, ShiruKasar , Beed

Introduction : Mahatma Gandhi's familiar figure – Gandhiji, as we Indians lovingly call him – has become a symbol of peace and nonviolence to the whole world. He was a leader and a social reformer of extraordinary stature and authority. However, it's not common to think about Gandhi as associate degree conservationist. Although, admittedly, he wasn't associate degree conservationist within the trendy sense, nonetheless the spiritual leader ideals – together with, centrally, the thought of Swaraj or liberty – change a sensible of property development that can be implemented without compromising the quality of life. Indeed, Gandhi's oft-quoted read that "the Earth provides enough to satisfy each man's would like, however not any man's greed" could stand as a 1 line moral outline of contemporary environmentalist thinking. Gandhi was a practitioner and ardent advocate of vegetarianism. He conjointly practiced "nature cure," a standard Indian style of medication that's currently achieving a semblance of some acceptance within the West. He was a fervent professional person of frugality, of utilization and reprocess, and a trenchant critic of varied aspects of currency. Most major Indian environmentalists these days square measure influenced by the precepts of Gandhi's Satyagraha – nonviolence, that in some extreme cases could even embody fast unto death – in opposing the political status quo. Gandhi synthesized his philosophical and non-secular principles out of his deep data of the non-secular traditions of Hinduism, Buddhism, Jainism, Christianity, and Islam. His social, economic and political concepts developed inside a abstract framework that assumed the interior link and interdependency of the universe in its completeness. In this context, the well-known Gandhian prescription of "simple living" attempts both to curb human overreaching and greed, and to prevent the mindless exploitation of natural resources.

What is sustainable development?

Sustainable development is development that meets the needs of the present, without compromising the ability of future generations to meet their own needs. The concept of sustainable development can be interpreted in many different ways that during which, but at its core is an approach to development that looks to balance different, and often

competing, needs against an awareness of the environmental, social and economic limitations we tend to face as a society. All too typically, development is driven by one specific would like, without fully considering the wider or future impacts. We square measure already seeing the harm this sort of approach will cause, from large-scale money crises caused by scatterbrained banking, to changes in international climate ensuing from our dependence on fossil fuel-based energy sources. The longer we tend to pursue unsustainable development, the a lot of frequent and severe its consequences square measure possible to become, which is why we need to take action now.

About the environment

Living inside our environmental limits is one in every of the central principles of property development. One implication of not doing so is climate change. But the main focus of property development is much broader than simply the surroundings. It's also regarding guaranteeing a robust, healthy and simply society. This means meeting the various needs of all people in existing and future communities, promoting personal wellbeing, social cohesion and inclusion, and creating equal opportunity.

Sustainable development focuses

Sustainable development is regarding finding higher ways in which of doing things, each for the long run and therefore the gift. We might got to modification the means we tend to work and live currently, but this doesn't mean our quality of life will be reduced. A property development approach will bring several edges within the short to medium term, for example: Savings - As a results of SDC scrutiny, government has saved over £60m by up potency across its estate. Health & Transport - rather than driving, switch to walking or athletics for brief journeys can prevent cash, improve your health and is usually even as fast and convenient.

How does it affect on me

The way we approach development affects everyone. The impacts of our choices as a society have terribly real consequences for people's lives. Poor designing of communities, for example, reduces the quality of life for the people who live in them. (Relying on imports instead of growing food regionally puts the united kingdom in danger of food shortages.) Sustainable development provides associate degree approach to creating higher choices on the problems that have an effect on all of our lives. By incorporating health plans into the planning of new communities, for instance, we can ensure that residents have easy access to healthcare and leisure facilities. (By encouraging a lot of property food offer chains, we can ensure the UK has enough food for

the long-term future.) We all have a part to play. Small actions, taken jointly, will add up to real amendment. However, to realize property within the Great Britain, we tend to believe the govt must take the lead. The SDC's job is to help make this happen, and we do it through a mixture of scrutiny, advice and building organizational capacity for sustainable development.

Sustainable Development Goals

The Sustainable Development Goals (SDGs) are a group of seventeen world goals set by the international organisation General Assembly in 2015 for the year 2030. The SDGs are a part of Resolution 70/1 of the international organization General Assembly, the 2030 Agenda. The Sustainable Development Goals are 1. No Poverty 2. Zero Hunger 3. Good Health and Well-being 4. Quality Education 5. Gender Equality 6. Clean Water and Sanitation 7. Affordable and Clean Energy 8. Decent Work and Economic Growth 9. Industry, Innovation, and Infrastructure 10.Reducing Inequality 11.Sustainable Cities and Communities 12. Responsible Consumption and Production 13. Climate Action 14. Life Below Water 15. Life On Land 16. Peace, Justice, and Strong Institutions 17. Partnerships for the Goals.

These are the goals to achieve mankind in future if he want to survive on the earth planate .

Gandhian Thought about Sustainability

Recall that three traditional pillars of sustainable development namely: Economic, Social and Environmental can be joined by the pillars of the Governance, Culture and finally and the North-South dimension. The five points of the doctrine of Nonviolence can be linked to the 6 pillars of sustainable development. They affect indeed various fields of human life in society: The social field with the focus on Dalit , but also the women, by including them into the political and economic action in favor of independence. The concept of Sarvodaya refers to the concern for the poor and to the matter of parity in gender relations. The economic field, not just with a research for the economic independence of the country, but also the economic empowerment of local communities in search for food self-sufficiency, energy, etc. The concept of Swadeshi can be related to the issue of food sovereignty as well as to the circular economy. The environmental field through research for material sobriety and resource conservation. The concept of Ahimsa can be related to the research for maximum safety and thus towards the living than the preservation of the environment and natural resources. The concept of Ahimsa can be related to the research of the safest for the alive and thus towards the preservation of the environment and natural resources. The governance or political field

through the promotion of a local self-government, research participation of all minorities (religious, social and sexual) in decision-making and governance. The concept of Swaraj refers to the integration of stakeholders and social responsibility for the company in one hand, but also participatory democracy in the other hand. The cultural/ethics field through the promotion of individual responsibility toward everyone, a true moral action internalized and lived daily in every act of life. The concept of Satyagraha can be compared to the philosophy of Care in its wider dimension, which is to say, in the matter of caring for each other not only for his/her physical needs, but also for his/her psychological and emotional health. The field of North-South relationship through the claim of an independent political and a justice in international economic relationships.

Conclusion

It is clear that, while we must have some form of development, it had better be sustainable. This essay views our treatment of the natural setting as a consequence of our worldview and of our morality, and argues that Gandhian philosophy provides a viable (and authentically Indian) abstract foundation on that to make genuinely Sustainable development. Gandhian values have to be compelled to be accepted because the guiding principles underlying all our development coming up with. Moreover, since nationalist leader values have worldwide charm, thus ought to their application to big, burning problems with ecology and Sustainable.

“The Earth Provides
enough to satisfy
every man’s need but.....
not any man’s GREED”

- Mahatma Gandhi

References

1. <http://www.sd-commission.org>.
2. <https://en.wikipedia.org>
3. *Gandhi and the World*, 2018 by Debidatta Aurobinda Mahapatra (Editor), YashwantPathak (Editor)
4. <http://www.ecorama.org>
5. <https://www.pressenza.com>
6. Gandhi, M K (1991) *An Autobiography or The Story of My Experiment with Truth*
7. Gandhi M. K (1966) *The Collected Works of Mahatma Gandhi*. Volume XXI Gov. of India, New Delhi.

□□□

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

September - 2019

SPECIAL ISSUE -193 (B)

Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India



Guest Editor :

Dr. Sopan Nimbore
Principal,
ATSPM's Arts, Commerce & Science
College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Associate Editor :

Prof. Niwruutti Nanwate
Head, Department of Economics
ATSPM's Arts, Commerce & Science
College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Executive Editor :

Dr. Abhay Shinde
Co-ordinator, IQAC
ATSPM's Arts, Commerce & Science
College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Chief Editor :

Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)



This journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

SWATIDHAN PUBLICATIONS



INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Recommendation for Improving Quality of Indian Higher Education	Dr. D. K. Khokle	05
2	Assessment and Accreditation Benefits to Higher Education Institutions	Dr. Bhimrao Mankare	08
3	Skill Based Learning: Necessity for Employability	Dr. Manisha Kotgire	11
4	ICT Based Teaching and Learning in Education	Dr. N.B. Kale	14
✓ 5	Role of NAAC in Higher Education to Enhance Quality Education	Dr. Sanjay Sawate	17
6	The Role of Governance Leadership and Management in the Process of NAAC	Prof. Sunil Mhankale	24
7	Best Practices of Library: Key to Better Performance in NAAC	Dr. Anuja Kastikar	27
8	Role of ICT Teaching in Quality Improvement	Dr. Gorakhnath Phasale	30
9	Challenges Facing NAAC in Rural Area	Prof. Rupesh Wankhade	37
10	Skill Development for Employments in India	Dr. Prakash Rodiya	40
11	Revised Process of Assessment and Accreditation of Affiliated Colleges by NAAC- A Step towards Quality Enhancement	Dr. Shivaji Pawar	44
12	Role of Students and Teachers in Teaching Learning	Niwritti Nanwate	48
13	Institutional Best Practices Enrich Students, Community and Nation	Dr. G S Bhopalkar, Dr. B S Waghmare	52
14	Information Communication Technology in Higher Education	Dr. Madan Shelke	56
15	Operational Function of IQAC	Dr. Sakharam Wandhare	59
16	Scenario of Present Education System of India	Prof. Anant Khose	63
17	Role of ICT in Higher Education for the 21 st Century	Prof. Ramesh Bharudkar	68
18	Quality Assurance in the Regular Working Process of College	Dr. Rajaram Sontakke	71
19	Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India	Prof. Shubhangi Khude	73
20	Role of IQAC in Higher Educational Institute	Prof. Pathan Jainullakhan, Md. Hayatkhan	75
21	Role of Internal Quality Assurance Cell (IQAC)	Prin. Dr. Sharda Molawane	77
22	NAAC Assessment : A Boost for Higher Education	V. S. Suryawanshi & V. S. Shinde	80
23	Use in ICT Based Teaching and Learning	Prof. Jawahar Chaudhari	84
24	Impact of NAAC on College Library Development	S. A. Mutkule	88
25	ICT Education : Its Benefits and Difficulties	Dr. B. M. Chavan.	93
26	Strategies for Evaluating Teaching Quality	Dr. Mangesh Shirsath	98
27	Teaching and Learning with Technology : Effectiveness of ICT	Dr. S. N. Waghule	101
28	Skill India : Mission towards Employment's	Dr. S. V. Panchagalle & Dr. R. D. Gaikwad	106
29	Naac Accreditation	Mr. Pratap Ranshing	110
30	Higher Education – A Value Building!	Mr. M. B. Gaikwad	113
31	Higher Education in India : Issues and Challenges	Krushna Kamble	116



Role of NAAC in Higher Education to Enhance Quality Education

Dr. Sanjay Raosheb Sawate

Head Dept. of Geography,

Kalikadevi Arts, Commerce & Science, College, Shirur Kasar

Tq. Shirur Kasar, Dist. Beed.

E-mail- s.r.sawate@gmail.com

Introduction:

Higher education plays a vital role in the development of any nation. Therefore, the higher education is to be the best on both quantity and quality. There has been a great increase in the number of Universities and Colleges in India. To check and assess the quality of these institutions, an autonomous and independent organization called The National Assessment and Accreditation Council (NAAC) was established by the University Grants Commission (UGC) of India in 1994.

Its Job is to assess and accredit the institutions of higher education in India. It came into existence as a result of the recommendations by the National policy on Education (1986) and the Programme of Action (POA-1992) that had stressed on enhancing and improving the quality of higher education in the country. In spite of the built-in regulatory mechanisms that aim to ensure satisfactory levels of quality in the functioning of Higher Educational Institutions (HEIs), there had been no specific modalities to assess and ensure the quality of education imparted by them. To address this issue, the NAAC has been instilling a momentum of quality consciousness amongst Higher Educational Institutions, through a process of assessing their strengths and weaknesses and motivating them for continuous quality improvement. The NAAC after considering the Institutional Assessment and Accreditation application of the intent institution declares the Institutional Eligibility for Quality Assessment (IEQA) status for the institution.

Higher Education:

In a society full of diversity, ideologies and opinions, higher education means different things to different people. According to Ronald Barnett there are four predominant concepts of higher education:

- i) Higher education as the production of qualified human resources.
- ii) Higher education as training for a research career.
- iii) Higher education as the efficient management of teaching provision.
- iv) Higher education as a matter of extending life chances.

Quality In Higher Education:

Approaches to quality in higher education in most countries have started with an assumption that, for various reasons, the quality of higher education needs monitoring. At root, governments around the world are looking for higher education to be more responsive, including:

- making higher education more relevant to social and economic needs;
- widening access to higher education
- expanding numbers, usually in the face of decreasing unit cost
- Ensuring comparability of provision and procedures, within and between institutions, including international comparisons.

Quality has been used as a tool to ensure some compliance with these concerns. Thus approaches to quality are predominantly about establishing quality monitoring procedures.



NAAC And Higher Education

The performance of the colleges affiliated with universities, autonomous colleges and universities is assessed after every five years. The programme of assessing an institution is based on international practices and experiences which the academicians, intellectuals and officials connected with the NAAC receive. It inspects the infrastructure, facilities and also assesses the performance and academic excellence of the teachers of an institution. It gives grades on the basis of performance and prospects of an institution.

NAAC – Vision And Mission

Vision

To make quality defining element of higher education in India through a combination of self and external quality evaluation, promotion and sustenance initiatives.

Mission

To arrange for periodic assessment and accreditation of institutions of higher education or units thereof, or specific academic programmes or projects;

To stimulate the academic environment for promotion of quality of teaching-learning and research in higher education institutions;

To encourage self-evaluation, accountability, autonomy and innovations in higher education;

To undertake quality-related research studies, consultancy and training programmes, and

To collaborate with other stakeholders of higher education for quality evaluation, promotion and sustenance.

Guided by its vision and striving to achieve its mission, the NAAC primarily assesses the quality of institutions of higher education that volunteer for the process, through an internationally accepted methodology.

Functions Of NAAC

NAAC has been entrusted with the following functions, which are expected to reflect the above mentioned vision, mandate and core value framework.

Primary Functions:

To assess and accredit higher education institutions which include the following:

Assessing and Accrediting Institutions/ Departments/ Programmes

Evolving appropriate instruments of accreditation and fine tuning them whenever necessary.

Identifying, enlisting and creating a pool of dependable assessors.

Providing appropriate training to assessors.

Preparing in-house pre-visit documents for the perusal of assessors.

Co-coordinating the 'on-site' visit to its effective completion.

Complementary Functions:

To organize promotional activities related to quality in higher education, and Assessment & Accreditation, which include the following:

Develop pre- and post-accreditation strategies

Disseminate the NAAC processes and quality enhancement mechanisms through relevant publications

Organize Seminars/Workshops/ Conferences to share and discuss education quality-related issues.

Provide guidance to institutions for preparing their Self-study Reports (SSRs)

Partner with stakeholders for promoting A/A

Promote the establishment of Quality Assurance units

Internal Quality Assurance Cells(IQAC)



State level Quality Assurance Co-ordination Committee (SLQACC)

State Quality Assurance Cell (SQAC)

Establish collaborations with other National and International professional Agencies of A/A

Eligibility Of Heis:

Eligibility Criteria Of Heis For NAAC A&A:

The NAAC has adopted its New Methodology of Assessment and Accreditation from 1st April 2007.

1. Universities recognized under Sections 2f, 2f and 12B of the UGC Act of 1956 or established under Section 3 of the UGC Act, which have completed 5 years since establishment or with a record of at least 2 batches of students having completed their degree programs, whichever is earlier.
2. All Universities recognized under Section 3 of the UGC Act are eligible, regardless of the number of years of establishment.
3. Colleges/Institutions/Autonomous Colleges, affiliated to a Recognized University, and Constituent Colleges coming under the jurisdiction of Recognized Universities which have the same record as mentioned in the case 1
4. Institutions coming under the jurisdiction of Professional Regulatory Councils are eligible if they are duly recognized by the Concerned Councils.
5. Any other Institutions/Units may also be taken up for Assessment and Accreditation by NAAC, if directed by the UGC and/or Ministry of Human Resources Development, Govt. of India.

Framework Of NAAC

The changes in the education system as a result of the impact of technology, private participation, and globalization and the consequent shift in values have been taken into consideration by the NAAC while formulating the following core values for its accreditation framework.

i) Contributing To National Development

The HEIs have a significant role in human resource development to cater to the needs of the economy, society and the country as a whole, thereby contributing to the development of the Nation. It is therefore appropriate that the Assessment and Accreditation process of the NAAC looks into the ways HEIs have been responding to and contributing towards National Development.

ii) Fostering Global Competencies Among Students

With liberalization and globalization of economic activities, the demand for internationally acceptable standards in higher education has grown. Therefore, the accreditation process of the NAAC needs to examine the role of HEIs in preparing the students to achieve core competencies (innovative and creative) to face the global requirements successfully.

(iii) Inculcating Value System Among Students

The HEIs have to shoulder the responsibility of inculcating the desirable value systems (values commensurate with social, cultural, spiritual, moral etc.) amongst the students. The NAAC assessment therefore examines how these essential and desirable values are being inculcated in the students by the HEIs.

(iv) Promoting Use of Technology:

To keep pace with the developments in other spheres of human endeavour, the HEIs have to enrich the learning experiences of their wards by providing them with the state-of-the-art educational technologies.



(V) Quest for Excellence:

Excellence in all that the institutions do will contribute to the overall development system of higher education of the country as a whole. This 'Quest for Excellence' could start with the preparation of the SAR of an institution. Another step in this direction could be the identification of the institution's strengths and weaknesses in various spheres/criteria.

The five core values as outlined above form the foundation for assessment of institutions and volunteer for accreditation by the NAAC.

Accreditation

Criteria and Processes For Accreditation

Since the accreditation framework of the NAAC is expected to assess the institutions' contributions towards the five core values mentioned above, the NAAC has integrated these into seven criteria identified for Assessment and Accreditation, which are:

1. Curricular Aspects
2. Teaching-Learning and Evaluation
3. Research, Consultancy and Extension
4. Infrastructure and Learning Resources
5. Student Support and Progression
6. Governance and Leadership
7. Innovative Practices

At NAAC, a five-stage process of external quality monitoring/assessment is undertaken covering:

- (i) On-line submission of a Letter of Intent (LoI)
- (ii) Submission of Institutional Eligibility for Quality Assessment (IQEA) required in the case of certain HEIs coming forward for assessment and accreditation for the first time and feedback to the applicant institution regarding specific improvements needed for reaching the threshold level of quality for applying for the comprehensive Assessment and Accreditation by NAAC
- (iii) Preparation and submission of Self-Study Report (SSR)/ Self-Appraisal Report (SAR)/ accreditation Report (RAR), as the case may be, by the HEIs
- (iv) On-site visit by Peer Teams for validation of the SSR/SAR/RAR and reporting the assessment outcome to the NAAC and
- (v) The final decision by the Executive Committee of the NAAC.

The Assessment Outcome

There are two outcomes of Assessment and Accreditation: The qualitative part of the outcome is called Peer Team Report and the quantitative part would result in a Cumulative Grade Point Average, a letter grade and a performance descriptor. The final declaration (1st April 2007) of the accreditation status of an institution is as given below

Range of Institutional Cumulative Grade Point Average (CGPA)	Letter Grade	Performance Descriptor
3.01 - 4.00	A	Very Good (Accredited)
2.01 - 3.00	B	Good (Accredited)



1.51 – 2.00	C	Satisfactory (Accredited)
≤ 1.50	D	Unsatisfactory (Not accredited)

Institutions which secure a CGPA equal to or less than 1.50 will be intimated and notified by the NAAC as "assessed and found not qualified for accreditation". The accreditation status is valid for five years from the date of approval by the Executive Committee of the NAAC.

Benefits Of Accreditation

Helps the institution to know its strengths, weaknesses, opportunities and challenges through an informed review

Categorizes internal areas of planning and resource allocation

Enhances collegiality on the campus

Outcome of the process provides the funding agencies with objective and systematic database for performance based funding

Initiates institution into innovative and modern methods of pedagogy

Gives the institution a new sense of direction and identity

Provides the society with reliable information on the quality of education offered by the institution

Gives employers access to information on standards in recruitment

Promotes intra-institutional and inter - institutional interactions.

Re-Assessment

Institutions which would like to make an improvement in the accredited status in institutional grade may volunteer for re-assessment after completing at least one year, but not after the completion of three years.

Re-Accreditation

Re-Accreditation Report (RAR) should be submitted to the NAAC by the first half of the fifth year, so that the process of assessment visits could be completed by the end of the fifth year. The NAAC will endeavour to expedite the re-accreditation process to complete within six months after receiving Re-Accreditation Report. The re-accreditation by the NAAC will look upon how far the institution has achieved the objectives enshrined in the five core values mentioned earlier and assesses how it has progressed during the accredited period. In particular, the re-accreditation makes a shift in focus in assessing the developments with reference to three aspects

(i) Quality Sustainance

During the first assessment for accreditation, the NAAC's process would have triggered quality initiatives in many aspects of functioning of the HEIs resulting in significant changes in the pedagogical, managerial, administrative and related aspects of functioning of the accredited institutions. These changes have a direct bearing on the quality of education and re-accreditation will consider how these initiatives have been sustained during the accredited period.

(ii) Quality Enhancement

The re-accreditation would give due credit to the quality initiatives promoted by the first assessment and the consequent quality enhancement that has taken place.

(iii) Action Based On The Assessment Report

Re-accreditation will address how HEIs have taken steps to overcome the deficiencies mentioned in the first assessment report and also build on the strengths noted in the report and will prepare a Re-Accreditation Report (RAR) accordingly.



Impact Of NAAC

Created better understanding of Quality Assurance among the HEIs
Generated keen interest and concerns about Quality Assurance among the stakeholders
Helped in creation of institutional database of the accredited institutions
Encouraged the institutions to get more funds from the funding agencies
Facilitated regulatory agencies to make use of accreditation for funding
Triggered Quality Assurance activities in many of the HEIs
Activated a 'Quality Culture' among the various constituents of the institution

Reaching Out Of NAAC

Reaching out to the stakeholders is an essential component of the NAAC's image building process. This is done through
Regular correspondence with the institutions
Awareness programmes, region-wise
Assessors' Interaction Meetings
Meetings of Directors of Higher Education
Newsletter : NAAC News
Website: www.NAAC.gov.in
Press conferences and press releases
Special articles in newspapers and magazines on the NAAC activities
Directory of Accredited Institutions.

Mous With Government And National And International Agencies

The NAAC has entered into a number of MoUs/collaborations with Government National & International Agencies, as listed below:

National:

(1) NAAC-NCTE, (2) NAAC-DCI

International:

(1) with Commonwealth of Learning (COL), Canada, (2) with Higher Education Quality Assurance Committee (HEQC) of the Council on Higher Education (CHE), South Africa, (3) with Universities Quality Agency (AUQA), (4) with British Council/ Higher Education Funding Council for England (HEFCE), Quality Assurance Agency (QAA), UK, (5) with United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (UNESCO), (6) with International Network for Quality Assurance Agencies in Higher Education (INQA/AHE), (7) with Asia Pacific Quality Network (APQN).

Future Of Accreditation System

The criteria currently adopted by the two systems- All India Council for Technical Education (AICTE) and NAAC for assessment are just the physical and measureable parameters like faculty strength, publication etc.. There are suggestions that the accreditation should also assess "process parameters" too. In addition the quality assessment should include the system of other factors like management, administration, transparency, ethics, and so on.

Above all, the assessment should also consider the "outcome parameters" such as performance of the products of the programme or institutions. But this is not possible by the current inspection which last for a few days. The National Knowledge Commission (NKC) and the Yashwantrao Chavan Committee (YPC) on Renovation and Rejuvenation of Higher Education in India have accorded priority to the issues concerning accreditation in education sector with different approaches. NKC has suggested licensing of a large number of private organizations to undertake



accreditation responsibility. The YPC has suggested that the accreditation responsibility be entrusted to a carefully chosen non-profit organization in the public domain.

A Brainstorming Session on the "Role of NAAC in the Changing Scenario of Higher Education" was held at NAAC Campus on 11 Sep, 2009 which was chaired by Prof. Yashpal. The observations/recommendations from the session are:

NAAC has done a reasonably good job in the field of Assessment & Accreditation with greater credibility

Social diversities including gender and location aspects may be taken into consideration for future Accreditation exercises.

The idea of private accreditation agencies should be discouraged but the members were not averse to multiple accreditation agencies.

The assessment and accreditation methodology of NAAC needs to be strengthened.

Conclusion:

There is a growing concern that quality monitoring has to be about improving what is delivered to stakeholders, even where this requires some substantial reconsideration of the higher education. Accountability still remains a priority in many systems and there is a concern that credibility through accountability has to be established first and then improvement will follow. Real enhancement is internally driven. If enhancement is also intended to develop the transformative ability of students, then quality monitoring needs to adopt a transformative framework, rather than simplified operationalization such as fitness for purpose. Only if external quality monitoring is clearly linked to an internal culture of continuous quality improvement that focuses on identifying stakeholder requirements in an open, responsive manner will it be effective in the long run. Quality monitoring is in need of a 'paradigm shift' that turns it from an accountability tool to a fundamental support in the development of a culture of continuous improvement of the transformative process. Hope NAAC will act upon this.

References:

1. <http://www.yourarticlelibrary.com>
2. <http://sjec.edu.in>
3. <http://www.indiaeducation.net>
4. <https://www.academia.edu>
5. <https://abhinavjournal.com>
6. <https://NAAC.gov.in>

VOL 5
SPECIAL ISSUE 1
SEPTEMBER 2019



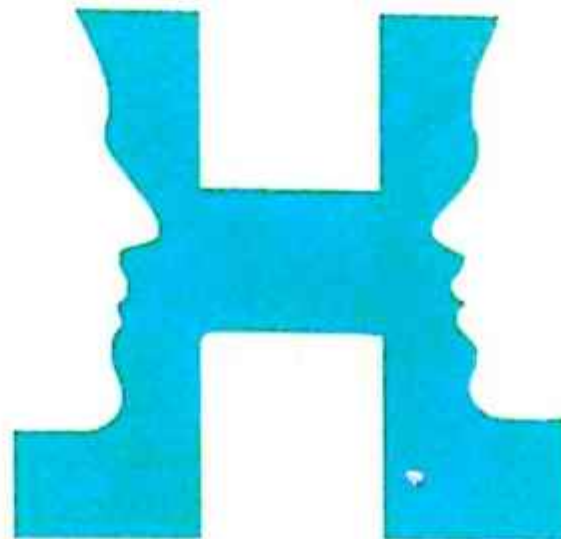
ISSN:2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197 (IIJIF)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of NAAC sponsored seminar on
Use of Technology and E-Content in Teaching and Learning

23rd September, 2019



Issue Editors

Dr Vishnu Patil
Dr Avinash Dhotre



Organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
DEOGIRI COLLEGE, AURANGABAD



27. Role of ICT in the Enhancement of English Language Teaching	Dr.R.A. Landage	
28. Electronic Media as an Alternative Media for Minorities, Dalits in India: Prospects and challenges	Dr. P. B. Pagare R.A. Gaikwad	
29. Teaching of English Prose and Poetry: A Technical Way	Dr.D. M. More	
30. Mobile Technologies and Applications: Facilitator of Teaching and Learning in Science	V.S. Suryavanshi A.W. Suryavanshi	
31. An Impact of Effective Use of ICT for Improving the Quality of Teaching & Learning Process	V.B. Bhise, S. B. Gaikwad, S.N. Tayade, S.M. Shende, V.B. Bhise & S.A. Chandrashekhar	111
32. Role of E-PG Pathshala In Teaching And Learning Sanskrit	Dr. Pradnya Konarde	112
33. Role of ICT in the Process of Teaching and Learning	Dr. G.S. Adgaonkar	115
34. Training through Blended Mode in ICT for Effective Teaching Learning Process	B.G.Toksha, T.P. Kulkarni, S.V. Lomte, P. M. Ambad, G.S. Sable, K. B. Kulkarni, S. P. Bhosle	119
35. Uses of Mobile Apps in Teaching and Learning	D.A.Yewale	122
✓ 36. Significance of ICT in Twenty First Century in Education: An overview	Dr. S.R. Sawate	125
37. Innovations in Education Technology: Getting the Classroom Interactive	Dr. M.Y. Suryavanshi	131
38. E-learning: Scope and Challenges in India	P.M. Dhengle	133
39. Importance of Technology in Teaching and Learning Process	Dr. Mohini Gurav	137
40. Rethinking the Optimization of Technology in Teaching Learning and Evaluation	Bharat Sonar	140
41. NPTEL-A Source of E-Content	Dr.S.Chawthaiwale Dr.S. N. Dhage	142
42. E-learning the Need of Today's Education	Dr. V. P. Pagore Dr. P.N. Bajad	145
43. The Innovative Concept of Google Classroom	A. K. Patil	146
44. Evaluation of Utility of Technology Assisted Teaching Learning In Legal Education	Dr. A. N. Kottapalle	149
45. Use of Interactive Whiteboard in Teaching-Learning	A.N. Ardad	152
46. Using Technology for Effective Teaching and Learning	Dr. R.Shesham, Dr. K. Thombre, Dr. P.Sonune	154
47. Difficulties to Implement the Massive Open Online Course at Rural Level	Dr. V. D.Matkar	157
48. MOOC आणि मराठे	डॉ.समिता जाधव	159
49. प्रसारमाध्यमे व भाषिक कौशल्ये यांचे अभ्यासक्रमात स्थान	डॉ. दत्तात्रय प्र. डुंबरे	161

Significance of ICT in Twenty First Century in Education: An Overview

Dr. Sawate Sanjay Raosaheb

Dept. of Geography, Kalikadevi Arts, Commerce & Science College, Shirur Kasar
Tq. Shirur Kasar Dist. Beed

Abstract: ICT stands for Information and Communication Technologies. ICT is a scientific, technological and engineering discipline and management technique used in handling information, its application and association with social, economic and cultural matters (UNESCO, 2002). ICT is a part of our lives for the last few decades affecting our society as well as individual life. ICT that is currently loosely utilized in instructional world. Teacher, Student, administrator and each folks associated with education are popularly used ICT. Teacher use ICT for creating teaching learning method straightforward and fascinating. A competent teacher has many skills and techniques for providing no-hit teaching. So development and increase of skills and competencies of teacher needed data of ICT and Science & Technology. In fashionable science and technological societies education demands a lot of data of teacher relating to ICT and skills to use ICT in teaching-learning method. The data of ICT additionally needed for pre-service teacher throughout their coaching programme, because this integrated technological knowledge helps a prospective teacher to know the world of technology in a better approach by that it may be applied in future for the betterment of the scholars. Now a days ICT's are transforming schools and classrooms a new look by bringing in new curriculum based on real world problems, projects, providing tools for enhancing learning, providing teachers and students more facilities and opportunities for feedback. ICT also helps teachers, students and parents to come together. Continuous and Comprehensive analysis (CCA) helps students yet as academics to use a lot of technology for creating teaching learning a lot of enticing for the betterment of our future generation. Teachers should understand the utilization of ICT in their subject areas to assist the learners for learning a lot of effectively. So, the knowledge of ICT is very much essential for the both prospective teachers as well as in-service teachers also. This will facilitate academics to grasp integrated technology with schoolroom teaching. This paper mentioned regarding the role of ICT in twenty first century's teacher education.

Keywords: ICT, technology, education, student, teacher training, CCA.

Introduction:- Today's age of twenty first Century and it's additionally the age of data and technology (IT). This era is the explosion of data and information technology. Every aspects of life are associated with science and technology. Huge flow of data is rising altogether fields throughout the planet. Now data and technology is popularly victimization in instructional field for creating teaching learning method no-hit and fascinating for college kids and teacher each. In 1998, UN agency World Education report refers regarding student and academics should have adequate access to enhance digital technology and also the net in their college, schools, teacher instructional establishments. Teachers should have the data and skills to use new digital tools to assist all students deliver the goods high tutorial normal. The quality of skilled development of teacher education depends on the extent of ICT integration in teacher education programme. According to UN agency (2002) "ICT may be a scientific, technological and engineering

discipline and management technique utilized in handling data, its application and association with social, economic and cultural matters". Teachers are at the core of any living society. Technologies play a crucial role in coaching programme of academics. Students' accesses data and knowledge through TV, digital media, cable network, internet and social media i. e. Facebook, Twitter, Whatsapp, Linkedinn, Igo, Line, Wechat etc. ICT is very important for Pre-service teacher education programme in the 21st Century. Without proper knowledge of ICT teacher cannot perform in his/her class room and it could not be said to be a complete one.

Need and Significance of the study:- In the present scenario of classroom is changing. There is a technological gap between the progress of the society and tutorial activities of the teacher within the college. If we have a tendency to see in our society on the one hand technology has revolutionized our society and on the opposite hand the teaching learning activities in

class level have remained so far away from technology. In our college the data is imparted by the teacher in associate ancient approach, a teacher centric mode which is most of the time boring and not to gain interest to the student. But gift twenty first Century's education is student centrically education. Students learn from multi sources and for this reason use of ICT is extremely a lot of essential in instructional field and at the same time teacher's data of ICT and multimedia system additionally needed. So gift study has nice would like and significance as a result of this study shows roles of ICT teachers' education. Role of ICT in 21st Century's Teacher Education

Objective of the study:- To search out the roles and significance of ICT in twenty first Century's Teacher Education.

Methodology:- This study relies on secondary sources like books, Articles, Journals, Thesis, University News and websites etc. The method used is Descriptive Analytic method.

Why do we use ICT in Education?

The college is currently dynamic its look from the normal one i. e. from one way to two way communications. Now academics yet as students participate in college discussion. Now Education is based on child centric education. So the teacher ought to prepare to cope up with totally different technology for victimization them within the college for creating teaching learning interested. For effective implementation of sure studentcentric methodologies like project-based learning that puts the scholars within the role of active researches and technology becomes the acceptable tool. ICT has enabled higher and swifter communication; presentation of concepts simpler and relevant approach. It is an efficient tool for data acquiring-thus students are inspired to seem for data from multiple sources and that they are currently a lot of sophisticated then before. So for this reason ICT is very much necessary for Education.

Advance Recent Trends in Education:-

Black board teaching is the oldest trends in education. Now based on numerous ever-changing desires of our society currently stress is additionally given to the assorted academic theory and academic practices. According to these theories and practices changes additionally also are endure in teacher education also. It is natural that teacher education should embody new technology. Teachers ought to additionally apprehend the proper attitudes and values, besides being proficient in skills related to teaching. As we all know the minimum demand of any coaching programme is that it ought to facilitate the tyro to accumulate the essential skills and competencies of a decent teacher.

Now-a-days new trends in teacher education are Inter-disciplinary Approach, Correspondence courses, orientation courses etc. Simulated Teaching, Micro Teaching, Programmed Instruction, Team Teaching are also used in teacher education. Now-a-day Action Research also implemented in Teacher Education. ICT acts as the gateway to the world of information and helps teachers to be updated. It creates awareness of innovative trends in tutorial methodologies, evaluation mechanism etc. for professional development.

Different Strategies for applying ICT in Education:-

- i) Providing adequate infrastructure and technical support.
- ii) Applying ICT in all subjects.
- iii) By using application software, using multimedia, Internet e-mail, communities, understanding system software.

Role of ICT in 21st Century's Education:-

ICT helps teachers to interact with students. It helps them in preparation their teaching, provide feedback. ICT also helps teachers to access with institutions and Universities, NCERT, NAAC NCTE and UGC etc. It additionally helps in effective use of ICT computer code and hardware for teaching – learning method. It helps in improve Teaching ability, helps in innovative Teaching. It helps in effectiveness of classroom. It additionally helps in rising skilled Development and academic management further as enhances active learning of teacher. It is now replacing the ancient technology. As we all know now-a day's students are forever have competitive mind. So teacher should have the data of the topic. This can be done through ICT. ICT helps teachers in preparation for teaching. In order to introduce ICT in service of education completely different ways and methods are applied. Different tools are used like data processing, Database, computer program etc. Various technology primarily based plans are accustomed facilitate the lecturers for his or her observe teaching. ICT prepares teacher for the employment of their skills within the real room state of affairs and additionally create students for his or her future occupation and social life. ICT used as associate degree assisting tool for instance whereas creating assignments, human action, collecting data & documentation, and conducting research. Typically, ICT is used independently from the subject matter. ICT as a medium for teaching and learning. It is a tool for teaching and learning itself, the medium through that lecturers will teach and learners will learn. It seems in many various forms, such as drill and practice exercises, in simulations and educational networks. ICT as a well-liked tool for

organisation and management in establishments. Teachers should give technological support to find out victimisation movie, animation, simulation training which helped student teachers to give model presentation. If the teacher is extremely equipped with technology, the student will also be equipped with technology. It removes the standard methodology of teaching and prepare teacher to use fashionable methodology of teaching. ICT is store house of educational institution because all educational information can safely store through ICT. ICT helps Teacher to communicate properly with their students. So ICT bridge the gap between teacher and students. ICT helps Teacher to pass information to students within a very little time. ICT helps Teacher to design educational environment. ICT helps Teacher to identify creative child in educational institute. ICT helps Teacher to motivate students and growing interest in learning. ICT helps Teacher for structure preconditions (vision, policy and culture). It is additionally helps Teacher for his or her personnel support (knowledge, attitude, skills). ICT helpful for technical preconditions (infrastructure). ICT helpful for designed learning situations which are needed for both vocational education and the training of future teachers (in the training institutes). Teacher coaching institutes will develop their program victimization ICT. With the assistance of ICT Teacher coaching institutes will develop communication network. Teachers learn most from their own networks (learning from others) with the assistance of ICT.

Conclusion:-

Teaching occupies an honorable position in the society. ICT helps the teacher to update the new knowledge, skills to use the new digital tools and resources. By victimization and acquire the data of

ICT, student teacher will become effective teachers. ICT is one of the major factors for producing the rapid changes in our society. It will modification the character of education and roles of scholars and teacher in teaching learning method. Teachers in Asian nation currently started victimization technology within the category area. Laptops, alphanumeric display projector, Desktop, EDUCOM, Smart classes, Memory sticks, Google Class room are becoming the common media for teacher education institutions. So we must always use info & communication Technology in Teacher Education in twenty first Century as a result of currently lecturers solely will produce a bright future for college students.

References:-

1. Chauhan, S. S. (1992). Innovations in Teaching and Learning process. New Delhi: Vikas Publication House Pvt. Ltd.
2. Dash, K. M. (2009) ICT in Teacher Development, Neelkamal Publication Pvt.Ltd. Educational Publishers, New Delhi.
3. UNESCO (2002). Information and Communication Technologies in Education, A Planning Guide. Paris: UNESCO.
4. NCTE (2002). ICT initiatives of the NCTE Discussion Document. New Delhi :National Council For Teacher Education.
5. Dahiya, S. S. (2005). ICT-Enabled Teacher professional. University News, forty three page 109-114 could 2-8.
6. Bharadwaj, A. P. (2005). "Assuring Quality in Education", University News, Vol. 43 No.18.
7. ICT in Education (2006). Information and communication technologies in teacher education: A planning guide.
9. Kirwadkar, A & karanam, P. (2010) : E-learning Methodology. Sarup Book Publishers Pvt Ltd. New Delhi.
10. www. google. com
11. www. wikipedia. com



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

- ✓ 43. The Gandhian Approach to Rural Development |
R.S. Gangarde | 209
44. Khadi The Economic Wheel | Dr.Parmeshwar Bhosale | 212
45. Mahatma Gandhi: A Management Guru for Successful Life |
Dr. Doke A.T. | 217
46. Mahatma Gandhi's: A views | Dr. Bhise N. H. | 223
47. Mahatma Gandhi's Thoughts Regarding Education |
Vijaykumar R. Soni | 228
48. Gandhian Ideology: Study of Rara Rao's Kanthapura |
Dr. Ahilya B. Barure | 233
49. Philosophy of Education: Aspects of M.K. Gandhi |
Mr. Sumit D. Nanaware | 242
50. Mahatma Gandhi-National Integration |
Mr. Shaikh G. Ahmed | 249
51. Mahatma Gandhi's Message to Students' |
Dr. V.J.Chavan | 217
52. The Gandhian Approach to Rural Development |
Dr.Ramakant Ghadge | 261
53. Mahatma Gandhi and women Empowerment |
Dr. Jadhav S. B. | 267
54. Gandhi's Views on Morality | Shital R. Yerule | 271
55. Mahatma Gandhi and Women Empowerment |
Dr. Rama Pande | 275
56. Ruminaton on Gandhi thoughts of Modern India |
Dr. Deshmukh A. B. | 278
57. Gandhian Ideology and Women Empowerment |
Mr.Pawar D.V. | 281
58. Gandhiji's View on Rural Reconstruction |
Dr. A. D. Joshi | 286
59. Path of Rural Development and Gandhian Philosophy |
Dr. S. P. Gaikwad | 293
60. Mahatma Gandhi's Contribution to Indian Freedom Struggle |
Dr. Korde R.C. & Dr. Donglikar C.V. | 300
61. Mahatma Gandhis Thoughts on Economics | Dr. Mule P.M | 308
62. Environmental Sustainability and Mahatma Gandhian |
Dr. Shaikh M. Hanif Ismailsab | 312

The Gandhian Approach to Rural Development

Ramdhani Shankar Gungurde

Kullabdes Arts, Commerce & Science College,

Shri Kaveri Dist. Beed.

In the Indian context rural development might even be made public as increasing production in agriculture and allied activities among the agricultural areas likewise is development of rural industries with stress on village and cottage industries. It attaches importance to the generation of most viable employment opportunities in rural areas, particularly in the weaker sections of the community thus an attempt to raise their standard of living. Provision of such basic amenities like electricity, particularly for the productive purpose, and roads connecting villages to promote centres and facilities for health and education etc. figure prominently in the scheme of rural development. Mahatma Gandhi as a visionary of Asian nation had a really clear perception of its villages because he created an emphatic assertion that "India lives in her seven and a half lakhs of villages". He additionally believed that Asian nation can never prosper in villages, not in cities, in huts not in palaces. He held this conviction by saying that "If village perishes, India will perish too. He found that the progress of the country lies within the development of majority of its rural villages, develop rural economy, industry and rural skills. Gandhiji found the sole method of delivery huge of fine living to the agricultural individuals is by creating the village the central place within the economic programme Rural development is outlined by Gandhiji contained self-sufficiency, interdependence for other wants and development of Village Industries. He needed to bring forth rural reconstruction with sound scientific and non secular values. Through his 18-point Constructive Programme, Gandhiji with success enforced his rural reconstruction activities in Sevagram Centre close to Wardha in 1935.

Gandhiji had a really really different perspective to rural development, he believed in Gram swaraj. In straightforward words he believed that every village in Asian nation ought to act as a separate republic, independent of its neighbours for its own vital wants and yet interdependent for many others in which dependence is necessary. Each village should be basically self-reliant, making provision for all necessities of life - food, clothing, clean water, sanitation, housing, education and so on, including government and self-defence, and all socially useful amenities. He believed that every

of those republics would be during a higher position to spot its position with regard to the each the resources and issues it possess and work towards development on the idea of its own strength. Of course this idea remains revolutionary and has its own professionals and cons. This would mean that every village would be forced to spot its downside and type it out on its own, building capability at all-time low level to figure for itself. Solutions caused by the individuals themselves, would undoubtedly be property and more practical. But considering the social system nature of Indian society then (partially even today) and also the huge diversity we have a tendency to possessed, it may have resulted no to very little modification in Indian society on one hand and it would have become very difficult to utilize India's natural resource concentrated in different regions of the country for the overall development of India.

Constructive Programme

The UN Millennium Declaration of September 2000 indicates eight millennium development goals eradicate extreme financial condition and hunger, reach universal primary education, promote gender equality and empower girls, reduce child mortality, improve maternal health, combat HIV/AIDS, malaria and other diseases, ensure environmental sustainability, and develop a global partnership for development. When we consider Gandhi during this context, we have a tendency to understand that his concepts area unit of crucial importance. His life remained 'experiments with Truth' and his issues embraced the entire of humankind and not simply Asian nation, South Africa and England. His principles, evolved throughout his lifetime 1869 to 1948, cowl not simply the last a part of the nineteenth century and also the half of the 20th century, but rather transcend any time-frame.

The world has changed dramatically since he lived and worked. There have been enormous changes in political, economic and social scenes. However, trials, tribulations, and challenges visaged by sage in his eventful life stay vital. The ethical problems he raised area unit still relevant; and also the queries he expose for social, economic, and political justice still stay of crucial importance. The current strategies of measurement development in terms of economic progress, industrialization, consumption of energy and urbanization have proved to be inadequate to address the issue of the miseries of the millions. Gandhi was awake to the pitfalls of such a theory and also the results of the unequal distribution of wealth between totally different categories during a society. Today science and technology have taken new strides, and yet millions live in utter poverty; basic

human rights are denied to them, powerful nations dominate over the powerless ones and innocent people become victims of terrorism. It is during this dismal state of affairs that nationalist leader perspective becomes helpful. The quintessence of nationalist leader philosophy is that the human values and not the market ought to govern life. Gandhi presents the 'humane face of development. Ghosh brings out the subsequent basic objectives of the nationalist leader theme of holistic development-(1) human resource development for capability enlargement, (2) development in a balanced way through manual and intellectual labour (development of body, mind and soul), (3) development with social justice, rights and freedom. This is in accordance with the principle of social and human development. (4) Attainment of self-reliance and independency through rural development, (5) reduction in financial condition through the generation of extra financial gain and employment.

According to Gandhi nature provides just enough, and not more, for our daily needs. He opposes exploitation, remorseless drive for economic abundance and private aggrandisement, massive technological progress, severe competitions, unbridled consumerism and concentration of wealth and power. In his opinion, greed is harmful to social smart and political liberation while not economic equality is hollow. For him economics stands for social justice. He emphasizes decentralized self-dependent units bound together by the bonds of mutual cooperation and interdependence. The objective of his constructive work is that the creation of non-violent society. Gandhi envisages a healthy society supported harmony and dialogue, wherever the ideas of equality and justice area unit translated within the lives of abundant millions. Commenting on man's social nature, Gandhi writes/ 'If it's his privilege to be freelance it's equally his duty to be freelance...It will be possible to reconstruct our villages so that villages collectively, not villagers individually, will become self-contained." Gandhi believes in the unity of life and egalitarian values in all spheres of life. According to him life cannot be divided in sphere like social, political, economic, moral and religious. If one a part of the society suffers, all elements suffer. We get an important insight from J. B. Kripalani and Dada Dharmadhikari.. J. B. Kriplani points out that it's common to possess saints among North American nation - saints World Health Organization meditate for salvation and World Health Organization area unit involved with the uplift of the soul. It is their contribution to the evolution to the human history in associate indirect method. But Gandhi was concerned in a direct way. Social involvement is very important to him. Gandhi pictured a society of various individuals supported mutual affection, mutual

cooperation and mutual respect. He wanted freedom and equality for all. Gandhi transcends barriers of faith, rituals, caste, class and colour. Dada Dharmadhikari points out that Gandhi had 'no business apart from life, associate integrated life'. He ne'er ran aloof from any scenario, he two-faced it.

His conception of life was all comprehensive; for him nothing was separate and everything was harmonical. He additional social dimension to morality that was distinctive. He practiced what he preached and did everything potential to spot himself with the commoner, ordinary man, suffering man. When Republic of India became freelance, he wasn't within the capital to celebrate, however was with the riot-stricken individuals.

Gandhi maintains that wealth is to be used judiciously, governed by the principle of 'each according to his need'; and emergence of inequality has to be curbed at all levels. According to him, all amassing or hoarding of wealth, above and beyond one's legitimate requirement is theft. His conception of social use of wealth against the prevailing attribute of consumerism demands our serious attention. Values of 'truth' 'non-violence' and 'non-accumulation of wealth' are to be cherished for the very survival of the society, where the weakest has the same rights as the strongest.

Trusteeship for Gandhi could be a dynamic conception which will bring amendment within the established establishments. It is a method of reworking the current capitalist order of society into associate egalitarian one. An individual isn't liberated to hold or use his wealth for egotistic satisfaction..The common property is to be used for the good of one and all, all including the made got to work for the society command to his/her capability and that they can receive as per desires. Property owners are caretakers of the property for the common good. Trusteeship aims at some realizable outcomes like capital-labour cooperation, formation of social capital, reduction in concentration of economic power in a few hands, and voluntary cutting down the wants.

Gandhi did not approve the use of machines that replaces men or makes them subservient to machines. He advocates even handed use of machines; and straightforward, indigenous technology of non-exploitative nature in tune with nonviolence. He emphasizes the importance of whatever can be produced locally, and thinks about a decentralized economy. He propagated the utilization of the spinning machine and khaddar for self reliance moreover as ethical and economic regeneration.

Gandhi pictured exploitation free society, based on cooperation and ethics. Gandhi insists on regulation of wants and use of the goods and material not imported, but made in one's own country.

Conclusion

Gandhi draws our attention to the need to protect the environment and to guard against the abuse of natural resources. Our mindless destruction of natural wealth is alarming. Mighty comes, big dams, large industries and alternative huge ventures raise questions on the standard of life littered with them. Again the Gandhiji is giving to message to us, come back to village to survive in nature for the rural development.

References:

1. M. K. Gandhi - From Yerrvda Mandir: Ashram Observances, translated by Valji G. Desai, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, reprint, 1980.
2. B. N. Ghosh, Gandhian Political Economy: Principles, Practice and Policy, Ashgate Publishing Ltd., Aldershot, Hampshire, UK, 2007.
3. Bhikhu Parekh, Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination, Ajanta Publications, Delhi, 1st Indian edition, 1995.
4. Usha Thakkar and Jayshree Mehta, ed.s- Understanding Gandhi: Gandhians in Conversation with Fred J Blum, Sage Publications India Pvt. Ltd., New Delhi, 2011.
5. <http://www.sourarticlelibrary.com>
6. <https://shodhganga.inflibnet.ac.in>
7. <https://www.mkgandhi.org>



Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 7.139

Indexed (SJIF)

March 2020

Special Issues- 25 Vol. 2

The Current Issues in Social Sciences in India (CISSI-2020)



Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Chief Editor
Prof. Dr. B. D. Kokate (I/C Principal)

Dr. S. S. Undare (Vice Principal)
Dr. G. A. Mohite (Vice Principal)

Editor
Dr. R. K. Kale

Co-Editors
Dr. S. N. Akulwar
Dr. B. D. Jadhavar
Dr. S. E. Ghumatkar

Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed

CURRENT GLOBAL REVIEWERSpecial Issue 25, Vol. 2
March 2020Peer Reviewed
SJIFISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

19.	"भारतातील चलनाचे निश्चलीकरण : कारणे आणि परिणाम" डॉ. देविदास नागरगोजे	75
20.	भारतीय राज्यघटना आणि मानव अधिकार प्रा. धर्मराज केशवराव कटके	78
21.	वैदिक व उत्तरवैदिक कालखंडातील स्त्रियांचा सामाजिक दर्जा एक मिमांसा फकिरा भगवान राजगुरु	84
22.	उपासमार आणि कुपोषण या समस्येवर शालेय पोषण आहार योजनेचा झालेला सकारात्मक परिणाम वर्षा शंभराव गाडवे	90
23.	संयुक्त कुटुंब पध्दतीचा न्हास : कारणे व परिणाम प्रा. गाडवे मनिषा महारुद्र	93
24.	नागरिकत्व सुधारणा कायदा : भ्रम आणि वास्तव डॉ. गजानन देवराव चिट्टेवाड	96
25.	भारतातील राज्यनिहाय ग्रामीण व नागरी बेरोजगारी दर : कारणे आणि उपाय डॉ.गणेश बापूराव गावंडे	100
26.	दहशतवादाचे स्वरूप व उपाययोजना Nature of Terrorism and Remedies सुर्यवंशी गणेश दामाजी	107
27.	मराठवाड्यातील सामाजिक चळवळीत शैला लोहियांचे योगदान डॉ. गंगणे आर. व्ही.	112
28.	आधुनिक तंत्रज्ञान आणि ग्रामीण विकास गौतम नागनाथ वेंडे	116
29.	महिला सबलीकरण आणि भारतीय घोरणे भगवानासिंग देवेसिंग गिरासे	118
30.	ग्रामीण विकासात माहिती तंत्रज्ञानाची भूमिका प्रा. डॉ. चंद्रपेखर इ. गित्ते	122
31.	राज्यपाल : राज्य प्रशासनातील बदलत्या भूमिकेचे विश्लेषण प्रा.डॉ. ए. एल. गोरे	127
32.	भारतातील बेरोजगारी - कारणे आणि उपाय प्रा. डॉ. गोवर्धन खेडकर	131
33.	भारताच्या विदेशी व्यापाराची संरचना : एक अभ्यास प्रा. डॉ. गोवर्धन के. वायसे, प्रा. डॉ. सुरेश इ. घुमटकर	134
34.	राज्यपालाचे प्रशासनातील स्थान, भूमिका आणि अधिकार व कार्य प्रा. डॉ. सुधाकर एस. हांगे	137
35.	हुंडा प्रथा : एक सामाजिक समस्या प्रा. डॉ. पावडे के. डब्ल्यु.	140
36.	महिला सक्षमीकरण. कायदे आणि योजना प्रा. डॉ. हृदी साधू वाघमारे	143
37.	सवाल्टर्न इतिहासलेखणाची वैचारिक भूमिका : एक अभ्यास डॉ. इंगळे चंद्रभूज बंकटराव	150

आधुनिक तंत्रज्ञान आणि ग्रामीण विकास

गौतम नागनाथ येडे

(भूगोल विभाग), कार्लिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, शिरूर (का.), ता.शिरूर (का.) जि.बीड

सारांश :-

प्रत्येक व्यक्ती आपले जीवन जगत असतांना काही तरी नाविण्याच्या शोधात असतो. त्यासाठी हमेशा नव-नविन तंत्रज्ञानाचा शोध घेत असतो. यावरच अगदी प्राचीन काळापासून ते आज आधुनिक युगापर्यंत मानव आपली प्रगती करण्यासाठी हमेशा प्रयत्नशील असतो. यातूनच आपल्या गावचा विकास कसा होईल याकडे त्याचे जाणीवपूर्वक लक्ष असते. या नविन तंत्रज्ञानाच्या जोरावर अन्न, धान्य व इतर कच्च्या मालाचे उत्पादन वाढवण्यात तो हमेशा पुढे असतो.

आज प्रत्येक व्यक्ती आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या युगात वावरत आहे. संगणकाच्या समोर बसून प्रत्येक जण जगात चाललेल्या घडामोडी प्रत्यक्ष पाहू शकतो. क्षणार्धात जगाच्या कोणत्याही कोपऱ्यात विविध माध्यमातून संपर्क साधवू शकतो. अगदी कल्पने पलीकडच्या विकासाच्या युगात आपण जगत आहोत. मात्र, हे सारे होत असतांना आपल्या गावातील शेती, पाणी, शिक्षण आणि पायाभूत सुविधांची प्रगती आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या सहाय्याने करून ग्रामीण विकास साधला जातो.

सूचक शब्द : आधुनिक तंत्रज्ञान, ग्रामीण विकास, मानव, शेती इत्यादी.

प्रस्तावना :-

आपला भारत हा प्राचिन काळापासून शेती व्यवसायावर चालत आलेला देश आहे. सुरुवातीच्या काळात शेती व्यवसायात झालेला बदल हळूवार व मर्यादित होते. भारतीय कृषि व्यवसाय पर्जन्यावर अवलंबून असल्याने शेती उत्पादन अनिश्चित स्वरूपाचे होते. म्हणूनच भारतीय शेतीला 'मान्सूनचा जुगार' असे म्हणतात. 1943 साली बंगाल मधील भिषण दुष्काळ व सन 1947 मध्ये झालेली भारताची फाळणी यामुळे अन्न, धान्याची कमतरता भासू लागली. त्यावेळेस अन्न, धान्याची मोठ्या प्रमाणात आयात करावी लागली. यावर उपाय म्हणून नव-नविन योजनांच्या माध्यमातून अन्न, धान्य उत्पादनात वाढ करणे आवश्यक बनले. यासाठी जलसिंचनाच्या सुविधा, भुसंवर्धन, सुधारित बी-बीयाणे, रासायनिक खते व किटकनाशके, यांत्रिक अवजारे अशा अनेक सुधारणा विविध योजनेच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांना उपलब्ध करून दिल्या. स्वातंत्र्य प्राप्ती नंतर भारतात शेती व्यवसायात वेगाने व अमुला आग्र बदल होत गेले. कृषि विकासाच्या दृष्टीने वेळोवेळी विविध योजना व आधुनिक तंत्रज्ञान विकसित झाले.

आज प्रत्येक शहरांचा झपाट्याने विकास होत असतांना सुध्दा जागतिक लोकसंख्येपैकी ग्रामीण भागात राहणाऱ्यांचे प्रमाणपत्र 1950 मध्ये 79% पेक्षा थोडे जास्तच होते. भारतात 1961 मध्ये 82% लोक ग्रामीण भागात राहत होते. तर 1971 मध्ये तेच प्रमाण 80.01% एवढे झाले. सहाजिकच आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या आधारावर राष्ट्रीय विकास साधण्यासाठी ग्रामीण विकास अत्यंत आवश्यक ठरतो. अलीकडच्या काळात आधुनिक तंत्रज्ञानामध्ये अमुलाग्र क्रांती झाल्यामुळे याचा उपयोग ग्रामीण विकासासाठी करून घेण्यात येत आहे. ग्रामीण भागातील विविध उपयोगाकरिता तंत्रज्ञानाचा वापर करण्यास सुरुवात झाली आहे. त्यातूनच गावचा विकास घडून येत आहे.

उद्दीष्टे :-

- * आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या सहाय्याने ग्रामीण विकास साधणे
- * नविन तंत्रज्ञानाच्या सहाय्याने सधन पध्दतीने शेती करणे.
- * उच्च उत्पादन देणाऱ्या जातीची निवड करणे.
- * आधुनिक तंत्रज्ञानाचे महत्व आणि उपयोग सांगत शेतकऱ्यांचा आत्मविश्वास वाढविणे.
- * जलसिंचनच्या आधुनिक सुविधांचा वापर करून कमी पाण्यामध्ये जास्त उत्पादन घेणे.
- * पायाभूत सुविधा, शिक्षण, संगणक इत्यादीचे माध्यमातून ग्रामीण विकास साधणे.

आधुनिक तंत्रज्ञानातून ग्रामीण विकास :-

शेती हा ग्रामीण भागातील मुख्य व्यवसाय आहे. आधुनिक तंत्रज्ञानामुळे शेतीमध्ये बराच विकास झालेला आहे. आज माती परिक्षणातून ते पीक येईपर्यंतच्या काळात शेतकरी आधुनिक तंत्रज्ञानाचा उपयोग करून घेत आहे. यामुळे उत्पादन पूर्वीपेक्षा कित्येक पटीने वाढले आहे.

त्यामुळे शेतकऱ्यांना चांगले दिवस आले असून त्यांना त्यांचा विकास करणे सोयीचे झाले. ग्रामीण भागामध्ये आज मातीचे परिक्षण करून मातीचा कस कायम ठेवला जात आहे. नविन तंत्रज्ञानाच्या आधारावर शेती कसली जात आहे. त्यामुळे मिळणाऱ्या उत्पादनात वाढ होत आहे. ग्रामीण भागात शेतकऱ्यांना तंत्रज्ञानामुळे वातावरणाची माहिती, शेतमाला मिळणारा हमीभाव याची माहिती आपल्या जवळच्या मोबाईलवर मिळाल्यामुळे प्रत्येक कामाचे नियोजन करणे सोपे झाले आहे. तसेच आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून तयार केलेली शितगृहे यामुळे भाजोपाला, फळे, फुले इत्यादीला जर योग्य बाजार भाव मिळाला नाही तर तो या गृहामध्ये कित्येक दिवस साठवून ठेवू शकतो. आज शेती पीक क्षेत्रामध्ये सेन्सरवरही संशोधन चालू आहे. यामुळे शेतकरी पीकांवरील रोग ओळखू शकेल. अशा तंत्रज्ञानाने ग्रामीण शेतकऱ्यांच्या विकासाला गती मिळाली आहे. तसेच ग्रामीण भागाचा विकास साधायचा असल्यास प्रथमतः खेड्यांचा विकास होणे गरजेचे आहे. त्यासाठी गाव पातळीवर सर्वांनी एकत्र येणे गरजेचे आहे. ज्या पध्दतीने महान समाजसुधारक आणणा हजारे यांनी नविन तंत्रज्ञानाचा वापर करून राळेगणसिध्दी या गावचा विकास केला. त्यांनी आपल्या गावाला एक आदर्श गाव बनविले. त्यांनी आदर्श पुरस्कार मिळवून दिला.

ग्रामीण भागामध्ये शेती करत असतांना पाणी, खते, सुधारित बी-बीयाणे यांचा वापर करून अन्न, धान्यांच्या उत्पादनात अल्प कालावधीत जास्त उत्पादन घेतले जाते. जास्तीत-जास्त उत्पादन निघेल अशा प्रतीचे पीके घेतले जातात. ज्या प्रमाणात प्राप्त जलसिंचन, रासायनिक खते, पीक संरक्षण, कृषि यांत्रिकीकरण, ऊर्जेचा वापर, पत व विपणनाच्या सुविधा, आधारभूत किंमत इत्यादी लागवडी खालील क्षेत्र न वाढविता उत्पादन वाढविले जाते. देशामध्ये कृषि उत्पादन व उत्पादकता वाढवून अन्न, धान्याबाबत स्वयंपूर्णतेचा मार्ग सुकर झाला आहे. आधुनिक तंत्रज्ञानामुळे शेतीमध्ये आधुनिक अवजारे, संकरीत बी-बीयाणे, रासायनिक खते, जंतुनाशकाचा वापर वाढल्याने तशी शेतीत एकापेक्षा अधिक पीक घेता आल्याने श्रमीकांची मागणी वाढली व ग्रामीण भागात कृषि रोजगार पुरवठा अधिक झाल्याने राष्ट्रीय उत्पादनात शेतीचा वाटा 2012-2013 मध्ये 14.02% इतका झाला.

भारतात लोकसंख्या वाढून देखील आधुनिक तंत्रज्ञानामुळे कृषि उत्पादनात वाढ झाल्यामुळे कसलीही टंचाई जाणवली नाही. कृषि उत्पादक शेतकरी व फायदेशीर व्यवसाय असा आत्मविश्वास निर्माण झाला. त्यामुळे कृषि क्षेत्र हे केवळ उदरनिर्वाहाचे साधन नसून व्यापारी उत्पादनाचे क्षेत्र आहे असे समजू लागले. आणि आपला देश अन्न, धान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झाला.

निष्कर्ष :-

- *आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या वापराने शेतीतून उत्पादन घेणे सहजच शक्य झाले.
- *नविन तंत्रज्ञानामुळे संगणकासमोर बसून प्रत्येक जण जगात चाललेल्या घडामोडी आपल्या घरात बसून पाहू लागला.
- *तंत्रज्ञानामुळे कमी क्षेत्रावर जास्त उत्पादन घेणे शक्य झाले.
- *शेतीसाठी लागणाऱ्या पाण्याचे नियोजन करता आले.
- *कृषि उत्पादन घेणे म्हणजे एक फायदेशीर व्यवसाय असा आत्मविश्वास शेतकऱ्यांमध्ये निर्माण करता आला.
- *प्रत्येकाला वातावरणाची माहिती, शेतकऱ्यांना हमी भाव याची माहिती मोबाईलवर पाहता येऊ लागली.
- *यामध्यमातून समाज एकत्र होऊन ग्रामीण विकास करता आला.

संदर्भ :-

- *आर्थिक भूगोल सप्टेंबर-2014 प्रा.जवाहर चौधरी, प्रा.अजिनाथ चौधरी
- *कृषि भूगोल 2008 प्रा.एस.व्ही.दाके, प्रा.डॉ.व्ही.जे.पाटील
- *कृषि भूगोल ऑगस्ट-2004 डॉ.अरूण राजाराम कुंभारे
- *ग्रामीण विकास मराठी विश्वकोष प्रथम आवृत्ती.
- *<http://meanandyatri.blogspot.com>
- *Mr.vikaspedia.in

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 7.139

Indexed (SJIF)



February 2020 Special Issue- 22 Vol. 5

The Role of Women in Global Development

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr. Aqueela Syed Gous

Impact Factor – 7.139

ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

February 2020 Special Issue- 22 Vol. 5

The Role of Women in Global Development

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr. Aqueela Syed Gous

Shaurya Publication, Latur

14. चले जाव आंदोलनाची स्वातंत्र्य चळवळीतील भूमिका प्रा. डॉ. शिवाजी लक्ष्मण नागरगोंजे	35
15. महाराष्ट्रातील महिला सबलीकरण प्रक्रिया प्रा. डॉ. सुखनंदन ढाले	37
16. जागतिक आर्थिक विकासात महिला उद्योजकांची भूमिका डॉ. वाय.बी. चव्हाण	42
17. जागतिक तापमानवाढ आणि पर्यावरणाची झीज : गरज वेळीच सावध होण्याची डॉ. जीवन सुदामराव गंगणे	48
✓18. जल संधारण आणि ग्रामीण विकास प्रा. गोतम नागनाथ येडे	51
19. कृषीक्षेत्र आणि आर्थिक विकास प्रा. डॉ. गोवर्धन खेडकर	53
20. महिला आणि मानवाधिकार एक चिकित्सा प्रा. दुर्गादेवी तुकाराम गुडे	55
21. ब्रिटीशांचे ईस्ट इंडिया कंपनी कालीन व्यापारी धोरण व त्याचे परिणाम : एक अभ्यास प्रा. हनुमंत भारत सरतापे	57
22. परिव्यक्ता स्त्री : एक सामाजिक समस्या डॉ. एस.जे. इंगळे	60
23. स्त्रियांच्या सामाजिक समस्या प्रा. डॉ. बी.एल. म्हस्के	63
24. मुंबई उपनगरातील अनाथ मुलांच्या आरोग्यविषयक समस्या डॉ. पी. पी. लोखंडे, मोहिनी नारायणराव नाबदे	64
25. संवाद - माध्यमे : सामाजिक परिवर्तनाचे साधन. नंदकुमार धोंडिराम कांबळे	68
26. वृद्ध स्त्रियांच्या शारीरिक समस्यांचा एक चिकित्सक अभ्यास डॉ. रागिणी राजेंद्र पाध्ये	70
27. केज व धारूर तालुक्यातील ग्रामीण वस्त्यांची वाढ व वितरणाचा अभ्यास श्री. बन्सो रंगनाथ पाटोळे, डॉ. प्रा. आर. डी. खाकरे	73
28. स्त्री आणि सामाजिक समस्या डॉ. ज्ञानोबा दशरथ फड	77

जल संधारण आणि ग्रामीण विकास

प्र. गौतम नागनाथ पेंडे

भूगोल विभाग, कालिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, शिरूर(का) जि. बीड

सारांश :-

ग्रामीण भागामध्ये ग्राम विकासासाठी स्वयंसेवी संस्थेच्या माध्यमातून जलसंधारण, पर्यावरणीय संरक्षण आणि वाढीव कृषी उत्पादन या सारख्या योजना राबविल्या जातात. ग्रामीण विकासासाठी गाव शिबाराअंतर्गत छोटीछोट्या धरणांच्या बांधकामामुळे पाणी संवर्धन व पर्यावरणीय संवर्धनास मदत होते. त्या माध्यमातून त्या गावातील लोकांचा सहभाग देखील वाढतो. जागतिकीकरण, खाजगीकरण आणि उदारीकरणामुळे ग्रामीण भागाच्या विकासाची उदाहरणे बद्दल पर्यावरणही लक्ष केंद्रित केले आहे. जल संधारण व बांधविद्येची यामुळे मृदा टिकून ठेवण्यास मदत होते. त्यामुळे ग्रामीण भागामध्ये होणारे उत्पादन जास्तीचे व दर्जेदार मिळाले जाते.

मुख्य शब्द :- ग्रामीण विकास, पाणी संवर्धन, कृषी उत्पादन, छोटी धरणे, लोकसहभाग इत्यादी.

प्रस्तावना :-

ग्रामीण विकासासाठी महत्वाचा स्रोत म्हणजे जल आहे. पृथ्वीवर घेणाऱ्या पावसाच्या पाण्याचे बाष्पीभवन होते काही जमीनीवर स्थावर. इन्व्हाडर प्रवाहीत होऊन ते समुद्रामध्ये स्थिरावते. तर काही जमीनीत मुरते. या जलचक्राच्या माध्यमातून मानवी वस्तोस्थान प्रभावित होते. तसेच धरगुती वापर कृषी आणि उद्योगांमध्ये सर्व क्रिया परीपूर्ण करण्यासाठी मूलभूत गरज ही पाण्याची असते. सतत वाढत असणाऱ्या मानवी लोकसंख्येचा दबाव जलस्रोतावर वाढत असल्याने तीव्र ताण पडत आहे. म्हणजेच मानवी विकासात जलसंवर्धन या संकल्पनेला विशेष महत्त्व आहे.

पृथ्वीवर पाण्याची वाटणी ही विषम स्वरूपाची आहे. एकूण पाण्याच्या साठ्यापैकी 97 टक्के पाणी महासागरात खऱ्या पाण्याच्या स्वरूपात आहे व 0.3 टक्के पाणी हे गोड्या पाण्याच्या स्वरूपामध्ये आहे. परंतु 0.3 टक्के पाण्यापैकी 2.1 टक्का पाणी घनस्वरूपात आहे. त्यामुळे मानवास त्याचा विशेष उपयोग होत नाही. 0.9 टक्के पाणी हे नद्या, सरोवरे, विहारी व तळी इत्यादींच्या स्वरूपात आहे की जे मानवास पिण्यायोग्य आहे. आजच्या लोकसंख्या वाढीवर उपलब्ध पाणी संपुष्टात येण्यास वेळ लागणार नाही ही बाब लक्षात घेऊनच संपुक्त राष्ट्रसंघाच्या सिरियाच्या प्रतिनीधीने एक भाकीत केले की, तो दिवस दूर नाही की, ज्या दिवशी येथे पाणी एक पॅब खनिज तेलापेक्षाही महाग होईल. त्यासाठी पाण्यासंबंधी शास्त्रीय विवेचन करण्यास खऱ्या अर्थाने 18 व्या शतकात सुरुवात झाली. फ्रेंच शास्त्रज्ञ पॅरा यांना या शास्त्राचे आद्य प्रवर्तक मानतात. त्यांनी सर्वप्रथम पाऊस व त्याच्या पाण्याच्या वाटपाच्या शास्त्रीय अभ्यास करण्याचा प्रयत्न केला. त्यानंतर हेले या ब्रिटीश शास्त्रज्ञाला निसर्गाच्या जलचक्राचे प्रथमच मुद्देसुद विवेचन केले. सागरी पाण्याची वाफूच जलचक्रास कारणीभूत असून तिचा भूजलाशी संबंध पोहोचतो हे सर्व प्रथम सांगितले. त्यासाठी आजच्या सामाजिक व्यवस्थेने पाण्याच्या व्यवस्थाकडे लक्ष देऊन पाणी संधारण केले पाहिजे. अशा पध्दतीने पृथ्वीच्या पृष्ठभागावर मानवी विकासासाठी पाण्याचे महत्त्व अनन्यसाधारण आहे.

उद्दिष्ट्ये :-

- ग्रामीण विकासासाठी जलसंवर्धन करणे काळजी गरज आहे.
- ग्रामीण विकासासाठी पाण्याचा योग्य वापर करणे.
- ग्रामीण भागातील पाण्याच्या पुनर्वापरावर जास्त भर देणे.
- ग्रामीण विकासासाठी नवीन तंत्रज्ञानाचा वापर करणे.
- महासागर व समूहांचे संवर्धन करून त्याच्याशी संबंधीत गोष्टींचा कायम वापर करणे.
- ग्रामीण भागातील शेतीसाठी मर्यादीत पाण्याचा वापर करून राहिलेले पाणी विविध उद्योगांना वापरणे.
- धरगुती जलसंवर्धन करून ग्रामीण विकास साधणे.
- जलसंधारण आणि ग्रामीण विकास साधण्यासाठी प्रसार माध्यमे व दूरदर्शन वापरणे.

व्याख्या :-

1. उपलब्ध जलसंपत्तीचे संरक्षण, संवर्धन व विकास आणि तिचे उपयुक्त पुर्ण व फायदेशीर व्यवस्थापन म्हणजे जलसंधारण होय.
2. जलसंवर्धनामध्ये स्रोताचा काळजीपूर्वक वापर आणि त्याचे संरक्षण केले जाते. चाशियाय जलउपयुक्ततेचा साठा आणि दर्जाचे संवर्धन केले पाहिजे.

या व्याख्येनुसार पाण्याचे योग्य नियोजन झालेतर ग्रामीण विकास होण्यास निश्चितच हातभार लागेल.

जलसंवर्धन : पाणी वापर

भारताला दरवर्षी पाऊस आणि इतर जलस्रोतातून 3000 अब्ज घनमीटर पाणी मिळते मात्र या पाण्यापैकी केवळ 8 टक्केच पाण्याचा साठा आपण करतो. आपल्या देशातील सर्व जलाशयांची जलसाठ्याची क्षमता 250 अब्ज घनमीटर इतकी आहे. दरवर्षी पृथ्वीच्या पोट्यात 458 अब्ज घनमीटर भूजल साठवले जाते. मात्र दरवर्षी आपण 650 अब्ज पाण्याचा उपसा करतो. भारत हा सर्वात जास्त भूजल उपसा करणारा देश

आहे. आपल्या देशात कृषीसाठी सर्वाधिक पाणी खर्च होते. एकूण पाण्यापैकी 89 टक्के पाणी कृषीसाठी वापरले जाते. त्यापैकी 65 टक्के पूतले असतो. उद्योगासाठी भूजलाचे 80 टक्के पाणी वापरले जाते. त्यासाठी या भूजलाचे संवर्धन कसे करायचे हे आपल्यासमोर सर्वात मोठे आव्हान आहे.

भारतात लोकसंख्या वाढीमुळे पाण्याच्या समस्यांने उग्र रूप धारण केले आहे. भारताची लोकसंख्या जगाच्या लोकसंख्येच्या 15 टक्के आहे पण वर्षातून उपलब्ध होणाऱ्या पाण्याचा पुरवठा मात्र जगातील सर्व नद्यांतून वाहणाऱ्या प्रवाही पाण्याच्या फक्त 5 टक्के आहे. भारतात दरवर्षी 3, 70,00,000 लक्ष घनमीटर पाऊस पडतो. या पर्जन्याची वितरणही अत्यंत विषम स्वरूपात आहे.

महाराष्ट्राचे सरासरी पर्जन्यमान 142 सें.मी. असून या पावसाच्या पाण्याचे राज्यभर वितरणही विषम स्वरूपाचे आढळते. मान्सूनचा पाऊस हा लहरी, अनियमित, अनिश्चित स्वरूपाचा असल्याने महाराष्ट्रात पावसाचे पाणी जास्तीत जास्त साठवून ठेवणे आवश्यक झाले आहे. महाराष्ट्राला मिळणाऱ्या पावसाच्या पाण्यापासून भूपृष्ठावरील पावसाच्या पाण्याची सरासरी उपलब्धता 162 अब्ज घन मीटर आहे. त्यातून 125 अब्ज घनमीटर पाणी वापरासाठी उपलब्ध होते. या वापरात उपलब्ध पाण्यापैकी सुमारे 88.8 टक्के पाणी शेती, जलासिंचनासाठी वापरले जाते. उरलेले 11.2 टक्के पाणी हे बिगर शेती कार्यासाठी (उद्योगांमध्ये, घरगुती वापर, पिण्यासाठी व इतर उपयोगासाठी) वापरले जाते. महाराष्ट्रात पाणी संवर्धन व पाणी वापर हा विषम स्वरूपाचा त्याचे योग्य नियोजन करून पाण्याचा वापर गावपातळीवर सर्व समाज बांधकामांनी एकत्र येऊन काळजीपूर्वक केला पाहिजे व वाया जाणाऱ्या पाण्याचे संवर्धन करण्यासाठी नवीन तंत्रज्ञानाचा वापर करून सर्वांनी प्रयत्न केले पाहिजे. ज्यापध्दने 2016 मध्ये महाराष्ट्रामध्ये अभिनेता अमीर खान आणि त्यांच्या पत्नी किरण राय यांनी चालू केलेल्या पाणी फाऊंडेशनद्वारा ग्रामीण आणि शहरी लोकांना श्रमदानातून पाणी संवर्धन करण्यासाठीचा 1 मे महाराष्ट्र दिन या दिवशी मोठा उपक्रम हाती घेतला. ज्या ज्या गावांनी जास्तीत जास्त पाणी संवर्धन केले आहे व ज्यांचे गाव ग्रामीणविकासाकडे वाटचाल करत आहे या गावांना अमीर खानच्या हाताने "वाटर क्वी" आणि लाखां रुपयांचे बक्षीस दिले जाते. या रुपाने ज्या शहरातील लोकांना श्रमदान करण्याची तोंड इच्छा आहे असे लोक श्रमदान करण्यासाठी ग्रामीण भागात आधी जातात त्यामुळे ग्रामीण आणि शहरी समूह एकत्र आल्यामुळे तेथील त्या भागामध्ये पाणी संवर्धन भरपूर होऊन तेथील डांगराळ भागाचे नदवनात रुपानंतर होऊन तेथील शेतकरी सुखावला जातोय. त्यातूनच ग्रामीण विकास होण्यास फारमोठी मदत होते.

ग्रामीण कृषी जल संवर्धनासाठी उपाययोजना :

- भूपृष्ठावरून वाया जाणाऱ्या पाण्याचे प्रमाण कमी करून हे पाणी अडवले पाहिजे.
- पायऱ्या पायऱ्याच्या शेतीनुसार जलसंवर्धन करणे व डांगराळ भागात चर खोदणे.
- नद्यांपा पाणी उपलब्ध होण्यासाठी जगलक्षेत्र वाढविणे.
- विहीरी व कुपनलिकाच्या सध्दयेवर नियंत्रण आणले पाहिजे.
- छोटछोटी धरणे किंवा शेततलाव बांधली पाहिजे.
- पडणाऱ्या पावसाच्या पाण्याची व जलाशयाचे बाष्पीभवन होणार नाही असे तंत्रज्ञान विकसित झाले पाहिजे.
- मुदंमध्ये पाणी धारण क्षमता वाढविण्यासाठी जमोत एका हंगामात पडोक ठेऊन दुसऱ्या हंगामात पिक घेतले पाहिजे.
- जलासिंचनामध्ये पाण्याचे नुकसान कमी करून विविध नवनाविन सिंचनाच्या सुविधा वापरल्या पाहिजेत.

निष्कर्ष :-

- पाण्याचे योग्य संवर्धन केल्याने ग्रामीण विकास घडवून आणला जातो.
- पाण्याचा व्यवस्थित वापर केल्याने शेतीतील निष्पणारे उत्पादन जास्तोच होते.
- पायऱ्या पायऱ्याची शेती व बांध बांदिस्ती केल्यामुळे शेतीतील उत्पादन जास्त मिळून ग्रामीण विकास होतो.
- पाणी संधारण व शेतीमध्ये नवीन तंत्रज्ञान वापरून ग्रामीण विकास साधला जातो.
- गावपातळीवर सर्वसमूहाच्या माध्यमातून जलसंवर्धन व ग्रामीण विकास साधला आहे.
- आपण जशी पैशाची बचत करतो तशाच पाण्याची बचत करणे आवश्यक आहे हे पेणाऱ्या पिढ्यांना शिकवणे काळजी गत आहे.

संदर्भ :-

1. कृषी भूगोल 2004 डॉ. अरुण राजाराम कुंभारे
2. पर्यावरणीय अध्ययन 2007 अरुण सबदी, पांडुरंग कोळेकर, मोहन जोशी
3. Managing Natural Resource 2014 Harikesh N. Misra
4. कृषी भूगोल 2008 प्रा. एस.बी. डाक, डॉ. बी.जे. पाटील
5. भूगोल 2007 डॉ. प्रकाश सावंत
6. <https://pib.gov.in>
7. <https://vishwakosh.marathi.gov.in>

विद्यावार्ता®



MAH/MUL/03061/2012
ISSN-2319 9318

SPECIAL ISSUE-2020 09

Peer Reviewed International Refereed Research Journal



**शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम व
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद**

यांच्या संयुक्त विद्यमाने

**“राजर्षी शाहू, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर
यांचे योगदान ” या विषयावर
एक दिवसीय राष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद**



प्राचार्य

डॉ.श्रीकृष्ण चंदनशिव

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम
व

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद
यांच्या संयुक्त विद्यमाने

एक दिवसीय आंतरविद्याशाखीय राष्ट्रीय परिषद
२७/०२/२०२०

राजर्षी शाहू महाराज, महात्मा फुले, डॉ.
बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान

समन्वयक

प्रा. तानाजी खोराडे

डॉ. दयानंद सिंदे

डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे

प्राचार्य

डॉ. श्रीकृष्ण चंदनशिव



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

24) म. जोतीराव फुले यांचे शिक्षणविषयक विचार प्रा.डॉ. शिवराज काधे, लातूर	76
25) अंबेडकारी पत्रकारितेची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी प्रा.डॉ. सुदाम फड, नांदेड	79
26) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे सामाजिक विचार प्रा. सुनिता विठ्ठलराव भोसले (गंगधडे), लातूर	80
27) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे भारतीय कृषी विषयीचे विचार प्रा. गौतम नागनाथ पेडे, बीड	82
28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्म काव्ये डॉ. संजय तुकाराम वाघमारे, अकनूज	84
29) जलतप्त : डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर डॉ. कोनेरु बाबुजा तुमलवाड, हडोळती	87
30) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार प्रा. पवार एन. डी., प्रा. रामरत्ने डि. के., बीड	89
31) रामची शब्द म्हााराज यांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रदिप माधवराव एडके, नांदेड	91
32) महात्मा जोतीराव फुले यांचे सामाजिक कार्य प्रो. डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे, भूम	94
33) महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे सामाजिक कार्य प्रा. बोराडे तानाजी रामभाऊ, भूम	98
34) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रदिप माधवराव एडके, नांदेड	101
35) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रदिप माधवराव एडके, नांदेड	104
36) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रदिप माधवराव एडके, नांदेड	108

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

औरंगाबादला मराठवाडा विद्यापीठ स्थापन करण्यत पुढाकार घेतला. इ.स. १९५८ औरंगाबादला मराठवाडा विद्यापीठ स्थापन झाले. याच विद्यापीठाला १४ जाने. १९९४ मध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे नाव देण्यात आले.

निष्कर्ष :

२० व्या शतकातील एक महान विचारवंत, कृतीशील समाजसुधारक म्हणून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा उल्लेख केला जातो. देशात शोषणरहित समाज निर्माण करणे हे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्वप्न होते. माणसाला माणसासारखे जगत याचे ध्येयसंघी प्रयत्न केले. ते निःशस्त्र ज्वालांचे महान नेते होते. भारतीय समाजात जातीप्रभेचे मूळ छोलवर रुजले होते. समाज विधुरलेल्या अवस्थेत जगत होता. असा अवस्थेत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी समाजाला शिकवण्यासाठी या आणि संघर्ष करा असा मूलमंत्र दिला. दलिताना त्यांच्या हक्काची जाणीव करून दिली. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी राजकीय मूल्यांपेक्षा सामाजिक आणि नैतिक मूल्यांना अधिक महत्त्व दिले. कारण त्याशिवाय सामाजिक विकास होणार नाही याची जाणीव आंबेडकरांना होती. अस्पृश्यता नष्ट करणे आणि अस्पृश्यांचा सर्वांगीण विकास करणे हे आंबेडकरांनी आपल्या जीवनाचे ध्येय ठेवले होते. हजारो वर्षांपासून छिन्नपत पडलेल्या भारतीय समाजातील बहुसंख्य घटक त्यांच्या विचारांमूळे प्रवाहात आले. भारतीय घटनेचे शिल्पकार अन् परदलितानांचे प्राण म्हणून अखिल विश्वात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा लौकिक आहे. भारत सरकारने त्यांच्या मृत्यूनंतर भारतरत्न हा सर्वोच्च बहुमानाचा किताब देऊन गौरविले. एक आदर्श समाज व्यवस्थेची निर्मिती करायची असेल तर ते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचारधारेमूळेच शक्य आहे.

संदर्भ सूची :

१. डॉ. एलिनॉर झेलिगट (अनुवाद वसंत मून) - डॉ. आंबेडकरांचे नेतृत्व.
२. प्रा. अशोक नाईकावाडे - भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर.
३. प्रदीप गायकवाड-महाडचा सत्याग्रह आणि मनुस्मृती दहन.
४. शंकरराय चव्हाण - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे पत्रे.
५. मानचंद खंडेला - दलित अधिकार एवं व्यवहार.
६. डॉ. एस.एस. गाडगड, डॉ. अनिल कठारे, डॉ. महारंज वाघमारे - आंबेडकरांचे चळवळीचा इतिहास.
७. डॉ. गीतम पाटील, महाराष्ट्रातील आंबेडकरांचे चळवळीचा इतिहास, (इ.स. १८९१-१९९४).
८. डॉ. एस.एस. गाडगड - महाराष्ट्रातील समाजसुधारक.
९. स्वोकराम्य, एप्रिल २०१९.
१०. www.majhimarathi.com

27

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे भारतातील कृषी विषयीचे विचार

प्रा. गीतम नागनाथ घेडे
भूगोल विभाग,

कालिकादेवी कला, यागिण्य व विज्ञान महाविद्यालय, शिरूर (का.)
ता. शिरूर (का.) जि.बीड.

सारांश :-

भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे घटनेचे शिल्पकार आणि दलितानांचे केवळारी म्हणून सर्व परिचित आहेत. तसेच ग्रामीण समाज आणि शेतोबासातची विचार आगही राज्यकर्ते आणि नियोजनकार व शेतकऱ्यांसाठी मार्गदर्शक ठरणारे आहेत. प्राचीन काळात शेतोबा शोध लागला आणि भारतातील सामाजिक जीवनाला स्वेषे प्राप्त झाले. याच कृषी व्यवस्थेमुळे शिबेर नागरी व कृषी जीवनाची परंपरा निर्माण झाली. मात्र परकीय हल्यांनी ही प्रगत नागरी संस्कृती उध्वस्त केली. सिंधू संस्कृतीची लुट ही भारतीय कृषी प्रधान संस्कृतीला लागलेली आंघोटी होती. पुढे मुस्लिम राजवटीतही शेतो क्षेत्राच्या उन्नतीसाठी फारसे प्रयत्न केले नाहीत. ब्रिटीश काळात शेतकऱ्यांचे शोषण होऊ लागले. रयतचारी पध्दती याच काळात आणल्यात आली. आधुनिक काळात शेतो क्षेत्राला अमोलाय बदल झाले. मात्र शेतकऱ्यांचे शोषण काही बांधले नाही. प्राचीन काळापासून आधुनिक काळापर्यंत होत असलेल्या शेतकऱ्यांच्या शोषणाला कुणोही बाधा पोडली नाही. आधुनिक काळातील समाज सुधारक ज्यांनी भारतीय समाज व्यवस्था व वर्ण, ज्ञान व्यवस्थेचा चिकित्सक अभ्यास केला. त्यात ग्रामसुधारने महात्मा फुले व डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी शेतकऱ्यांच्या शोषणाची दखल घेतली. शेतकऱ्यांच्या शोषणाला वर्ण व्यवस्था कमी जबाबदार आहे, याची चिकित्स करून शेतकऱ्यांचे प्रश्न सोडवण्याचा प्रयत्न या महात्मानांनी केला.

या संशोधनमध्ये डॉ.बाबासाहेबांचे लेखन, संशोधन पत्रे, जर्नेल्स, विविध पुस्तके, शासकीय प्रकाशने, विविध नियतकालिके, दैनिक वर्तमान पत्रांमधील माहोले, सामुदायिक व सहकार शेतो, पारंपरिक संकलन (खोती) पध्दत, सामुदायिक शेतो समाजवाद, वाडणी लोकसंघ, कृषी उत्पादन व औद्योगिकरण इत्यादीमध्ये डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान याचा अभ्यास केलेला आहे.

सूचक शब्द :- शेती पध्दती, कृषी उत्पादन, औद्योगिकरण, खोली पध्दती इत्यादी.

प्रस्तावना :-

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांना सामाजिक समानतेच्या ज्ञानाची शोधाची पध्दती बदलणे म्हणजेच समाज समानतेच्या एकसंधतेला तर शेतीचे धोरण बदलणे असे त्यांची भावना होती. शेतीकऱ्यांची आर्थिक स्थिती जिल्हाकडे कमी होईल, नितकी जलीय भेदभावाचे दोष कमी होईल. शेतीसाठी जमीन व पाणी हे मुख्य घटक आहेत. पाण्याशिवाय शेतीचा विकास अशक्य आहे. शेतीकऱ्यांना शाश्वत पाणी मिळणे गरजेचे आहे. पाण्याशिवाय उत्पादकता वाढविणे व आर्थिक स्तर उंचावणे शक्य नाही. त्यासाठी पाण्याचे नियोजन होणे गरजेचे आहे. तसेच शेतीला उद्योग मानून पायाभूत सुविधा परतून देणे शेतीकऱ्यांचा आर्थिक विकास प्रोत्साहित करील. प्रत्येक शेतीकऱ्याला आजही शेत मालाला रास्त भाव मिळावा म्हणून शासनाशी झगडाचे मार्ग नाहीत. त्यासाठी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या संकल्पनेनुसार जमीन धारणा करणे, सहाकारी व खोली पध्दतीचा प्रतीबंध करणे गरजेचे आहे. सामूहिक शेती प्रणालीवर आधारित शेती महामंडळ, राज्यातील नदी - खोऱ्यांची विभागणी व विकास व जलसंधारण योजने इत्यादी गोष्टी अंमलात आल्या. यानंतरच शासनाने त्या बदलचे कायदे व नियम बनवले. यामार्गे डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे पूर्ण योगदान आहे.

भारतीय स्वातंत्र्योत्तर काळात शेतीकऱ्यांच्या प्रश्नाकडे विशेष लक्ष दिले नाही. त्यामुळे शेतीकरी आत्महत्या, बेरोजगारी, अल्पभूधारण क्षेत्र, पायाभूत सुविधांचा अभाव, जलसंधारण समस्या, पिक प्रारंभ व कृषी उत्पादकता या सर्व समस्यांची उकल करण्यासाठी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार महत्त्वाचे आहेत. आणि याच विचारांची अंमलबजावणी होणे गरजेचे आहे.

उद्दिष्टे :-

- डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे भारतीय कृषी क्षेत्राविषयीचे विचार अभ्यासणे.
- देशातील गरिबी व दरिद्रता संपवून स्वायत्तताची जीवन कसे जगता येईल याचा अभ्यास करणे.
- भारतातील कृषीमधून प्रत्येक व्यक्तीचा आर्थिक विकास करणे साधता येईल याचा विचार करणे.
- भारतातील शेतीच्या समस्यांची तिवृत्त अभ्यासणे.

संशोधन पध्दती :-

या शोध निबंधासाठी दुय्यम स्तराची माहिती वापरलेली आहे. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे कार्य आणि त्यांचे लिखाण हे

वहलवायक स्वरूपाचे आहे. तसेच त्यांच्या विचारांची व्याप्ती पाहता एक मोठी विचारधारा म्हणूनच त्यांच्याकडे पाहिले जाते. कृषी विषयक त्यांचे विचार प्रणाली आणि त्यांचे विचार शेती उत्पादनासाठी व शेती समस्या सोडविण्यासाठी फार मोलाचे आहे.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषी विषयक विचार :-

भारतातील शेती विषयीचे डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार ग्रंथ स्वरूपात उपलब्ध नसले तरी त्यांची भाषणे, संशोधन, चळवळी, वृत्तपत्रे आणि त्यांच्या विचारांच्या आधारे काही मुद्द्यांच्या स्वरूपात मांडता येतील. त्यांनी प्रथमतः ऑक्टोबर १९२७ साली एक.जी.एच. अन्डरसन यांनी मुंबई कायदे मंडळाला अल्पभूधारक मदत विधेयक मांडले. हे विधेयक धरण क्षेत्राचे लहान आकारमान व विस्तारलेले धरणक्षेत्रे या दोन समस्यांवर उपाय सुचविणे यासंबंधी होते. या विधेयकावर स्वाधर मालमत्तेच्या विधानावर नियंत्रण व एकसंध धारण क्षेत्राची विज्ञी हे उपाय सुचविण्यात आले होते. या डॉ.आंबेडकरांनी विस्तारलेल्या व लहान धारण क्षेत्राच्या समस्यांवर सहाकारी शेतीचा उपाय सुचविला. सहाकारी शेतीकऱ्यांच्या जमीनीवरील मालकी हक्क अबाधित राहिले.

महाराष्ट्रातील काही जिल्हामध्ये खोली पध्दती अस्तित्वात होती. त्यामध्ये टाणे, रत्नागिरी, रावराड जिल्हांच्या काही भागात खोली भूधारणा पध्दत चालू होती. या पध्दतीमध्ये शेतसारा गोळा करण्यासाठी शासनाने खोलीची नियुक्ती केली होती. गोळा केलेल्या शेतसा-यामधून काही हिस्सा शासनाकडे जमा होत होता. त्यामुळे ही उद्योगिक रक्कम शासनाकडे जमा केल्यानंतर खोली स्वतःला असलेल्या अधिकाराचा दुरुउपयोग करित आणि शेतीकऱ्यांचे शोषण करित असे. यामुळे लहान शेतीकरी आणि खोली यांच्या संघर्ष निर्माण होत असे. डॉ.आंबेडकरांनी या शेतीकऱ्यांना न्याय मिळवून देण्यासाठी १३ एप्रिल १९२९ रोजी खोली पध्दती बंद करण्याचे प्रस्ताव केले. १७ सप्टेंबर १९३७ रोजी मुंबई कायदे मंडळाला खोली पध्दती रद्द करण्याविषयीचे विधेयक मांडले. शेतीकऱ्यांचे शोषण थांबले पाहिजे. ही मागणी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी केली.

तसेच डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी लहान धारण क्षेत्रे आणि त्यावरील उपाय हा मूलभूत व महत्त्वाचा संशोधन लेख इ.स.१९३८ मध्ये प्रसिध्द केला. यामध्ये भारतातील जमीन धारणा पध्दती, जमीन धारण क्षेत्राचे आकारमान, कृषी उत्पादकता आणि शेती व त्यांच्या समस्या याचे शासक शब्द विश्लेषण केले. कृषी उत्पादकता वाढविण्यासाठी धारण क्षेत्राचा आकार वाढविणे व तुकडे एकत्रीकरण करणे आवश्यक आहे. भारतातील जमीन धारणा पध्दती केवळ आर्थिक दृष्ट्या विचार करण्याची बाब नसून ती सामाजिक दृष्ट्या

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्म कार्य

डॉ. संजय तुकाराम वाघमारे

इतिहास विभाग प्रमुख,

रांकरराज्य मॉडर्न महाविद्यालय, अकनूज

महत्वाची आहे. या जर्मन धारण पध्दतीमुळे भारतातील जाती व्यवस्था व वर्ण व्यवस्था मजबूत होण्यास मदत झाली. जर्मन दाराकडून भूमिहीन वर्गाची सामाजिक व आर्थिक शोषण होत आले.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी शहसकीय समाजवादाचा एक भाग म्हणून सामुदायिक शेतीचे समर्थन केले. आज शासन गट शेतीचे समर्थन करत आहे. सामुदायिक शेतीमुळे जमीनदार, अत्याधुंदारक, कुळ, शेतमजूर, असम्य व आदिवासी पावगांचे शोषण थांबेल. तसेच जातीभेद नष्ट होईल, आणि आर्थिक सामाजिक समता प्रस्थापित होऊन राष्ट्रीय एकात्मतेची भावना रुजवली जाईल. शेती हा शासकीय उद्योग असावा अशी आग्रही मागणी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची होती आणि जमीनोपेची वाटणी करताना जाती पातीचा विचार केला जावू नये. त्यामुळे भूमिहीन कोणीही राहणार नाही. शेती उत्पादनातून शासनाला पोष्य तेल वित्तसा जमा करून उरलेले उत्पादन जमीन करणाऱ्या गावकऱ्यांना सरकारने ठरवून दिलेल्या सहितेनुसार सर्वांनी वाटून घ्यावे.

निष्कर्ष :-

- डॉ. आंबेडकरांच्या मते, एका विशिष्ट आकाराची सहकारी शेत जमीन अस्तित्वात आणण्यास लहान शेतकऱ्यांना त्यांच्या विनाशापासून वाचवित येईल.
- सहकारी शेतीमुळे शेतकऱ्यांच्या जमीनोपरील मालकी हक्क अबाधित राहिल.
- डॉ. आंबेडकरांनी बंरोजगारी, कृषीचे आधुनिकीकरण व कृषीपरील लोकसंग्रहेचा आंतरिक भार कमी करण्यासाठी आंदोलकांच्या उपाय सुचविला.
- डॉ. आंबेडकरांनी सामुदायिक करार शेतीमुळे आर्थिक समानता आणि सामाजिक एकता निर्माण होण्यास मदत होईल व राष्ट्रीय एकात्मतेची भावना वाढीस लागेल.

संदर्भ :-

- शेतकरी भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विरोधीक एप्रिल २०१७
- महाराष्ट्र भूगोलशास्त्र संशोधन पत्रिका Peer Reviewed International Research Journal of Geography जून २०१९
- <http://prahaar.in>
- लोकराज्य - मनिषा पाटनकर, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय महाराष्ट्र राज्य, मुंबई.
- डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर गौरव ग्रंथ - दया पवार (निर्मात्रक) - महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई. २५ डिसेंबर १९९३.

प्रस्तावना

आधुनिक भारताच्या इतिहासात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी आपल्या लाखो अनुयायांसोबत केलेले धर्मोत्तर ही घटना वर्धितांच्या जोडनात ज्ञानोकारी परिवर्तन घडविणारी ठरली आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे १९५६ सालचे बौध्द धर्मातील धर्मोत्तर ही एक सांस्कृतिक क्रांती होती. ही क्रांती समजण्यासाठी भारतीय हिंदू समाजशास्त्र, धर्मशास्त्रे व आधुनिक ज्ञानशास्त्रांच्या आधुनिक सिध्दांताची ओळख असणे ही पूर्व अट आहे. तसेच, ही क्रांती समजून घेण्यासाठी मानवावादी मूल्यांची ओळख व त्याबरोबरच त्याविषयी आदरभावही असावा लागतो. सनातनी समाजाला जाणाऱ्या भारतीय समाजात या धर्मक्रांतीने मोठे बदल घडवून आणले. या क्रान्तीने वर्णव्यवस्था नकार दिला. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांना या क्रांतीमधून बुध्दवादी व मानवावादी समाज निर्माण करावयाचा होता.

डॉ. आंबेडकर यांचे धर्मोत्तर म्हणजे काय? समजवून घेतले पाहिजे. या ठिकाणी धर्मोत्तराचा खरा अर्थ म्हणजे विधापक स्वरुपाचा बदल असून जुने सोडून नव्याचा स्वीकार व उध्दतेकडे होणारा विधापक प्रवास होय! याचा सरळ व साधा अर्थ, नवीन जीवन मार्गाचा

आंबेडकरांचे धर्मोत्तर

धर्मोत्तराची पार्श्वभूमी :

वर्ण व्यवस्थेवर आधारलेल्या हिंदू धर्मात असम्यपांना या समाजव्यवस्थेने मानूसपणे नाकारले होते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी महाडचा सत्याग्रह (१९२७), काळाराम मंदिर सत्याग्रह (१९३०), पुणे येथील फर्ग्युसी मंदिर सत्याग्रह (१९२९), अंबादेवी मंदिर सत्याग्रह, अमरावती (१९२७) या सत्याग्रहांच्या माध्यमातून धार्मिक हिंदू धर्मोत्तर श्रध्दा असणऱ्यांना आपल्या आचार-विचार व तत्त्वज्ञानातील विसंगती दूर करण्याची त्यांनी संधी दिली. पण धर्मश्रध्दा रुढी व परंपरांमधील



Think India (Quarterly Journal)

ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-13

National Conference on

Psychological Contributions in Sustainable Human Development in
Sports, Organizations and Community Health

Date of Conference: December 20-21, 2019,

Organised by Department of Psychology, Physical Education &
Sports and Home Science V.P.S.P.M.S. Arts, Commerce & Science
College, Kannad, Aurangabad, Maharashtra 431103 India



Health Issues and Causes of Women Distress in Beed District

Dr. Chetana V. Dongrikar,
H.O.D. Home Science,
Kalikadevi Arts, Commerce & Science College,
Shirur (ka.) Dist. Beed.
crabarshikar@gmail.com,

Abstract :

An expected 5-6 lakh individuals, including pregnant and lactating ladies, relocate from Beed to different pieces of Maharashtra, and fringe territories of Karnataka, to function as sugar-stick cutters. Consistent dry season and not having numerous roads of work, Beed inhabitants keep on living in contemptible destitution and need to depend on sugar-stick slicing to bring home the bacon. In Maharashtra in most recent three years 4,605 ladies have had their uterus evacuated in Beed its rate is multiple times more. This went under the scanner this May after reports became exposed about the abnormally high pace of hysterectomies among ladies in Beed area, particularly among transient ladies. One might say that, Beed's circumstance is a conspicuous infringement of privileges of ladies living in the region, who are uneducated and in this manner sick prepared to settle on the correct wellbeing decisions.

Key Words: Health, Women, Distress, Beed

Introduction:

In the Beed locale of the Indian province of Maharashtra, women are experiencing an outrageous method for the sake of boosting their profitability. So as to guarantee that they don't miss any days at work, numerous women are paying specialists to evacuate their bellies. In one town, called Vanjarwadi, half of the considerable number of women has had hysterectomies. As per India's Health Minister Eknath Shinde, in excess of 4,500 women have had hysterectomies in the Beed District in the course of the last three years.(1)

New Trends in Teaching Learning Process

Dr. Donglikar Chetana Vishwanathrao

Dept: Home Science

Kalikadevi Arts, Commerce and Science College Shirur (Ka), Dist – Beed

E.mail id: crabarshikar@gmail.com, Mob. No: 9922479099

Abstract: With the advent of new technologies being infused in education, educational leaders are beginning to rethink all facets of data in the classroom. New, innovative methods of data collection are continually being developed, which offer new options for ongoing formative, culminating summative and alternative assessments. As a result of the recent explosion in education-related apps, educators can decipher students' interests, academic passions and "trouble spots" more readily and in real-time to differentiate and fine-tune instruction. Creating a digital literacy curriculum can be based on students' developmental stages, and educators should be cognizant of both the risks (such as distractions) and myriad learning opportunities that technology integration and utilization in the classroom may provide. Digital literacy may encompass simple student tasks, such as creating classroom presentations, or more intricate, collaborative work, such as video clip creations or posting online "mind-maps" using digital tools. In recent years, we have seen an increase in self-directed professional development for educators that includes interactive online webinars, or videos and other content that may be streamed through web browsers. New applications are making it easier for classroom teachers to be both innovative and interactive, and this trend is expected to grow exponentially in the coming years.

Keywords: Innovative Teaching Learning Methods, Implementation of Innovative teaching practices, Social media and Innovative Teaching Learning.

Introduction: Rapid changes of modern world have caused the Higher Education System to face a great variety of challenges. Therefore, training more eager, thoughtful individuals in interdisciplinary fields is required⁽¹⁾. Thus, research and exploration to figure out useful and effective teaching and learning methods are one of the most important necessities of educational systems. Teaching Learning Process is a Combined processes where an educator assesses learning needs, establishes specific learning objectives, develops teaching and learning strategies, implements plan of work and evaluates the outcomes of the instruction. Today the scenario of education is changing world wide and so in India too. As per, National Educational Technology Standards for Students, International Society for Technology in Education; "Effective integration of technology is achieved when students are able to select technology tools to help them obtain information in a timely manner, analyze and synthesize the information, and present it professionally. The technology should become an integral part of how the classroom

functions -- as accessible as all other classroom tools"⁽²⁾

The rapid changes and increased complexity of today's world present new challenges and put new demands on our education system. Research and exploration to figure out useful and effective teaching and learning methods are one of the most important necessities of educational systems⁽³⁾. There has been generally a growing awareness of the necessity to change and improve the preparation of students for productive functioning in the continually changing and highly demanding environment. In confronting this challenge it is necessary to consider the complexity of the education system itself and the multitude of problems that must be addressed. Clearly, no simple, single uniform approach can be applied with the expectation that significant improvements of the system will occur.

Innovative teaching involves using innovative methods and teaching learning materials for the benefit of students⁽⁴⁾. Innovative teaching can involve virtual labs; learning activities based on real-life

policy environment, micro finance can achieve a vast scale and can become a rational movement. The self help group is important in re-strengthening and bringing together of the human race. We may conclude that the economic activities of Self Help Group are quite successful. In this way Self Help Group in Omerga Taluka the very successful development in women empowerment and rural areas.

References:

- (1) Dr.S.P.Gupta, *StatiscalMethods*, Sultan hand and Sons Educational Publisher, New Delhi-2006.
- (2)C.R.Kothari, *Research, methodology method and techniques*, New Age International (P) Ltd, Publishing New Delhi ,Ed-2004.
- (3) Philip Kotler, *Marketing Management*, The Millanium Edition, Prentice Hall of India Private Limited, New Delhi, Ed-2000.

WEBSITE:

- (4) www.google.com
- (5) www.wikipedia.com

JOURNALS

- (6) *Indian journal of social welfare*
- (7) *Kurkshetra*
- (8) *Economic and political weekly magazine.*



04

DIFFERENT ASPECTS AND CHALLENGES OF WOMEN EMPOWERMENT IN INDIA

Dr. Chetana V. Donglikar

H.O.D. Home Science,
Kalikadevi Arts, Commerce & Science College
Shirur (ka.), Dist. Beed

Dr. Rajabhau C. Korde

H.O.D. English,
Kalkadevi Arts, Commerce & Science College
Shirur (ka.), Dist. Beed

ABSTRACT:

In simple terms, empowerment means giving power or authority to an individual. The empowerment of women has been extensively debated and written about all over the world. Empowerment of women means equipping them to be economically independent, self-reliant, in addition to providing positive self-esteem to face any difficult situation. Women should be equipped enough to participate in any development process. The Indian government has already introduced schemes such as the Support to Training and Employment Program (STEP), among others, to facilitate equal employment opportunities for women. Initiatives such as "Beti Bacho, Beti Padhao Yojana" (Save girl child, educate girl child) strive toward generating awareness and improving welfare services meant for women in India. Nongovernmental organizations (NGO) are consistently working toward enabling economic as well as social empowerment of women through various initiatives. Many firms, under their corporate social responsibility initiatives, have also started running women empowerment



NAAC Assessment for Quality Enhancement of Higher Education Institutions

1. Dr. Rajabhau C. Korde, 2. Dr. Chetana V. Donglikar

HoD. English, Kalikadevi Arts, Commerce & Science College, Shirur (ka.) Dist. Beed.

Email id. rajkorde7@gmail.com, Mob. No. - 9881417765

HoD. Home Science, Kalikadevi Arts, Commerce & Science College, Shirur (ka.) Dist. Beed.

Email id. crabarshikar@gmail.com, Mob. No. - 9922479099

Abstract:

The prime agenda of NAAC is to assess institutions of higher learning with objective of helping them to work continuously to improve the quality of education. A good grade through this process to any college or university ensures quality education and let students and their parents trust on college name. Accreditation process ensures that the college/university is meeting the standards of quality in terms of faculty, curriculum, administration, libraries, financial well-being and student services. Such process also helps in receiving financial aid to establish quality assurance. It also helps students to get good job opportunities either through campus placement or facing interview in an esteemed organization. Employers often go through the educational record of the candidate and when they find education from a reputed and government Accredited College, they give positive response. Review every year done for this program bring smile to management of some colleges; while keep some in race of improving their education system and standard.

Key words: Benefits of NAAC Accreditation, Quality enhancement and NAAC

Introduction:

The New Education Policy (1986) emphasized on the recognition and reward of excellence in performance of institutions and checking of sub-standard institutions. Consequently, the Programme of Action (PoA) in 1986 stated, "As a part of its responsibility for the maintenance and promotion of standards of education, the UGC will, to begin with, take the initiative to establish an Accreditation and Assessment Council as an autonomous body". After eight years of continuous and serious deliberations, the UGC established NAAC at Bangalore as a registered autonomous body on 16th September 1994 under the Societies Registration Act of 1860. ⁽¹⁾ The core mission of higher education is to educate, train, undertake, research and provide service to the community. Quality assurance models, as with higher education systems themselves, are designed to fulfil long-term collective needs. The quality assurance agencies are obliged to face enduring questions such as defining and maintaining standards of quality and equally important need to keep their methodologies up-to-date and responsive to shifting societal needs. ⁽²⁾

Why Worry About Quality?

The British Standard Institution (BSI) defines quality as "the totality of features and characteristics of a product or service that bear on its ability to satisfy stated or implied needs" (BSI, 1991). ⁽¹⁾ As teachers, principals, heads of departments and planners and policy makers in education, we may have a question in your mind - why worry about quality? This is because of the following reasons:

- Competition
- Customer Satisfaction
- Funding decisions.
- Encouraging self-improvement initiatives by Institutions.
- State recognition of qualification/ certification of



Challenges and Opportunities of Rural Women Entrepreneurship in India

Dr. Chetana. V. Donglikar

H.O.D. Home Sci Dep.

Kalikadevi College Shirur (ka) Dist-Beed

Mob.No.- 9922479099,

e.mail ID – crabarshikar@gmail.com

Abstract:

Nowadays Rural entrepreneurs are facing many problems due to non availability of primary amenities in rural areas especially in developing countries like India. Financial problems, Lack of education, insufficient technical and conceptual ability at present it is too difficult for the rural entrepreneurs to establish industries in rural areas. The economic development of our country largely depends on the development of rural areas and also the standard of living in its rural mass. Today entrepreneurs are also driven to achieve success in their business along with the qualities inherited by them of a dreamer, leader, manager, innovator, continuous learner, and decision maker and most important is to implement all these qualities into the work. Undoubtedly it looks attractive, fascinating and motivating after listening the stories of the entrepreneurs, but for sure success is not as easy as it looks always. There are certainly some obstacles which we call challenges to overcome by looking forward the prospects to be a successful entrepreneur. In the light of this research paper focuses on the major challenges and problems available in the Indian market by en-cashing the possibilities and prospects of the same to be an able and successful entrepreneur

Keywords: Rural entrepreneurs, Innovator, economic development, Empowerment, Problems, opportunities, Challenges, Self-Fulfillment

Introduction:

Women owned businesses are highly increasing in the economies of almost all countries. The hidden entrepreneurial potentials of women have gradually been changing with the growing sensitivity to the role and economic status in the society. Skill, knowledge and adaptability in business are the main reasons for women to emerge into business ventures. Women Entrepreneur is a person who accepts challenging role to meet her personal needs and become economically independent.

Rural entrepreneurship is defined as "entrepreneurship emerging at village level which can take place in a variety of fields of Endeavour such as industry, business, agriculture and act as a potent factor for overall economic development." An entrepreneur is a person who either creates new combination of production factors such as new products, new methods of production, new markets, finds new sources of supply and new products and new organizational forms or as a person who is necessarily willing to take risks or a person who by exploiting market opportunities, eliminates disequilibrium between aggregate demand and aggregate supply or as one who owns and operates a business.

In simple terms "entrepreneurship" is the act of being an entrepreneur, which can be defined as "one who undertakes innovations, finance and business acumen in an effort to transform innovations into economic goods".

Principles of Rural Entrepreneurship

Some of the basic principles of entrepreneur which can be applied to rural development are:

- Optimum and full utilization of local resources in an entrepreneurial venture by rural population
–Better distributions of the farm produce results in rural prosperity
- Entrepreneurial occupation opportunities for rural population to reduce discrimination and also providing alternative occupations as against the rural migration
- To activate such system as to provide basic „6M“- Manpower, money, materials, management,

Agrarian Crisis In Maharashtra And Its Social Effect

Dr. Chetana Vishwanathrao Donglikar

H.O.D. Home Science, Kalikadevi Arts Commerce
& Science College, Shirur (ka.) Dist. Beed

Abstract:

Agriculture in India is undergoing a structural change leading to a crisis situation. The rate of growth of agricultural output is gradually declining in the recent years. Agriculture provides the principal means of livelihood for over 60% of Indian population. Low and volatile growth rates under the sector and the recent increase of an agrarian crisis in several parts of the country pose a threat not only to national food security but also to the economic well being of the country on the whole. Maharashtra is widely dependent on agriculture; it falls in the zone of high to very high climate sensitivity. Maharashtra is considered 'double exposure' area; the region faces simultaneous challenges of globalization and climate change in the agriculture sector. Recently Maharashtra has faced severe effects of Climate Change, climate data showed a number of extreme weather events such as severe heat waves, floods and cyclones. Over 15,000 farmers have committed suicide in Maharashtra between 2013 and 2018, an RTI data has revealed. Out of the total 15,356 farmer suicides during the six-year period, 396 cases were reported between 1 January 2019 to 28 February 2019. These Agrarian crises had affected the families of farmers and society in various aspects of life.

Key Words: Agrarian Crisis in Maharashtra, Agrarian crisis and women, Agrarian crisis and social problems

Introduction

Seventy per cent of India's population is dependent on agriculture. Farmers toil day and night to feed the country. But these very farmers have been living in crisis for years and nothing substantial has been done to elevate them from their present condition. Last year in 2019, between January 1 and February 28, a total of 396 farmers killed themselves in Maharashtra, i.e. on an average 6 farmers killed themselves every day in the first two months of this year.¹ Farmers commit suicide mainly due to crop failure, damaged crops owing to inclement weather, lack of water for irrigation, drought issues and poor market prices for their produce. Like previous years, this year too several parts of Maharashtra have been facing severe drought-like conditions.^{2,3} Due to the severe drought in various parts of the state and the falling prices of agricultural commodities and a credit crunch, Farmers are forced into a severe crisis. Marathwada and Vidarbha regions are the worst hit, as they face a fourth drought in six years.⁴

Marathwada is the epicenter of India's agrarian crisis. Farmers in this dry region of the western province of Maharashtra have been killing themselves over wilted crops and impossible debts. Erratic rainfall and rising temperatures due to climate change have added to the distress. Smallholder and marginal farmers are the worst-hit. Farmers in this parched land continue to cultivate water-guzzling soybean, cotton and sugarcane, and when landholdings are less than five acres, they have no fallback at all if the crop fails. They have no option but to work as laborers in other people's farms.⁵ Marathwada is home to some 19 million people, according to the 2011 Census, out of which about 73% live in villages and depend mostly on rain-fed agriculture for a livelihood. But unsustainable farming, droughts, water scarcity and rising temperatures are now placing the survival of this entire population at risk.⁶

019/020



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

३२. भारतीय लोकशाहीला प्रबळ करणारा-गांधी विचार | डॉ.भास्कर गायकवाड | १५४
३३. ग्रामोद्योग - काल,आज,उद्या | प्रा.पाटील अनुराधा ल. | १५९
३४. महात्मा गांधी : एक सत्याची प्रयोगशाळा | डॉ.रुदेवाड बी.पी. | १६३
३५. महात्मा गांधीचे सर्वोदय तत्त्वज्ञान एक दृष्टिक्षेप | गौतम गायकवाड | १६५
३६. महात्मा गांधीजींची शैक्षणिक ध्येय एक अवलोकन | डॉ. कालिदास दि.फड | १६८
३७. गांधीवादी विचारांची प्रासंगिकता | डॉ.संतोष कोल्हे | १७१
३८. महात्मा गांधीजींचे भारतीय राष्ट्रीय ... | जयश्री पं. पोटपल्लेवार | १७९
३९. सत्य आणि अहिंसेचा वर्तमान काळात ही उपयोगीतेचा ... | पवार बी.टी. | १८३
४०. म.गांधीजींची ग्रामस्वराज्याची कल्पना आणि ... | डॉ.कुंभारकर के.जी. | १८८
४१. मराठी साहित्याची प्रेरणा : महात्मा गांधी | डॉ. लहू दि. वाघमारे | १९१
४२. गांधीजींचे अहिंसावादी विचार | संजय मोहाडे | १९७
४३. महात्मा गांधीजींचे सत्य आणि अहिंसे संबंधी विचार | नवनाथ ज्ञा. पवळे | २०३
४४. महात्मा गांधी यांचे राष्ट्रीय एकात्मताविषयक विचार .. | सोनवणे जी.एन. | २०५
- ✓ ४५. गांधीजींचे विचार - स्त्रियांसाठी वरदान... | सय्यद अफरोज अहेमद | २०९
४६. म. गांधीचे राजकीय विचार | नितीन शिंदे | २१२
४७. महात्मा गांधी व अस्पृश्यता निर्मुलन | श्रीमती. धुमाळ सीमा का. | २१५
४८. महात्मा गांधीजींचे पर्यावरण विषयक विचार : ... | डॉ.पिसाळ हरिदास जी. | २१८
४९. राष्ट्रपिता म.गांधीचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीत ... | डॉ.आचार्य आर.डी. | २२०
५०. महात्मा गांधीचे आर्थिक विचार :- एक दृष्टिक्षेप | मनिषा धनराज केंद्रे | २२३
५१. महात्मा गांधीजींचे समाजसुधारणा विषयक विचार | अंबुरे ऋषिकेश स. | २२७
५२. परकीयांच्या नरजेतून गांधी मिमासा | डॉ.सदाशिव बा. दंदे | २३२
५३. म. गांधी आणि सत्याग्रह | डॉ. जगदिश देशमुख | २३५
५४. महात्मा गांधीं ग्रामस्वराज्य | डॉ.सौ.ममता म. देशमुख | २४२
५५. महात्मा गांधीजींचे आरोग्य व आहार विषयक विचार | डॉ. अरविंद व.कदम | २४५
५६. गांधी विचार हि काळाची गरज | डॉ. गंगणे आर.व्ही. | २४९
५७. महात्मा गांधीजींच्या 'ग्रामस्वराज्य' संकल्पनेची ... | डॉ.जे.के.भालेराव | २५३
५८. गांधी :काल, आज आणि उद्या | डॉ. शामराव म.लेंडवे | २५७
५९. महात्मा गांधी यांच्या आर्थिक विचारांची... | डॉ. निलेश व्ही. होदलुरकर | २६०
६०. महात्मा गांधींचे शैक्षणिक विचार | डॉ. एस.एम. कोनाळे | २६६
६१. महात्मा गांधी यांच्या विचारांची ... | चिकटे व्यं. दगडू / डॉ. लिगाडे ओ.व्ही. | २६९

गांधीजींचे विचार - स्त्रियांसाठी वरदान...

प्रा. सय्यद अफरोज अहेमद

गृहशास्त्र विभाग, कालिकादेवी वरिष्ठ महाविद्यालय, शिरूर (का)

प्रस्तावणा - भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीत महात्मा गांधीचे स्थान अत्यंत महत्वाचे आहे. भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील गांधीजी ही एकमेव व्यक्ती होय की, जिचे नाव संपुर्ण भारतात व जगातील सर्व देशांतील जनतेपर्यंत जाऊन पोहोचले होते. त्यांच्या व्यक्तिमहत्वाचे अनेक पैलु आहेत. स्वातंत्र्ययोद्धे, समाजसुधारक, शिक्षणतज्ञ, राजकीय विचारवंत, अस्मृश्योद्धारक, धर्मवक्ते, अर्थतज्ञ वगैरे. सत्य, अहिंसा, सत्याग्रहाच्या मार्गाने त्यांनी ब्रिटिश साम्राज्यशाही विरुद्ध दिलेला लढा हा मानव समाजाच्या इतिहासातील अपूर्व लढा मानावा लागेल. ना. गोपाळकृष्ण गोखले यांनी म्हटले होते, "जी माणसे गांधीजींच्या प्रत्यक्ष सहवासात येतात त्यांनाच त्यांच्या व्यक्तिमहत्वाची थोरवी कळून येते."

आपल्या सहवासातील सामान्य माणसांनाही वीर व हुतात्मे बनविण्याची आत्मिक शक्ती त्यांच्या आहे. "बाबा आमटे यांनी गांधीजी - एक युगमुद्रा या लेखात म्हटले की, "गांधीजींचे महात्म्य सांगून गांधी सांगता येणार नाहीत. उद्याच्या पिढ्यांना त्यांची ओळख पटण्यासाठी कदाचित कॉम्प्युटर लागेल. पण काळाच्या भाळावर उमटलेली ही तप्त युगमुद्रा कोणत्याही इतिहासाला पुसून काढता येणार नाही. विज्ञान महर्षी आलबर्ट आईनस्टाईन गांधीजीबद्दल म्हणतो, "हाडामांसाचा हा महामानव आमच्यात होता यावर पुढील पिढ्यांचा विश्वास बसणार नाही" म. गांधीचा जन्म ०२ ऑक्टोबर १८६९ रोजी गुजरातमध्ये पोरबंदर येथे झाला.

*** स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्री मुक्ती चळवळ :-** स्त्रीदास्य विमोचनाच्या क्षेत्रात महात्मा गांधींनी केलेले कार्य भारतीय स्त्रियांसाठी वरदान ठरले. गांधीजींनी स्त्रीमुक्ती व राष्ट्रीय यांची अतिशय कौशल्याने सांगड घातली. स्त्रीच्या अंगी असलेली सुप्त शक्ती जाणून गांधीजींनी स्त्रियांना सामाजिक व राजकीय क्षेत्रात पदार्पण करण्याचे आवाहन केले. शारीरिक सामर्थ्यात स्त्री ही पुरुषापेक्षा दुर्बळ असली, तरी ती अबला नव्हे, या उलट चिकाटी, सत्वप्रवृत्ती आणि नैतिक सामर्थ्य यात स्त्री ही पुरुषापेक्षा श्रेष्ठ आहे, असा गांधीजींचा ठाम विश्वास होता. त्यामुळे गांधीजींनी सर्वांगीण स्त्री स्वातंत्र्याचा पुरस्कार केला. पुरुषाप्रमाणे स्त्रीलाही स्वातंत्र्याचा हक्क असला पाहिजे. पुरुषाच्या बरोबरीने स्त्रीलाही शिक्षण मिळावयास हवे आणि तिच्या पात्रतेनुसार तिला कार्यक्षेत्र मोकळे मिळावे असा गांधीजींचा आग्रह होता. तथापि स्त्रियांच्या उद्वेगलपणाला स्त्री पुरुषाच्या स्वैराचाराला, क्षुल्लक कारणावरून घटस्फोट देण्याच्या

प्रवृत्तीला गांधीजींचा कडा विरोध होता. आपल्या आश्रमात आणि भारताच्या राष्ट्रीय आंदोलनात गांधीजींनी स्त्रियांना पुरुषांच्या बरोबरीने स्थान दिले. गांधीजींच्या नेतृत्वाखाली झालेल्या जन आंदोलनामध्ये भारतीय स्त्रीशक्ती चा अद्भुत आविष्कार दिसून आला. पश्चिमात्य प्रगत राष्ट्रांमध्ये आपल्या हक्कांच्या पुर्ततेसाठी स्त्रियांना चळवळी कराव्या लागल्या, भारतात मात्र ते कार्य गांधीयुगात अगदी सहजपणे घडून आले. भारतीय, स्त्री खऱ्या अर्थाने गांधीयुगातच मुक्त झाली.

*** स्त्री मुक्ती चळवळीच्या प्रमुख मागण्या :** १) समान कामासाठी सामान वेतन स्त्रियांनाही मिळावयास हवे. २) लोकवस्तीच्या व कामाच्या ठिकाणी कामकरी स्त्रिया मुलांसाठी पाळणा घरे असणे आवश्यक आहे. ३) सर्व प्रकारचे शिक्षण मोफत उल्लेख व्हावयास हवे आणि स्त्रियांच्या शिक्षणासाठी जाणीवपूर्वक विशेष प्रयत्न व्हावयास हवे. ४) विद्यार्थीनींचे प्रमाण नौकरी व व्यवसाय करणाऱ्या गरजू स्त्रियांसाठी वर्सातगृहांचो स्थापना करावयास हवी. ५) प्रसार माध्यमे, चित्रपट, जाहिरातील, साहित्य आणि अन्य मनोरंजनाच्या माध्यमातून सातत्याने होणारी स्त्रियांची अवहेलना, हेटाळणी व टिंगलटवाळी बंद करावयास हवी. ६) स्त्रियांवर बलात्कार करणाऱ्या पुरुषांना कठोर शिक्षा ठोठावण्यात यावी. ७) स्त्रियांसाठी स्वातंत्र्य आरोग्य केंद्र स्थापना हवी.

*** गांधी आणि स्त्री शिक्षण :-** ग्रामीण भागात मोठ्या प्रमाणावर तर शहरी भागात देखील बऱ्याच प्रमाणात निरक्षरता होती. समाजातील फार मोठ्या घटकाला शिक्षणाचा साधा गंधही नव्हता. त्यामुळे सावकार, जमीनदार इ. लोक त्याचा गैरफायदा घेत म्हणून गांधीजी म्हणत की शोषित, पीडित, जनतेला यातुन कायमचे मुक्त करावयाचे असल्यास प्रौढ शिक्षण, स्त्री शिक्षणाला पर्याय नाही. नाण्याला दोन बाजू असतात तशाच मानवी जीवनला दोन बाजू आहेत. स्त्री-पुरुष या ऐकमेंकाशिवाय वेगळे राहूच शकत नाही. एका शिवाय दुसऱ्याचे आस्तित्व ही गोष्टच अशक्य आहे. समाजात स्त्रियांची संख्या ही अर्धी आहे आणि जो पर्यंत स्त्रीया शिकणार नाही तोपर्यंत भारतीय समाज विकास करू शकणार नाही. अशिक्षित पणातुनच अनिष्ट रुढी व प्रथा जोर धरतात. प्रौढ शिक्षणाबरोबर स्त्री शिक्षण ही काळाची गरज आहे. असे त्यांचे मत होते.

तसेच त्यांनी विधवा विवाहाचा पुरस्कार केला होता. वेश्यावृत्तीत स्त्रियापेक्षा पुरुषालाच त्यांनी जबाबदार धरले आहे. स्त्रिया मध्ये स्वाभिमान, स्वालंबन, आणि आत्मियता जागृत करण्याचे कार्य गांधीजींनी केले आहे.

*** आरोग्य सुधारणा :-** निरोगी जीवनातुन यशाची सिध्दी साध्य होते. संपन्नता व प्रगती साध्य करायची असल्यास आरोग्यकडे दुर्लक्ष करुन चालणार नाही रोगराईतुन विविध आजारांना निमंत्रण मिळते. अनारोग्यामुळे व्यक्तीला जीवनातील उद्विष्टे साध्य करण्याच्या प्रक्रियेवर विपरीत परिणाम होतो. निरामय आरोग्य साध्य करण्यासाठी त्यांनी आहार-विहार, व्यायाम व निसर्गोपचार याला पर्याय नसल्याचे गांधीजींनी सांगितले.

*** घरगुती उद्योगधंदे :-** गावातील दारिद्र्य घालविण्यासाठी गावातच प्रत्येकाला पुरेसा रोजगार उपलब्ध होणे गरजेचे आहे. कारण बेकारीच्या उच्चाटनातूनच दारिद्र्य निर्मूलन शक्य होईल. ग्रामीण उद्योगांमध्ये मुख्यतः लघु आणि कुटीरोध्योगाला प्राधान्य द्यावे. कारण यामध्ये मालक आणि कामगार बऱ्याच वेळा एकच असतो. ग्रामोद्योगात प्रामुख्याने हाडसरीचे तांदुळ मधु गोळा करणे, खेळणी, चटण्या, पापड, बडा, साबण, हातमाग, हातकागद इ. वस्तु तयार करता येतात असे त्यांचे मत होते. ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांना शेतीशी निगडित व्यवसाय ज्याला आपण ग्रामोद्योग म्हणतो त्यात खादीचे कापड निर्मितीस सहकार्य करणे, ग्रामीण भागात लघु उद्योगाला चालना देऊन बेकारी आणि दारिद्र्य हे प्रश्न त्यातून सुटतील आणि ग्रामीण अर्थव्यवस्था बळकट होईल.

आज आधुनिक युगामध्ये गांधीनी लावलेल्या या रोपाचे वटवृक्षामध्ये रूपांतर झाले आहे. आज खेड्यामध्ये मोठ-मोठ्या प्रमाणात बचतगटाच्या माध्यमातून घरगुती उद्योगांचे प्रशिक्षण देऊन स्त्रियांना स्वावलंबी बनविण्याचे कार्य गांधीजीच्या विचारामुळेच शक्य झाले आहे.

*** निष्कर्ष :-** गांधी युगाला प्रारंभ होताच भारतीय स्त्रियांच्या चौफेर प्रगतीच्या नव्या मनुला सुरुवात झाली. स्त्रीशक्तीची महती अचुक हरेलेल्या गांधीजींनी स्त्रियांमधील न्युनगंडाची भावना नष्ट करून त्यांना सामाजिक व राजकीय कार्याला उद्गोत केले. गांधीजींच्या प्रेरक शिकवणीने स्त्रियांमधील सुप्त शक्ती जागृत होऊन गांधीजींनी आयोजित केलेल्या अहिंसक सत्याग्रहाच्या व असहकाराच्या जन आंदोलनात शकडो स्त्रिया सहभागी झाल्याने स्वदेशी, बहिष्कार, खादीचा प्रचार, सुतकताई, मधुपानविरोधी, प्रचार व निरोधने परदेशी मालाची होळी इ. उपक्रमांमध्ये असंख्य महिला आघाडीवर होत्या. देशबंधु चित्तरंजन दासांच्या पत्नी वसंतीदेवी चित्तरंजन दासांच्या भगिनी, उर्मिलादेवी, इंद्रप्रभा मजुमदार इ. विधायक कार्यासाठी महिला मंडळाची स्थापना केली. अशा अनेक क्रांतीकारक घटना गांधीयुगाला प्रारंभ होतात. म्हणून गांधीजीचे विचार व कार्य भारतीय स्त्रियांसाठी वरदान ठरले.

संदर्भ ग्रंथ :-

- | | | |
|---------------------------|---|---|
| १) विसाच्या शतकातील जग | - | डॉ. धनंजय आचार्य |
| २) भारतीय राजकीय विचारवंत | - | डॉ. दिनकर एस. कळंने |
| ३) आधुनिक भारतीय विचारवंत | - | डॉ. साहेबराव गाठळ |
| ४) भारतीय राजकीय विचारवंत | - | डॉ. व्ही.जी. कुलकर्णी
प्रा. कांत सोमवंशी |
| ५) भारतीय राजकीय विचारवंत | - | डॉ. ज.रा.शिंदे
डॉ. रेखा परळीकर |



Impact Factor - 6.625

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

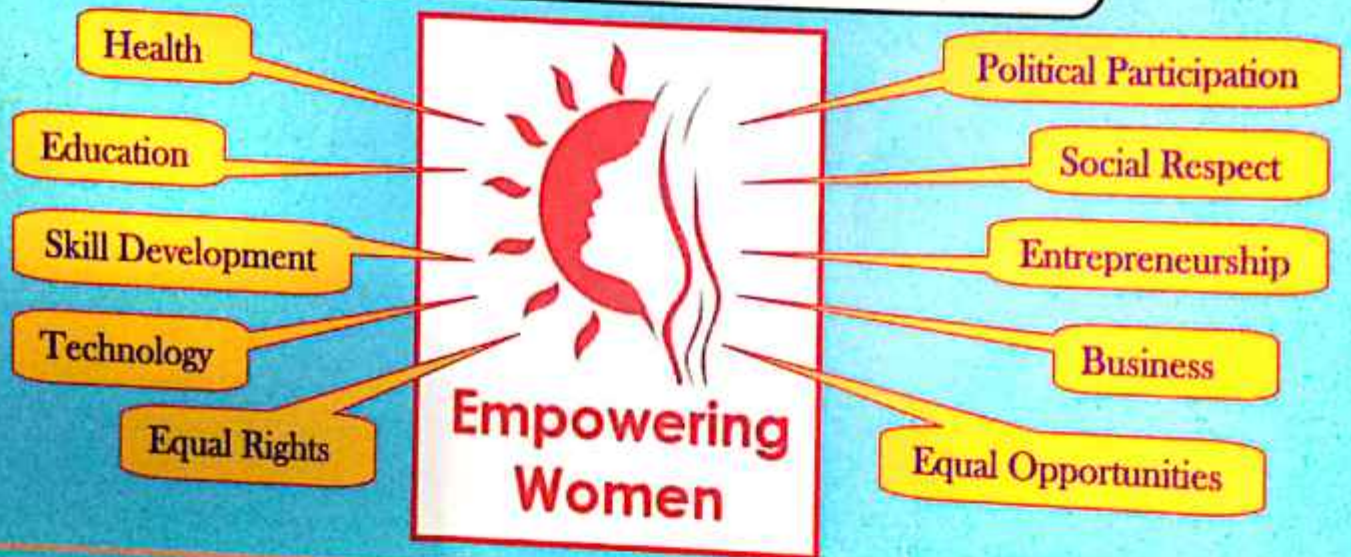
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-2020 Special Issue - 212 (B)

Women Empowerment Through Entrepreneurship & Skill Development



Guest Editor :

Dr. Sopan Nimhore

Principal,

Arts, Commerce & Science College,
Ashti, Dist.- Beed [M.S.] India

Chief Editor

Dr. Bhanraj T. Dhangar (Yeola)

Executive Editor:

Prof. Shubhangi Khude

Coordinator, Vishakha Sammittee,
Arts, Commerce & Science College,
Ashti, Dist.- Beed [M.S.] India



This journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



For Details Visit To : www.researchjourney.com



31	Women Empowerment through Skills Development	Niwrutti Nanwate & Prof. B.K.Bangar
32	Analysis of Women Participation in Indian Agriculture	Dr. Mangal Tekade
33	Challenges for Social Entrepreneurship	Prof. Amar Shaikh
34	Government Scheme for Women Skill Development	Mr. Sandip Aote
35	Women Empowerment : Need of the Time	Dr. Bharat Gugane & Dr. Subhash Savant
36	A Study of Women Empowerment in India	Dr. Pramod Nile
37	Financial Inclusion and Women Empowerment : A Key for Economic Development	Mr. Anchit Jhamb & Ms. Swati Aggarwal
38	Deserted Women Empowerment : A Need of Society	Dr. Gajanan Mudholkar
39	Challenges and Opportunities in Skill Development Program for Women - With Special Reference of Sports	Dr. Prashant Meher
40	Adoption of Farm Women Regarding Health and Nutritional Practices	S. P. Dhoke & Y. B. Shambharkar & D. D. Aglawe
41	आजकी कामकाजी महिलाएँ और उनकी समस्याएँ	डॉ. मदिता शंभ
42	महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता	डॉ. गुनावराव मदनिक
43	साहित्य और समाज में महिला सशक्तीकरण विमर्श	प्रा. जयनुल्तावान पट्टण
44	कामकाजी नारी की समस्याएँ	प्रा. शुभांगी घुटे
45	महिला सशक्तीकरण और उनके अधिकार	डॉ. सखाराम वांडे
46	कामकाजी महिलाओं की समस्या	प्रा. मुनिता वांडे
47	महिला सशक्तीकरण और उनके लाभ	डॉ. राजाराम मोनचंडे
48	महिला सशक्तीकरण और महिला विकास	प्रा. रमेश भाकरकर
49	भारतीय कृषि उद्योग में महिला का योगदान तथा उसकी स्थिती	प्रा. ओमप्रकाश शंकर
50	महिला सशक्तीकरण : समाज की वास्तविकता और जरूरत	प्रा. सय्यद अफरोज
51	महिला सशक्तीकरण में स्वयंमहायता समूह की भूमिका	डॉ. संजय कांबडे
52	महिला सशक्तीकरण का इतिहास	एम. ई. भोमले
53	नारी सशक्तीकरण की रुकावटें और भारत सरकार की योजनाएँ	प्रा. श्रीमती एच. टी. पोदकुं
54	स्वयं महायता समूहोंद्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण : एक अध्ययन	डॉ. प्रमिना भगत
55	स्वयं महायता समूह और महिला सशक्तीकरण	डॉ. राजेश नायधनी
56	महिला सशक्तीकरण	प्रा. पोपट जाधव
57	महिला सशक्तीकरण के लिए भारत की भूमिका	डॉ. व्ही. वी. गव्हाणे
58	कन्या की भ्रूणहत्या की पार्श्वभूमि और परिणाम	डॉ. एम. एम. कांबडे
59	कामकाजी स्त्रीयों की समस्या	डॉ. किशोर चौधरी

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for the originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without the permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhanraj Sonawane Education Trust, Yeola, Dist. Solapur, Maharashtra, India.
Email: swatidhanraj@rediffmail.com



महिला सशक्तिकरण : समाज की वास्तविकता और जरूरत

प्रा. सय्यद अफरोज अहेमद

कालिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञान

महाविद्यालय, शिकर का. जि. बीड

afaroj.beed@gmail.com

मो. नं. :- ९८२२७२७६२८

महिला सशक्तिकरण के बारे में जानने पहले हमें ये समझ लेना चाहिए कि हम 'सशक्तिकरण' से क्या समझते हैं। 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसमें उसमें ये योग्यता आ जाती है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हों। अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फैसले लेने के लिये महिलाओं को अधिकार देना ही महिला सशक्तिकरण है। परिवार और समाज की हदों को पीछे छोड़ने के द्वारा फैसले, अधिकार, विचार, दिमाग आदि सभी पहलुओं से महिलाओं को अधिकार देना उन्हें स्वतंत्र बनाने के लिये है। समाज में सभी क्षेत्रों में पुरुष और महिला दोनों के लिये बराबरी में लाना होगा। देश, समाज या समाज किसी के लिये भी होगा। देश को पूरी तरह से विकसित बनाने तथा विकास के लक्ष्य को पाने के लिये एक जरूरी हथियार के रूप में है। महिला सशक्तिकरण भारतीय संविधान के प्राक्धान के अनुसार, पुरुषों की तरह सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबर अधिकार देने के लिये कानूनी स्थिति है। मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समर्थ बनाना है, क्योंकि एक सशक्त महिला अपने बच्चों के भविष्य को बनाने के साथ ही देश का भविष्य का सुनिश्चित करती है।

महिला सशक्तिकरण :-

लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इसे हर एक परिवार में बचपन में प्रचारित व प्रसारित करना चाहिये। ये जरूरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हों। एक बार शिक्षा की शुरुवात बचपन में घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरूरत है, जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, अशुद्ध और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिये महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिये सरकार कई सारे कदम उठा रही है।

मनुष्य, आर्थिक या प्यावरण से संबंधित कोई भी छोटी या बड़ी समस्या का बेहतर उपाय महिला सशक्तिकरण है। पिछले कुछ वर्षों में हमें महिला सशक्तिकरण का फायदा मिल रहा है। महिलाएँ अपने स्वास्थ्य, शिक्षा तथा परिवार, देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी को लेकर ज्यादा सचेत रहती हैं। वो हर क्षेत्र में प्रमुखता से भाग लेती हैं और अपनी रुचि प्रदर्शित करती हैं। अतः कई वर्षों के संघर्ष के बाद सही राह पर चलने के लिये उन्हें उनका अधिकार मिल रहा है।

महिला सशक्तिकरण क्या है?

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इसमें महिलाएँ शक्तिशाली बनती हैं, जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं और समाज में अच्छे से



रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की क्यों जरूरत है?

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत एक पुरुषप्रधान समाज है, जहाँ पुरुष का हर क्षेत्र मंक दखल है और महिलाएँ सिर्फ घर-परिवार की जिम्मेदारी उठाती हैं। साथ ही उनपर कई पाबंदियाँ भी होती हैं। भारत की लगभग ५० प्रतिशत आबादी केवल महिलाओं की है। मतलब, पूरे देश के विकास के लिये इस आधी आबादी की जरूरत है। जो अभी भी सशक्त नहीं है। कई सामाजिक प्रतिबंधों से बंधी हुई है। ऐसी स्थिति में हम नहीं कह सकते कि भविष्य में बिना हमारी आधी आबादी को मजबूत किये हमारा देश विकसित हो पायेगा। अगर हमें अपने देश को विकसित बनाना है तो ये जरूरी है कि सरकार, पुरुष और महिलाओं द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाये।

महिला सशक्तिकरण की जरूरत इसलिये पडी क्योंकि प्राचीन समय से भारत में लैंगिक असमानता थी और पुरुषप्रधान समाज था। महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया गया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा हुई। परिवार और समाज में भेदभाव भी किया गया ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पडता है। महालाओं के लिये प्राचीन काल से समाज में चले आ रहे गलत और पुराने चलन को नये रिती-रिवाजों और परंपरा में ढाल दिया गया था। भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिए माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में महिला देवियों को पूजने की परंपरा है लेकिन इसका ये कतई मतलब नहीं कि केवल महिलाओं को पूजने पर से देश के विकास की जरूरत पूरी हो जायेगी। आज जरूरत है कि देश की आधी आबादी यानि महिलाओं का हर क्षेत्र में सशक्तिकरण किया जाए जो देश के विकास का आधार बनेगी।

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता :-

प्राचीन काल के अपेक्षा मध्य काल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आयी, हालांकि आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएँ कई सारे महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पद पर पदरथ हैं फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएँ आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं।

शिक्षा के मामले में भी भारत में महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा काफी पीछे हैं। भारत में पुरुषों की शिक्षा दर ८१.३ प्रतिशत है जबकि महिलाओं की शिक्षा दर मात्र ६०.६ प्रतिशत है। हमारे देश में कई सारी महिलाओं को शिक्षा की सुविधा नहीं उपलब्ध है और अगर वह पढती भी हैं तो कुछ ही कक्षाओं के बाद ही अपनी ब्याई को छोड देती हैं। भारत के शहरी क्षेत्र की महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के अपेक्षा अधिक रोजगारशौल हैं। आकडों के अनुसार भारत के शहरों में साफ्टवेयर इंडस्ट्री में लगभग ३० प्रतिशत महिलाएँ कार्य करती हैं, वही ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग ९० फीसदी महिलाएँ मुख्यतः कृषी और इससे जुडे क्षेत्रों में दैनिक मजदूरी करती हैं।

अब वर्ष २०२० के आगमन में काफी कम समय बना हुआ है और इसी के साथ भारत को सबसे तेज से तरक्की करने वाले देश का दर्जा मिला हुआ है। जिससे हमारा देश गले पर काफी तेजी और उम्माह के साथ आगे बढ़ता जा रहा है और हो सकता है हम जल्द ही इस लक्ष्य को पा भी लें, लेकिन इसे हम तभी



बर्करार रख सकते हैं, जब हम लैंगिक असमानता को दूर कर पाये और महिलाओं के लिए भी पुरुषों के तरह समान शिक्षा, नरकवी और भुगतान सुनिश्चित कर सके।

सरकार द्वारा संवैधानिक और कानूनी अधिकार :-

सरकार द्वारा कई सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाये गये हैं। कानूनी अधिकार के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये संसद द्वारा पास किये गये कुछ अधिनियम हैं— एक बराबर पारिश्रमिक एक्ट १९७६, दहेज रोक अधिनियम १९६१, अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम १९५६, मेडिकल टर्मनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट १९८७, बाल विवाह रोकथाम एक्ट २००६, लिंग परीक्षण तकनीक एक्ट १९९४, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट २०१३।

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार की भूमिका :-

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलायी जाती हैं। इनमें से कई सारी योजनाएं, रोजगार, कृषि और स्वास्थ्य जैसे चीजों के लिए चलायी जाती हैं। इन योजनाएं का गठन भारतीय महिलाओं के परिस्थिति को देखते हुए किया गया है ताकि समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके। इनमें से कुछ मुख्य योजनाएं मनरेगा, सर्व शिक्षा अभियान, जननी सुरक्षा योजना (मातृ मृत्यु दर कम करने के लिए चलायी जाने वाली योजना) आदि हैं।

महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलायी जा रही हैं। इन्हें में से कुछ मुख्य योजनाओं के विषय में निचे बताया गया है।

१) बेटे बचाओं बेटे पढाओं योजना

यह योजना कन्या भ्रणहत्या और कन्या शिक्षा को ध्यान में रखकर बनायी गयी है। इसके अंतर्गत लड़कियों के बेहतरी के लिए योजना बनाकर और उन्हें आर्थिक सहायता देकर लोगों के सोच को बदलने का कार्य किया जा रहा है।

२) महिला हल्पलाइन योजना

उस योजना के अंतर्गत महिलाओं को २४ घंटे इमरजेंसी सहायता सेवा प्रदान की जाती है, महिलाएं अपने विरुद्ध होने वाली किसी तरह की भी हिंसा या अपराध की शिकायत इस नंबर पर कर सकती हैं। इस योजना के तरह पूरे देश भर में १८१ नंबर को डायल करके महिलाएं अपनी शिकायतें दर्ज करा सकती हैं।

३) उज्वला योजना

यह योजना महिलाओं को तस्करी और यौन शोषण से बचाने के लिए की जाती है। इसके साथ ही इसके अंतर्गत उनके पुर्वास और कल्याण के लिए भी कार्य किया जाता है।

४) महिला शक्ति केंद्र

यह योजना समुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत छात्रों और पेशेवर व्यक्तियों जैसे सामुदायिक स्वयंसेवक ग्रामीण महिलाओं को उनके अधिकारों और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

५) पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण

२००९ में भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पंचायती राज संस्थानों में ५० फीसदी महिला आरक्षण की घोषणा की, सरकार के इस कार्य के द्वारा बिहार, झारखंड, उड़ीसा और आंध्र प्रदेश के साथ ही दूसरे अन्य प्रदेशों में भी भागे मात्रा में महिलाएं ग्राम पंचायत अध्यक्ष चुनी गयीं।



६) सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्पॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमन (स्टेप)

स्टेप योजना के अंतर्गत महिलाओं के कौशल को निखारने का कार्य किया जाता है ताकि उन्हें भी रोजगार मिल सके या फिर वह स्वयं का रोजगार शुरू कर सकें। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई मॉडल क्षेत्रों के कार्य जैसे कि कृषि, यागवानी, हथकरण मिलाई और मच्छीपालन आदि के विषयों में महिलाओं को शिक्षित किया जाता है।

निष्कर्ष :-

यदि हम सही अर्थों में महिला सशक्तिकरण करना चाहते हैं तो, पुरुष श्रमता और पितृसत्तात्मक मानसिकता का उन्मूलन किया जाना बेहद जरूरी है। इसके लिए बिना किसी भेदभाव के शिक्षा एवं रोजगार के क्षेत्रों में महिलाओं को समान अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। महिलाओं के प्रति समाज में व्यावहारिक परिवर्तन लाए बिना केवल उन्हें कानूनी और संवैधानिक अधिकार प्रदान करना अपर्याप्त ही साबित होगा।

- बिना महिला सशक्तिकरण के हम अन्याय, लिंग-भेद और असमानताओं को दूर नहीं कर सकते।
- अगर महिलाएं सशक्त नहीं हैं तो उन्हें जीवन में सुरक्षा और संरक्षण का आनंद प्राप्त नहीं हो सकता।
- इससे उन्हें कार्य करने के लिए सुरक्षित वातावरण प्राप्त होता है।
- महिलाओं के शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ सशक्तिकरण एक औजार के रूप में कार्य करता है।
- यह महिलाओं के लिए पर्याप्त कानूनी संरक्षण प्रदान करने का एक बड़ा साधन है।
- अगर सामाजिक और आर्थिक रूप से महिलाएं सशक्त नहीं की गईं तो वे अपनी खुद की पहचान का विकास नहीं कर पाएंगी।
- अगर महिलाओं को रोजगार प्रदान नहीं किया तो वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा क्योंकि महिलाएं दुनिया की आबादी का एक विशाल हिस्सा हैं।
- महिलाएं बेहद रचनात्मक और युद्धोत्तम होती हैं और इस वजह से सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में उनका योगदान प्राप्त करना जरूरी है।
- एक न्यायसंगत एवं प्रगतिशील समाज के लिए महिलाओं को कार्य के समान अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :-

१. ए.यु. मुलाणी : महिला स्वयंसहाय्यता गट २००६,
२. आधुनिक हिन्दी प्रबन्ध काव्यों में मिथक और नारी, डॉ. शीला आहुजा
३. निर्मल वर्मा के साहित्य में नारी- डॉ. ठाकुर जियसिंह, समता प्रकाशन कानपुर
४. महिला सशक्तिकरण चुनौतियाँ संभावनाएँ - आशुतोष व्यास
५. महिला बचत गट - स्वयंसहाय्यता बचत गट मार्गदर्शिका, गोडता फाउंडेशन- गविंद्र म. काशीले
६. महिला सशक्तिकरण : नितो कानून एवं योजनाएँ - डॉ. मिता गुर्जर



MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue August 2019 **Vidyawarta**[®]

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

**Bharatiya Shikshan Prasarak Sanstha's
Kholeshwar Mahavidyalaya, Ambajogai**

Is Organized One day National Conference in Association with
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.

On

**Recent Trends and Issues
in Economics, Commerce
& Management in India**



Editor's

Assit. Prof. Subhash S. Patekar

Dr. Arvind P. Rayalwar

द गॅजेट ऑफ इंडिया, १८ जुलै २०१८ को प्रकाशित किये गये राजपत्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोगने शिक्षकों और अन्य शिक्षक कर्मचारियों को न्यूनतम अर्हता के बारे में विनियम जारी किया है, जिसमें पृष्ठ संख्या १०५ पर peer reviewed जर्नल्स API स्कोअर या प्रमोशन के लिए मान्य किये जाएंगे ऐसा लिखा है । ये राजपत्र निम्न लिंक पर अक्लेबल है कृपया डाउनलोड करके देखिये।

https://www.ugc.ac.in/pdfnews/4033931_UGC-Regulation_min_Qualification_Jul2018.pdf

More Details

https://www.youtube.com/watch?v=g_fzq2Mi7yM&t=4s

रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99

REGD. NO. D. L.-33004/99



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 271]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 18, 2018/आषाढ़ 27, 1940

No. 271]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 18, 2018/ASHADHA 27, 1940

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 जुलाई, 2018

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में शिक्षकों और अन्य शैक्षिक कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु न्यूनतम अर्हता तथा उच्चतर शिक्षा में मानकों के रखरखाव हेतु अन्य उपाय संबंधी विनियम, 2018

New Trends in Banking and Financial Services in India

Mr. Dnyaneshwar Ankushrao Yewale
Head, Dept. of Commerce,
Kalikadevi Arts, Commerce and Science
College Shirur (Kasar),
Tq. Shirur, kasar, Dist. Beed

present article focuses on the benefits and challenges of changing Banking trends and to study the performance of existing technology based products and services being offered by banks.

Keyword: Banking, Financial, Services, Research, Development

Introduction

The Banking industry and financial institutions are vital sectors of any economy. Development of these two sections of the economy can impact the growth of the country in an incredible way. In the era of "Digital India", the banking and financial services in India have undergone a massive evolution and the phenomenon continues. The change can be attributed to various components like new regulatory policies and customer expectations. However, the one element that has affected banking and financial services the most is technological advancement. The emergence of innovative financial technology has revolutionized financial services in India as well as the banking sector. It has resulted in the introduction and advancement of several technology trends that have contributed to the radical transformation, growth, and advancement of these industries. The alliance between the innovative technologies of the financial sector and banking services has changed the conventional systems of handling money, and this collaboration is expected to create a massive shift with emerging trends in financial services.

The rise of Fintech companies, internet banking, and mobile banking are some of the classic examples of emerging trends in the banking sector and financial services. In addition to the betterment of traditional systems, these banking and financial services industry trends are a few steps toward creating a cashless society, complete digital transformation, and the rise of Fintech. In this time of change, the only thing that is constant is change.

Objectives

Abstract

Today banking is known as pioneering banking. India is having a well developed banking system with different classes of banks: public sector banks, foreign banks, private sector banks, regional rural banks, co-operative banks. The use of technology has brought a revolution in the working style of the banks. Information Technology has had a positive impact on substitutes for traditional services. With networking and interconnection new challenges are arising related to security privacy and confidentiality to transactions. The study identifies challenges and opportunities for Indian banking. The RBI's most important goal is to maintain monetary stability. Reducing inflation has been one of the most important goals for some time. There has been considerable innovation and diversification in the business of major banks. Some of them have engaged in the areas of consumer credit, credit cards, merchant banking, internet and phone banking, leasing, mutual funds etc. With the emergence of Privatization, Globalization and Liberalization in India, Banks are focusing on Research and Development and applying various innovative ideas and technology. There is a close relationship between the development of banking sector and the new innovations in technology and Electronic data processing. The

To Study Trends in Banking and Financial Services in India

To Study concept of digitization and mobile banking

Research Methodology:

The present review paper is based on the Secondary data. It analyses the available literature on Banking technology and various existing and upcoming innovative products offered by banks in India. The Secondary data pertaining to the study was obtained from the various journals, books, newspapers and websites of the concerned Banks.

Trends in Banking and Financial Services in India That Are Changing the Entire Scenario

1. Digitization:

With the rapid growth of digital technology, it became imperative for banking and financial services in India to keep up with the changes and innovate digital solutions for the tech-savvy customers. Besides the financial institutions, insurance, healthcare, retail, trade, and commerce are some of the major industries that are experiencing the enormous digital shift. To stay competitive, it is necessary for the banking and financial industry to take the leap on the digital bandwagon.

In India, it all began not earlier than the 1980s when the banking sector introduced the use of information technology to perform basic functions like customer service, book-keeping, and auditing. Soon, Core Banking Solutions were adopted to enhance customer experience. However, the transformation began in the 1990s during the time of liberalization, when the Indian economy exposed itself to the global market. The banking sector opened itself for private and international banks which is the prime reason for technological changes in the banking sector. Today, banks and financial institutions have benefitted in many ways by adopting newer technologies. The shift from conventional to convenience banking is incredible. Modern trends in banking system make it easier, simpler,

paperless, signature less and branchless with various features like IMPS (Immediate Payment Service), RTGS (Real Time Gross Settlement), NEFT (National Electronic Funds Transfer), Online Banking, and Telebanking. Digitization has created the comfort of "anywhere and anytime banking." It has resulted in the reduced cost of various banking procedures, improved revenue generation, and reduced human error. Along with increased customer satisfaction, it has enabled the customers creating personalized solutions for their investment plans and improves the overall banking experience.

2. Enhanced Mobile Banking:

Mobile banking is one of the most dominant current trends in banking systems. As per the definition, it is the use of a Smartphone to perform various banking procedures like checking account balance, fund transfer, and bill payments, without the need of visiting the branch. This trend has taken over the traditional banking systems. In the coming years, mobile banking is expected to become even more efficient and effortless to keep up with the customer demands. Mobile banking future trends hint at the acquisition of IoT and Voice-Enabled Payment Services to become the reality of tomorrow. These voice-enabled services can be found in smart televisions, smart cars, smart homes, and smart everything. Top industry leaders are collaborating to adopt IoT-connected networks to create mobile banking technologies that require users' voice to operate

3. UPI (Unified Payments Interface):

UPI or Unified Payments Interface has changed the way payments are made. It is a real-time payment system that enables instant inter-bank transactions with the use of a mobile platform. In India, this payment system is considered the future of retail banking. It is one of the fastest and most secure payment gateways that is developed by National Payments Corporation of India and regulated by the Reserve Bank of India. The year 2016 saw

the launch of this revolutionary transactions system. This system makes funds transfer available 24 hours, 365 days unlike other internet banking systems. There are approximately 39 apps and more than 50 banks supporting the transaction system. In the post-demonetization India, this system played a significant role. In the future, with the help of UPI, banking is expected to become more "open."

4. Block Chain:

Block chain is the new kid on the block and the latest buzzword. The technology that works on the principles of computer science, data structures and cryptography and is the core component of crypto currency, is said to be the future of banking and financial services globally. Block chain uses technology to create blocks to process, verify and record transactions, without the ability to modify it. NITI Aayog is creating India Chain, India's largest block chain network, which is expected to revolutionize several industries, reduce the chances of fraud, enhance transparency, speed up the transaction process, lower human intervention and create an unhackable database. Several aspects of banking and financial services like payments, clearance and settlement systems, stock exchanges and share markets, trade finance, and lending are predicted to be impacted. With its strenuous design, blockchain technology is a force to be reckoned with.

5. Artificial Intelligence Robots:

Several private and nationalized banks in India have started to adopt chatbots or Artificial intelligence robots for assistance in customer support services. For now, the use of this technology is at a nascent stage and evolution of these chatbots is not too far away. Usage of chatbots is among the many emerging trends in the Indian banking sector that is expected to grow.

More chatbots with the higher level of intelligence are forecasted to be adopted by the banks and financial institutions for improved

customer interaction personalized solutions. The technology will alleviate the chances of human error and create accurate solutions for the customers. Also, it can recognize fraudulent behavior, collate surveys and feedback and assist in financial decisions.

6. The rise of Fintech Companies:

Previously, banks considered Fintech companies a disrupting force. However, with the changing trends in the financial services sector in India, fintech companies have become an important part of the sector. The industry has emerged as a significant part of the ecosystem. With the use of financial technology, these companies aim to surpass the traditional methods of finance. In the past few decades, massive investment has been made in these companies and it has emerged into a multi-billion-dollar industry globally. Fintech companies and fintech apps have changed the way financial solutions are provided to the customers. Besides easy access to financial services, fintech companies have led to a massive improvement in services, customer experience, and reduced the price paid. In India, the dynamic transformation has been brought upon by several important elements like fintech startups, established financial institutions, initiatives like "Start-Up India" by Government of India, incubators, investors, and accelerators. According to a report by National Association of Software and Services Companies (NASSCOM), the fintech services market is expected to grow by 1.7 times into an \$8 billion market by 2020.

7. Digital-Only Banks:

It is a recent trend in the Indian financial system and cannot be ignored. With the entire banking and financial services industry jumping to digital channels, digital-only banks have emerged to create paperless and branchless banking systems. This is a new breed of banking institutions that are overtaking the traditional models rapidly. These banks provide banking facilities only through various IT platforms that

can be accessed on mobile, computers, and tablets. It provides most of the basic services in the most simplified manner and gives access to real-time data. The growing popularity of these banks is said to be a real threat to traditional banks.

ICICI Pockets is India's first digital-only bank. These banks are attractive to the customers because of their cost-effective operating models. At the same time, though virtually, they provide high-speed banking services at very low transaction fees. In today's fast lane life, these banks suit the customer needs because they alleviate the need of visiting the bank and standing in a queue.

8. Cloud Banking:

Cloud technology has taken the world by storm. It seems the technology will soon find its way in the banking and financial services sector in India. Cloud computing will improve and organize banking and financial activities. Use of cloud-based technology means improved flexibility and scalability, increased efficiency, easier integration of newer technologies and applications, faster services and solutions, and improved data security. In addition, the banks will not have to invest in expensive hardware and software as updating the information is easier on cloud-based models.

9. Biometrics:

Essentially for security reasons, a Biometric Authentication system is changing the national identity policies and the impact is expected to be widespread. Banking and financial services are just one of the many other industries that will be experiencing the impact. With a combination of encryption technology and OTPs, biometric authentication is forecasted to create a highly-secure database protecting it from leaks and hackers attempts. Financial services in India are exploring the potential of this powerful technology to ensure sophisticated security to customers' account and capital.

10. Wearables:

With smart watch technology, the banking and financial services technology is aiming to create wearables for retail banking customers and provide more control and easy access to the data. Wearable have changed the way we perform daily activities. Therefore, this technology is anticipated to be the future retail banking trend by providing major banking services with just a click on a user-friendly interface on their wearable device.

These are some of the recent trends in the banking and financial sector of India and all these new technologies are predicted to reshape the industry of business and money. The future is going to bring upon a revolution of sorts with historical changes in traditional models. The massive shift in the landscape has few challenges. Nonetheless, the customers are open to banking innovations and the government is showing great support with schemes like "Jan Dhan Yojana," which aims at proving a bank account to every citizen. Meanwhile, the competition from the foreign and private sector banks have strained the government regulators, nationalized banks and financial institutions to adopt new technology in order to stay relevant in the race.

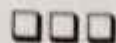
CONCLUSION

The Banking sector is now observing a new wave of evolution with innovations in the space, especially with the production of prepaid wallets. Indian Banking Industry has displayed significant resilience during the return period. The second generation returns will play a vital role in further establishment of the system. Indian banking system will further develop in size and complexity while playing as a significant role as agent of economic growth and intermingling different sections of the financial sector. It is sure that the future of banking will offer more cultured services to the customers with the continuous product and process modernizations. Adoption of rigorous prudential norms and higher capital standards, better risk management systems, adoption of universally

accepted accounting practices and increased disclosures and transparency will safeguard the Indian Banking industry saves pace with other advanced banking systems. Finally the banking sector will need to lead a new business model by building management and customer services. Banks should contribute concentrated efforts to render better services to their customer. Nationalized and commercial banks should monitor the Recent trends and to get advantage of openings in changing banking scenario.

Reference

1. Bhosale, Tanaji S. and Sawant B.S., 2013. "Technological Developments in Indian Banking Sector." IJER, 6:21-28. Binija G., 2015.
2. Recent Trends in Banking Sector, International Journal of Current Research, 7(10): 213-215. Goyal K.A. and Joshi V., 2011.
3. "Mergers in banking industry of India: some emerging issues". Asian journal of Business and Management Sciences, 7:157-165.
4. GUPTA AND SHRIVASTAVA: EMERGING TRENDS IN BANKING SECTOR: RADICAL TRANSFORMATION AND SURVIVAL Indian J.Sci.Res. 20(2): 220-226, 2018 Yajurvedi N., 2014.
5. Emerging Trends in Banking. Indian Journal of applied research Reserve bank of India Annual reports. 42: 225-229. Uppal R.K., 2007.
6. Banking services and IT' New Century Publications, New Delhi, 2007. Zhao T., Casu B. and Ferrari A., 2008.
7. "Deregulation and Productivity Growth: A study of the Indian commercial banking industry". International journal of Business Performance Management, 22: 318-343.
8. www.google.co.in
9. <https://www.enterpriseedges.com/banking-financial-service-trends-india>.



VOL 5
SPECIAL ISSUE 1
SEPTEMBER 2019



ISSN:2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197 (IJIF)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of NAAC sponsored seminar on
Use of Technology and E-Content in Teaching and Learning
23rd September, 2019



Issue Editors

Dr Vishnu Patil
Dr Avinash Dhotre



Organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
DEOGIRI COLLEGE, AURANGABAD



27. Role of ICT in the Enhancement of English Language Teaching	Dr.R.A. Landage	96
28. Electronic Media as an Alternative Media for Minorities, Dalits in India: Prospects and challenges	Dr. P. B. Pagare R.A. Gaikwad	98
29. Teaching of English Prose and Poetry: A Technical Way	Dr.D. M. More	102
30. Mobile Technologies and Applications: Facilitator of Teaching and Learning in Science	V.S Suryavanshi A.W. Suryavanshi	105
31. An Impact of Effective Use of ICT for Improving the Quality of Teaching & Learning Process	V.B. Bhise, S. B. Gaikwad, S.N. Tayade, S.M. Shende, V.B. Bhise & S.A. Chandrashekhar	111
32. Role of E-PG Pathshala In Teaching And Learning Sanskrit	Dr. Pradnya Konarde	112
33. Role of ICT in the Process of Teaching and Learning	Dr. G.S. Adgaonkar	113
34. Training through Blended Mode in ICT for Effective Teaching Learning Process	B.G.Toksha, T.P. Kulkarni, S.V. Lomte, P. M. Ambad, G.S. Sable, K. B. Kulkarni, S. P. Bhosle	115
35. Uses of Mobile Apps in Teaching and Learning	D.A.Yewale	121
36. Significance of ICT in Twenty First Century in Education: An overview	Dr. S.R. Sawate	121
37. Innovations in Education Technology: Getting the Classroom Interactive	Dr. M.Y. Suryavanshi	131
38. E-learning: Scope and Challenges in India	P.M. Dhengle	133
39. Importance of Technology in Teaching and Learning Process	Dr. Mohini Gurav	137
40. Rethinking the Optimization of Technology in Teaching Learning and Evaluation	Bharat Sonar	140
41. NPTEL-A Source of E-Content	Dr.S.Chawthaiwale Dr.S. N. Dhage	142
42. E-learning the Need of Today's Education	Dr. V. P. Pagore Dr. P.N. Bajad	145
43. The Innovative Concept of Google Classroom	A. K. Patil	148
44. Evaluation of Utility of Technology Assisted Teaching Learning In Legal Education	Dr. A. N. Kottapalle	148
45. Use of Interactive Whiteboard in Teaching-Learning	A.N. Ardad	151
46. Using Technology for Effective Teaching and Learning	Dr. R.Shesham, Dr. K. Thombre, Dr. P.Sonune	154
47. Difficulties to Implement the Massive Open Online Course at Rural Level	Dr. V. D.Matkar	157
48. MOOC आणि मराठी	डॉ.समिता जाधव	158
49. प्रसारमाध्यमे व भाषिक कौशल्ये यांचे अभ्यासक्रमात स्थान	डॉ. दत्तात्रय प्र. हुंबरे	160

Uses of Mobile Apps in Teaching and Learning

Mr. Dnyaneshwar Ankushrao Yewale

Head, Dept. of Commerce

Kalikadevi Arts, Commerce and Science College Shirur (Kasar)

Tq. Shirur (Kasar) Dist. Beed

Abstract: The use of mobile devices is increasing to become a very important part of standard of living. This ascent has provided new platforms for a good variety of applications. In today's context, m-learning is taken into account the newest sort of learning introduced as a result of this historic period, within which new learning choices are provided through mobile applications. This paper presents a review of m-learning and summarizes the most benefits likewise because the potential challenges of mobile learning through mobile applications.

Keywords:- M-learning, Applications, Devices, Teaching.

Introduction: The education system focuses on committal to memory over the abilities of the scholars. Lecturers play a big role within the education system and also the lives of the youngsters. Lecturers are higher equipped with infrastructure so as to create categories student-friendly (Montrieux, Vanderlinde, Schellens, & Marez, 2015). Lecturers acquire fashionable education skills by group action advanced teaching tools into the teaching-learning method (Falloon, 2013). There are school-level variables that influence the employment of technology in categories. In fact, the ICT coordinator United Nations agency teaches lecturers, and provides data on victimization ICT (Strudler & Hearnington, 2008) at the side of faculty ICT (Integrated room Technology) infrastructure (Albirini, 2006) and group action the procedure throughout room lessons. Studies have shown that the employment of mobile applications mix teaching designs with the training sorts of students creating learning a brand new expertise for the scholars (Rossing, Miller, Cecil, & Stampeer, 2012) and students are extremely intended by the implementation of tablets because the relationship between students and student-teacher relationship improved.

Plan Your Curriculum around the 4 Cs of Mobile Learning: Mobile learning goes way beyond a few tailored apps. When you're planning a mobile curriculum, think about the different ways students

can use a mobile device. The eLearning Guild calls it "the four C's of mobile:"

- **Content:** Students can read documents, watch videos and listen to recorded media in a portable format.
- **Compute:** Through applications, devices can be used to perform calculations, run programs and deliver computed solutions to student queries.
- **Capture:** Devices can be used to easily record sound, video, images, and other information, all of which can be stored or shared.
- **Communicate:** Students can communicate with students, teachers, and others through text, audio and video.

Utilizing all four C's of mobile learning can help you focus lesson plans and expand the way in which students use the devices. What's more, different types of learning are represented; visual learners benefit from photo and video applications, for example, while auditory learners find a facility with recorded assignments.

Objectives:

- To Study Use mobile apps in teaching and learning
- To Study Benefits of Using Mobile Applications in Education

Methodology: This present study is based on secondary sources like books, Articles, Journals, Thesis, University News, Expert opinion and websites etc. The method used is Descriptive Analytic method

Mobile Apps For Teaching & Learning

Technology has come a long way to lead a simple and comfortable lifestyle. Likewise the recent development of mobile apps such as BYJU'S, Wikipedia, TED, myCBSEguide, Duolingo, Dictionary.com, SoloLearn, Khan Academy, Grammarly, Coursera etc helps teachers and students to make classroom more students friendly. There are many mobile apps that can be used in classrooms. There are few that have been mentioned here:-

BYJU'S - The Learning App

The app says "Fall in Love with learning!"

The app wants every student to stay on top in every subject. The Company offers the best teachers including Byju Raveendran, using state of the art technology for visualization. The app provides all the features that allow you to and master all concepts right from High School Foundation-Class 6-12 Math & Science to Competitive Exam Prep like JEE, AIPMT, CAT & IAS.

Features-

- Engaging Video Lessons
- Special Modules on ICSE, CBSE Sample Papers for Class 7-10 students and AIPMT & IITJEE coaching for Class 11-12 students.
- Video lectures For CAT Aspirants directly from Byju and Santosh themselves and complete test series (over 200 chapter wise tests) and 20 Full-Length Mocks.
- The modules are planned in a way as to provide complete coverage of all state-level Boards, ICSE and CBSE syllabus for class 10, 9, 8 and 7.
- Complete IIT JEE Preparation and AIPMT Preparation for Class 11-12.
- Chapter wise Tests for Class 7-12:
- Large collection of full length and topic based tests including IITJEE and AIPMT Mock Tests & ICSE and CBSE sample papers for class 10 to 7.
- Detailed Analysis to improve your performance.
- Personal Mentors & Guides for a solid foundation for IIT JEE preparation.
- Adaptive Learning

Wikipedia

Wikipedia is designed to let its users discover and explore knowledge. The App is literally an example of Ask Me Anything, the free encyclopedia has more than 39 million articles in nearly 300 languages.

Features-

- Wikipedia provides topics such as current affairs, Trending topics, this day that year.
- Customized feed which lets you choose your desired content and rearranging the orders.

- For the most comfortable reading experience, you can customize the app with a choice of Light, Dark, and Black themes, as well as text size adjustment.
- Voice-integrated search
- Learn more about what's around you by selecting points on an interactive map to see articles related to your current and nearby location.
- Switch to reading any language-supported Wikipedia, either by changing the language of the current article, or changing your preferred search language while searching.
- Table of contents which lets you jump to article sections easily.
- The user can organize the articles and browse into reading lists, which you can access even when the user is offline.
- Sync lists to your Wikipedia account across devices.
- Tap on an image to view the image full-screen in high resolution, with options to swipe for browsing additional images.
- Tap-and-hold to highlight a word, then tap the "Define" button to see a definition of the word from Wiktionary.
- Access Wikipedia for Android free of data charges for participating mobile operators.

TED: The TED mobile app gives you access to some of the most amazing speeches and presentations by the most intelligent and qualified people on the planet. You can Explore more than 3,000 TED Talks from remarkable people, by topic and mood, from tech and science to the surprises of your own psychology.

Features-

- Browse the entire TED Talks video library
- subtitles in over 100 languages.
- Listen to episodes of the acclaimed TED Radio Hour podcast
- Listen to TED's new podcast: Sincerely, X, where we dive into ideas shared anonymously.
- Log in to your TED profile to sync saved talks on all devices.
- Download video or audio of talks for offline playback.
- Bookmark talks for later.
- Discover inspiring, funny, or interesting talks and curated playlists.
- build your customized playlist
- Play on your device or send to your home entertainment system via Chromecast or with Android TV.

my CBSE guide - CBSE Papers & NCERT Solutions: With the myCBSEguide mobile app, you Get FREE access to NCERT solutions, CBSE syllabus, CBSE Sample Papers, Quick revision Notes, NCERT Exemplar solutions and Chapter-wise important questions. Watch best videos, Play & Practice online Tests it provides e-learning solutions for K-12 students. It is one of the most trusted websites among CBSE students and teachers.

Features-

- You can View latest CBSE syllabus for classes 3 to 12.
- Access chapter-wise quick revision notes for free.
- Go through the chapter-wise important questions.
- Get NCERT solutions for all the classes.
- Practice unlimited tests online.
- Play quizzes with your friends in real-time and challenge them online.
- Get notified of latest news and updates.
- Revise and practice papers on the go.
- Explore the gamified learning solutions.

Duolingo : With Duolingo mobile app you can Learn Spanish, French, German, Italian, Russian, Portuguese, Turkish, Dutch, Irish, Danish, Swedish, Ukrainian, Esperanto, Polish, Greek, Hungarian, Norwegian, Hebrew, Welsh, Swahili, Romanian and English. Also, it allows you to Practice your speaking, reading, listening and writing skills while playing a game. With the help of this app, you can improve your vocabulary and grammar skills by answering questions and completing lessons. Start with basic verbs, phrases, and sentences, and learn new words daily.

Features:

- It's free, for real.
- It's fun. Advance by completing bite-sized lessons, and track your progress with shiny achievements.
- It's effective. 34 hours of Duolingo are equivalent to a semester of university-level education.
- Simple and sober
- Easy learning

Dictionary.com: Search Words & English Vocabulary: With Dictionary.com you can Search words, Learn vocabulary and find any definition, Study grammar and learn how to pronounce English words

The Dictionary.com word search covers 2,000,000+ English words and synonyms. Study grammar and learn how to pronounce English words. Advance your learning and education anytime, anywhere.

Dictionary.com is the perfect ACT or SAT prep guide. You Learn words and synonyms from your ACT or SAT vocabulary list, study grammar and perfect your spelling.

Features -

- Search words without spelling them by using your voice
- Learn vocabulary and the definition of the auto word search.
- Find synonyms and antonyms.
- Find out how to pronounce English vocabulary
- Etymology: Look up the origin and definition of even the strangest English words.
- Word of the Day
- Save your favorite words or SAT vocabulary list for easy reference
- Search words by location
- Spelling suggestions
- fun grammar facts, a language in the wild and other topics with hundreds of articles.
- **Features that can be unlocked by in-app purchases:**
 - Encyclopedias
 - Slang Dictionary
 - Idioms and Phrases
 - Example Sentences
 - Medical, Science and Rhyming Dictionaries

Solo Learn: Learn to Code for Free: SoloLearn has the largest collection of FREE code learning content from beginner to pro. You can Choose from thousands of programming topics to learn coding concepts, brush up your programming knowledge, or stay aligned with the latest coding trends. Fresh learning content is created by the community daily, facilitating efficient and effective coder skill improvement.

Languages you can learn-

- Web Development, including HTML5, CSS3, JavaScript, JQuery
- Python
- Java
- C++
- C
- C#
- PHP
- SQL
- Algorithms & Data Structures
- Ruby
- Machine Learning
- Design Patterns
- Swift

Features-

- Content is delivered based on your progress, preference, and hottest market trends.

- Free 24/7 Peer Support
- Free knowledge sharing
- A free mobile Code editor

Grammarly: Grammarly is also one of the best educational apps to be used on a computer or mobile phones. This lets the users write English with perfect spellings and grammar. No matter you write an informal letter or write a formal application, grammarly helps you everywhere. You can get discount on grammarly subscription by visiting grammarly.discount-coupons.net/

Khan Academy: Khan Academy offers practice exercises, instructional videos, and a personalized learning dashboard that empower learners to study at their own pace in and outside of the classroom. We tackle math, science, computer programming, history, art history, economics, and more. Our math missions guide learners from kindergarten to calculus using state-of-the-art, adaptive technology that identifies strengths and learning gaps.

Features-

- You can learn anything for free
- Over 10,000 videos and explanations in math, science, economics, history, etc.
- over 40,000 interactive Common Core-aligned practice questions are included with instant feedback and step-by-step hints.
- navigation and search make it faster to find what you want
- Keep learning even when you're offline
- Pick up where you left off: Your learning syncs between your Android and khanacademy.org, so your progress is always up-to-date.

Coursera: Online courses

The Coursera App for Android allows you to Learn on the go with Access to more than 1,000 courses and Specializations developed by 140+ of the best colleges and universities in the world and helping you to advance in your career or continue your education by mastering subjects from Python programming and data science to photography and music.

Subjects offered-

- Computer Science: Programming, Mobile, and Web Development
- Data Science: Machine Learning, Statistics, Probability, and Data
- Business: Accounting, Marketing, and Entrepreneurship
- Sciences: Robotics, Chemistry, Nutrition, and Medicine
- Art, including Design, Photography, Music, and Creative Writing...and more!!

Features -

- Browse 1000+ courses in a variety of subject areas, from math to music, to medicine
- Stream lecture videos online any time, or download for offline viewing
- Transition seamlessly between web and app learning, with coursework, quizzes, and projects saved across both platforms
- Learn in dozens of languages, including Chinese, Spanish, Portuguese, French, and Russian
- Earn Course and Specialization Certificates

Benefits of Using Mobile Applications in Education

1. Enhanced Interaction

Experts say that apps in education will create kids a lot of interactive and activate higher engagement between folks and kids. the foremost effective means is to interact with the kids whereas they're victimization applications. Interaction tendency in kids is increased by mobile applications

2. Novel learning techniques

Thoughts of ancient strategies of learning accompany a generic feeling of tedium. they are doing not favor drifting from the monotonous learning patterns of restricted and upright book learning, therefore dissipating the engagement issue. Technology within the pretense of apps helps those searching for some age within the universe of learning. additionally to the texture of novelty, apps add part of fun and involvement to the training method. Through games, puzzles or different difficult tasks, app learning stimulates the brain cells to actively metabolize the input unleashing a replacement perspective.

3. Parent-teacher communication

The ideal idea of frequent parent teacher interactions finds its area within the articles and books relating to performance sweetening however not truly. due to the tight schedule of each the parties, it's simply impossible to keep up the rapport through physical interactions. But now, we've got apps. academics will attend to the queries of the oldsters associate degree time and anyplace through an ominous device referred to as the phone. This fosters transparency relating to the child's growth in class.

4. Online resources

The power of digital world lies within the ginormous quantity of resources that fill its nooks and corners. The wealth of this platform

implicates its quality among data seekers. The reach of this platform makes it a favourite to folks that cannot afford the luxurious of full time courses in colleges or schools.

Mobile applications facilitate them access a compendium of ebooks and pdfs and different on-line materials and also the freedom to access it on the far side the boundaries of your time and area.

5. Entertainment

According to studies, mobile apps promote entertainment. Learning is no more a passive activity, it's active with applications. Lessons transforming to games can change the face of education. Children will enable a kind of interest in learning. Level based apps instil determination to pass each level. Apps without doubt enhance education. *No more boring home works and tough class lectures.*

6. Availability 24/7

Unlike school, mobile applications are available round the clock. No need to be worried about schedules. Anywhere can be a classroom. App learning is not time-bound learning, its relaxed learning. Most of the apps promote child-friendly control. Children should only need to reach out for the device when they feel like learning. Little ones can operate it without much effort.

7. Leisure Hours Utilization

No accountable folks wish their children to urge keen about the "idiot box", an excessive amount of net usage and talking over the phone for hours don't seem to be wise choices for killing time, this is often wherever mobile apps prove their value. Mobile app learning is one in every of the wisest selections of utilizing your free time actively.

If a baby has many time off, it will be used to find out one thing new with the assistance of a learning app, amusement bonded while not dalliance.

8. Routine tasks

It's a relief to urge all the mundane tasks finished some faucets. Be it tasks like fee payments, different transactions that need United States of America to square in an exceedingly queue for hours or the effortful job of marking attending that drives academics crazy with the quantity of work smiling back at them every day. All this toil has been place to associate degree finish just by having apps in situ. The lifetime of every individual related to the system is currently easy and functioning, a lot of economical.

9. Filling in the gaps

The wheel of your time has spun to drive the gen to land United States of America into the globe we tend to board these days.

The advancement that colleges have seen eliminated loads several glitches that prevailed within the education system, a significant one being the shortage of interaction between the academics and also the academics. Apps and websites are created to assist cut back the gap not simply between the scholars additionally the) educators however also among folks and also the academics. Students and fogeys will be unbroken within the loop of each event, schedule modification or announcement..

10. Better Earth

While millions of trees are cut down for making papers for the traditional method of learning, mobile apps in education requires just a download. It means a greener earth for future generations. Mobile learning process has sustainability. Completing a lesson with an app is much more effective as it is learning from experience rather than from compulsion.

11. Systematic Learning Activated

Smart learning is one issue and systematic learning is next. App primarily based learning permits each. Mobile apps facilitate in systematic learning. Apps are organized in such how that, it promotes not solely a searching for learning however systematic learning. The apps are organized in an exceedingly systematic means that it becomes doable for college students to travel with the flow while not even realizing..

12. Portability

There are no constraints for mobile phones.. They can be constant companions of parents and students. Thereby, apps are available to children anywhere, anytime. Learning will not be confined to the classrooms alone.

13. More Than Just Children

It's a misconception that only children are benefited out of the apps. Teachers and parents also benefit from using educational apps. Teachers can make use of apps in classrooms. There are apps that help teachers to plan teaching materials. App based learning allows teachers and parents more time to discuss lesson plan for better interactive classes. While selecting apps for children, parents and teachers can contribute a lot.

14. Sustainability

Using mobile apps for learning is more sustainable compared to the traditional learning methods which

include papers, pencils, and pens. Getting reference notes is very simple in mobile learning- just download it. This results in a lesser number of trees being cut down every year.

15. Instant Updates

There are some apps which are not only meant for learning but also to stay updated about campus events, timetables, alerts and other important information. Soon apps will allow you to do the educational related payments such as tuition fees, library fines, etc. They also provide opportunities to interact with students throughout the life cycle of prospects, enrolled students, and alumni.

16. Track Your Children's Progress

With some apps, you can track your children's progress which is one of the important things that every parent wants to know. Along with the progress, you can visualize how each app is helping your children to improve their skills such as reading, maths and much more.

17. Staying connected

Educational apps are the best way for children to stay connected with their teachers. Though the way of learning through apps is entirely different from the traditional learning method, it adds value to the entire process.

Conclusion

The study has evaluated the varied mobile apps that may improve room expertise and increase tutorial performance among the scholars. It conjointly helps in developing higher teacher-

student relationship because the teaching methodology is a lot of students friendly. The ability in victimization the app among numerous students and among bigger plenty within the room makes it user friendly. Moreover, the bigger advanced in tools for academics have created college settings a lot of accessible for comprehensive academic purpose.

References

1. Edmodo. (2010). CISKON PR. Newswize. Retrieved from Edmodo. Microblogging Platform for Educators. Merges with Revolution Learning's Fusion Project
2. F. G. (2013). Young students using iPads: App design and content influences on their learning pathways. *Computers & Education*, 68, 505-21.
3. Macaluso, K. D., & Hughes, A. (2016). The Use of Mobile Apps to Enhance Student. *Society for the Teaching of Psychology*, 43(1), 48-52.
4. Montrieux, H., Vanderlinde, R., Schellens, T., & Marez, L. D. (2015, December 7). Teaching and Learning with Mobile Technology: A Qualitative Explorative Study about the Introduction of Tablet Devices in Secondary Education. Retrieved from
6. <https://www.teachthought.com/technology/beginners-guide-to-mobile-learning/>
7. <https://www.edsys.in/12-benefits-of-using-apps-in-education/>
8. <https://www.theindianwire.com/education/ios-android-educational-apps-india-56205>
9. www.google.co.in





MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue August 2019 **Vidyawarta**[®]

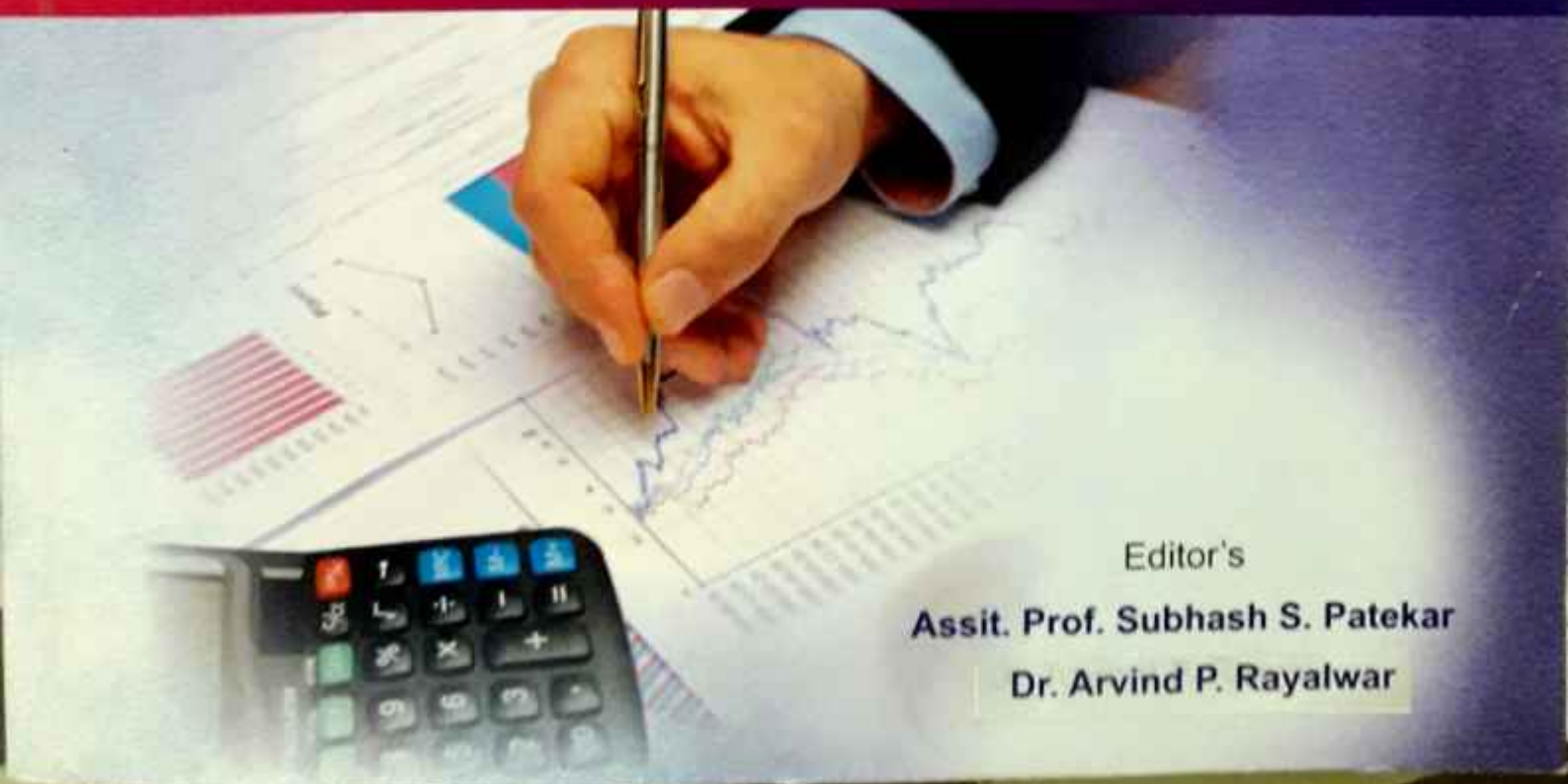
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Bharatiya Shikshan Prasarak Sanstha's Kholeshwar Mahavidyalaya, Ambajogai

Is Organized One day National Conference in Association with
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.

On

Recent Trends and Issues in Economics, Commerce & Management in India



Editor's

Assit. Prof. Subhash S. Patekar

Dr. Arvind P. Rayalwar

द गॅज़ेट ऑफ इंडिया, १८ जुलै २०१८ को प्रकाशित किये गये राजपत्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोगने शिक्षकों और अन्य शिक्षक कर्मचारियों को न्यूनतम अर्हता के बारे में विनियम जारी किया है, जिसमें पृष्ठ संख्या १०५ पर peer reviewed जर्नल्स API स्कोअर या प्रमोशन के लिए मान्य किये जाएंगे ऐसा लिखा है । ये राजपत्र निम्न लिंक पर अक्लेबल है कृपया डाउनलोड करके देखिये।

https://www.ugc.ac.in/pdfnews/4033931_UGC-Regulation_min_Qualification_Jul2018.pdf

More Details

https://www.youtube.com/watch?v=g_fzq2Mi7yM&t=4s

रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99

REGD. NO. D. L. -33004/99



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 271]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 18, 2018/आषाढ़ 27, 1940

No. 271]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 18, 2018/ASHADHA 27, 1940

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 जुलाई, 2018

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में शिक्षकों और अन्य शैक्षिक कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु न्यूनतम अर्हता तथा उच्चतर शिक्षा में मानकों के रखरखाव हेतु अन्य उपाय संबंधी विनियम, 2018)

- 58) Recent Trend in Poultry Farms in India
Shri Shinde Amol Sitaram & Shri B. S. Sawant, Kalamb ||221
- 59) An analytical approach of tax planning regarding house property
Dr.Deeksha Barde, Obedullaganj ||225
- 60) RECENT TRENDS IN BANKING SECTOR
Smt. Surekha Eknath Brahmankar, Niphad ||228
- 61) CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY IN INDIAN PRIVATE SECTOR
Asst. Prof. Subhash Patekar, Dist. Beed (MH) ||231
- 62) The emerging trends in Digital Marketing in India
Dr.Adgaonkar Ganesh Sudhakar, Dist.Beed ||235
- 63) Mode of digital payments in retails: progress and challenges
Dr. G.M. Morey, Dist- Nandurbar ||240
- 64) Innovation in enhancement of Customer Experience and services in the ...
Dr. S. Chandramouli, Hyderabad ||244
- 65) GREENING EDUCATIONFOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT
Dr. RATHI MAMATA J., Ambajogai ||249
- 66) New Trends in Banking and Financial Services in India
Mr. Dnyaneshwar Ankushrao Yewale, Dist. Beed ||255
- 67) Online Shopping – A Study of Preference Towards Shopping Online.
Dr. Arvind Rayalwar, Ambajogai ||259
- 68) Overview on Industrial Development Bank of India Ltd. (IDBI)
Dr. Kotgire Manisha Arvind, Dist. Aurangabad ||262
- 69) Trends in Human Rights
Ms. Pratima Kamlakar Kamble, Nanded ||265
- 70) The Problems and Prospects of Artificial Intelligence with special reference ...
Ms. Sujata Laxmanrao Patil & Dr. Rajesh B. Lahane, Aurangabad ||268

confused. Individual companies define CSR in their own limited set of practices and references. As a result, all the activities undertaken in the name of CSR are largely altruistic or altruistic extensions. It seems that CSR is developing in the area of profit distribution in India. There is a need to understand the business and increase the social development of the business as an integral part of the good social business with active participation.

References:

- <http://timesfoundation.indiatimes.com/articleshow/4662536.cms>, accessed on 19.11.2011
- Anghel, L., Grigore, G. and Rosca, M. (2011). Cause-Related Marketing, Part of Corporate Social Responsibility and its Influence upon Consumers' Attitude, *Amfiteatru Economic*, XIII(29), Pp. 72-85.
- Bhattacharya, C., Sen, S., and Korschun, D. (2007). Corporate Social Responsibility as an Internal Marketing Strategy, *Sloan Management Review*, Fall 2007, Pp. 1-29.
- D'Amato, A., Henderson, S. and Florence, S. (2009). Corporate Social Responsibility and Sustainable Business. A guide to leadership tasks and functions, Greensboro: Centre for Creative Leadership.
- EUCAM. (2009). Corporate Social Responsibility: A New Marketing Tool, Trends in Alcohol marketing. Netherlands: European Center for Monitoring Alcohol Marketing.
- Verrghese, A. (n.d.). Partnerships and cause-related Marketing: Building Brands for the Future, [online]. Available at: http://brandchannel.com/papers_review.asp?sp_id=583 [Accessed September 27 2013].
- Grant Thornton. (2008). Corporate Social Responsibility: A Necessity Not a Choice. Bangkok: Author
- Redington, Ian. (2005). Making CSR Happen: The contribution of people management. The Chartered Institute of Personnel and Development (CIPD). London, UK

The emerging trends in Digital Marketing in India

Dr. Adgaonkar Ganesh Sudhakar

Dept. of Commerce,
Kalikadevi Arts, Commerce and Science
College Shirur kasar Dist. Beed

Abstract

Digital Marketing is a piece of a Digital Economy. India is a quick moving country towards the digital economy and this development has been quickened with the demonetization of the Indian Currency in the last quarter of the year 2016. With it, different government digital payment promotion schemes have been propelled. The digital market requires digital promotion and marketing strategies. The telecom segment likewise assuming an imperative part of the digital marketing development. Late dispatch of dependence telecom Jio with the free and boundless web offices has played a progressive role. The other noticeable organizations like Airtel, Idea, Vodafone, and BSNL are additionally offering appealing web designs. Indian banks are additionally giving more client amicable and secure money transaction services. The Presently Indian shopper is investing more energy in online networking and web surfing. In this manner, the permeability of any item is more through the digital medium than conventional marketing strategies. Digital marketing systems incorporate Content Marketing, AdWords, SEO, Social Media, Email Marketing and Website Design. The key player's part players and framework suppliers in Digitization of an Economy are government, managing an accounting framework, Shopping

Portal in India, Internet Service Providers and Software Service Providers.

Introduction

The world is changing, and technology is taking the lead. Today, everything is going digital — entertainment, health, real estate, banking and even currencies. This is, however, understandable. India 627 million, of the population is online.

With everything turning to digital, it means companies are also jumping online to market their businesses. And to survive the challenges of digital marketing, brands need to keep up with the latest trends. Successfully reaching one's target audience is no longer just putting out TV and print ads. These days, social media is the new arena of digital marketers, as 3.3 billion people are active social media users.

Notably, according to January 2018 data (subscription required), 24% of the 5,700 global marketers who were surveyed revealed that social media has been an important part of their marketing for the past five years.

To keep up with the ever-changing scene, digital marketing experts need to stay in step with the evolving tech trends. Social media marketing companies like ours work tirelessly to research consumers and what makes them engage with brands. We try to find the best online solutions that will cater to our clients' end-users' queries in the easiest and most cost-efficient way possible — be it by developing new technology or adapting to trends. After much research, here are the leading digital marketing trends that are paving the way in 2018.

Defining digital marketing

The use of the Internet and other digital media and technology to support 'modern marketing' has given rise to a bewildering range of labels and jargon created by both academics and professionals. It has been called digital marketing, Internet marketing, e-marketing and web marketing and these alternative terms have varied through time...

Objectives :

To study the scope of digital marketing

in India

To Study Top Digital Marketing Trends Research Methodology

Data is going to be collected through Annual Report of Companies, Books, Journals, Magazines and other related literature.

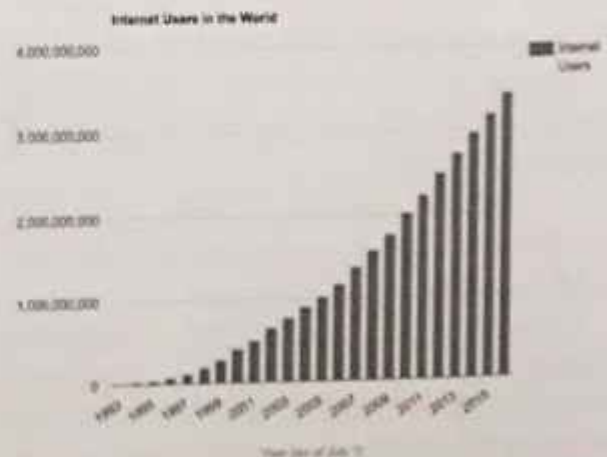
Scope of Digital Marketing in India

Digital marketing is a marketing method to promote products online. So in simple terms, we can say that we are promoting our products to customers who are using the internet. Many concepts of traditional marketing are applicable to digital marketing. In every era, marketing has evolved based on what the customer is using. If you go back in history, you can see that at times when customers used Radio, it gave birth to radio advertising and marketing. Next, we got the boom of televisions; it is one of the widely used device globally, which allowed the companies to reach a mass audience with TV ads. Even today TV advertising is one of the most used advertising strategies for companies. Since the boom of the Internet, more customers started using the Internet, which gave birth to a new era of marketing originally called Internet marketing, which is now called Digital Marketing.

Why companies use digital marketing

Internet Users:

As per the internet usage stats, as of July 2017, 50% of the world population is using the internet. (i.e) 3.42 Billion Users. The total number of users in 1995 was less than 1% of the world population.



Source : webtrainings.in

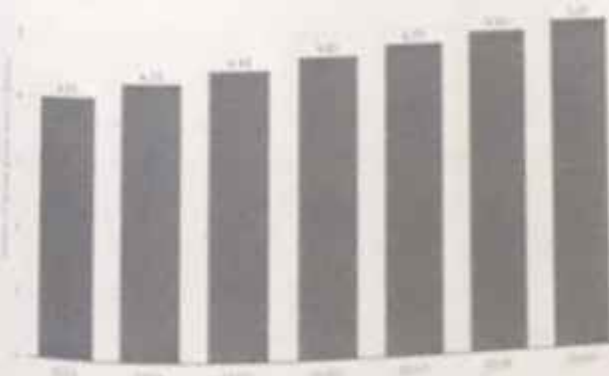
Top 4 Internet Users by Country (Feb 2019)

As we can clearly understand from the above stats that in the next few years more users will be connected to the internet, which gives more scope for digital marketers to reach target audience globally. India has surpassed USA as the 2nd largest country in terms of number of internet users.



Mobile Phones:

Most of the users globally today use mobile phones for communication. As per a report 4.77 billion mobiles phone users globally, which will increase to 5.07 billion by 2019. Today's majority of mobile phones are smartphones with internet access, which allows to customers to connect with businesses anytime & anywhere.



Source: <https://www.webtrainings.in>

Top Digital Marketing Trends

The digital marketing world is constantly crossing newer milestones with each passing

day. It is changing and growing continuously. In order to keep up the pace with the technological advancement of the latest age and enhance your business growth, you must integrate your marketing endeavors with the growing digital marketing trends in 2019. Make your brand marketing more impactful and relevant by following these successful digital marketing trends to push newer boundaries in 2019.

1. Augmented Reality

The technology related to Augmented Reality (AR) is still untapped in more than one way and still in its infant stage. It offers great scope to your brand to get greater ROI with your digital marketing endeavours. It is well-known that games like Pokémon Go that were AR based became a major hit among the people in mid-2016. A large segment of manufacturers and developers are working to create wearable gears based on AR technology to enhance the user experience and creating value for their brand.

In the upcoming scenario, traditional advertisements will give way to AR-based 3D advertisements, allowing the users to stream 3D content directly to get an advanced experience. It enables the users to connect with your brand offering on a much deeper level emotionally. It also enables your marketers to augment your brand awareness, leading the customers to test your products well before they move towards placing the orders.

2. Marketing Automation

The various mechanisms related to marketing are getting accelerated by data-driven technologies. Marketing automation enables marketers to establish better relationships with their customers by automating some of the repetitive tasks such as e-mail reminders, social media postings and leads generation. It is especially beneficial for the new market entrants and small companies that are competing with the top-notch companies by saving their effort and time. Customers are attracted to the brand

in a better way when they receive e-mails that cater to their particular requirements.

The process of marketing automation requires the use of software that is needed to be uploaded with the necessary data related to the user's personalized data. It is a complex technology that can be better managed by partnering with a professional and experienced digital marketing company.

3. Artificial Intelligence

AI has been continuously making dramatic shifts in the digital marketing world for the developments of any brand. It is running parallel to any other marketing tactics and promises to offer you better marketing opportunities in the future. It analyses the behaviour of your users by reading their search patterns on various social media platforms to enable the brands to understand the demands of their users better and offer them the services accordingly.

AI can solve the problems much more effectively than any human mind, and provides you a defined output without any definite possibility of errors. Repetitive tasks can be better handled by AI bots that reduces the load of the employees, further enabling them to perform better. It allows your marketing team to develop a highly curated content that will be highly significant for the recipients.

4. Impactful Stories on Social Media

Social media platforms are ever-evolving and presenting the brands with unlimited opportunities to grow their business with digital marketing efforts. It enhances customer engagement in a big way. Also, it enables marketers to keep the online audience updated with all the current developments taking place in your industry domain. It gives way to daily promotions of your brand by posting marketing content on various social media platforms like Facebook, Instagram, and Twitter.

5. Visual Search

Brand optimization with visual search is

a great way to offer focused and defined results for your users. It allows the users to click a picture or upload a picture related to the product they are looking to find online. It directs them to the items without any hassle. Even though it is in its nascent stage, it holds great potential to become a leading digital marketing technology to deliver perfect results.

6. Influencer Marketing

Under this marketing trend, brands use key figures to promote their brand offering among the online audience. Instagram is rapidly growing up the ladder to become a major source of becoming a platform used for influencer marketing. As the network of social media is scaling up with every single day, there is a rapid increase in the number of influencers as well. Users tend to listen to these well-known celebrities and popular figures ardently.

With the increased use of hashtags and promotional content directed by the influencers on their social media handles, smart brands are taking the content reference from these mentioned posts, and locating the precise on-brand engagements, thereby enhancing their performance of better user engagements. It also plays as a great medium to enhance human-to-human connections and showcase your brand creativity.

7. Programmatic Advertising

An extension of AI to improve the efficiency of your marketing endeavors. Previously, ad industry was managed manually by publishers that controlled and ran the ad industry on the basis of hectic meetings with middlemen and unending negotiations. With the multiplication of online publishers on a daily basis, it has turned out to be a challenge for the advertisers to keep up the pace with it. The solution is bringing in automation in the advertising industry to take better control over things. It allows your brand to cut out the middleman and make the advertising procedure simply. Marketers are developing target-

oriented ads that are produced by using and analyzing the personalized data of online visitors. It has enabled the brands to promote transparency in their advertisement campaigns and curtail the instances of fraud, created by the middlemen. It also makes the process of advertising quicker that leads to increased conversions, better ROI and a decrease in the cost of spending. This digital marketing trend is definitely here to stay.

8. Video Marketing

It is one of the ever growing trends in the digital marketing world. Over the years, visible growth has been seen in user engagements led by pre-made video posts and live videos. It channelizes the information of a particular product or service to the audience in a much clearer manner, making a direct connection between the audience and your brand.

Directly dealing with the audience via Facebook, Twitter and other social media channels with the help of personalized messages and video content enables you to improve the consistency of lead conversions, thereby leading to better opportunities of your business development.

9. Use of Chatbots

It is a mode where you engage with your customers on a real-time basis via an instant messenger and provides solutions to all their queries related to your brand offerings. Over the years, many companies have agreed to the viability of integrating chatbots in their digital marketing strategy to add value to their business. It also allows your brand to offer high-quality services to your customers at any hour of the day, and meet the expectations of your customers at every single time. It has been observed after research that almost 80% of the businesses are planning to incorporate the technology of chatbots in their marketing planning by 2020.

10. Voice Search

Technologies of Google Voice and Apple's Siri have already made a big name for themselves in the digital world. Voice search

provides precise answers to the customers without confusions, leading to the desired outcome for them. Most of the successful marketers create a detailed voice script matching the customers' requirements and offering creative solutions to their concerns. In the digital marketing world, people are looking forward to creating better voice scenarios based on surveys, internal data, and communications with real customers.

Not just the target audience, it is also hitting successfully with the new and emerging digital audience as well, especially in the small cities and towns. To emerge as a successful marketer, you can very well explore the great potential of voice search for your marketing efforts related to brand promotions.

11. User-Generated Social Media Content

It has been on the trajectory of growth in recent years in the digital marketing world. User-generated content is any type of brand-related content that is shared by the brand audience on their social media channels like Facebook, YouTube, and Twitter. Attention is better directed towards producing and promoting more and more user-generated content, as the targeted audience look forward to getting validations from social and digital marketing platforms.

It also enhances customer engagements with your brand. It creates a chain of the customers that bring closer the potential leads with the existing customers smoothly. It is a growing trend among the millennial generation and needs to be used to its full potential to get better access to lead conversions and your brand promotions.

2019 will be all about enhancing the user experience by delivering better personalized, AI-driven and automated content. To stay ahead in the competition, you need to get a better grip on generating a custom content, integrating it well with audio and video enhancements to attract the attention of targeted audience towards your brand in a seamless manner.

CONCLUSION

As we all are experience a radical

change in India towards the digitalization. The consumer are looking and searching more on internet to find the best deal form the sellers around India. Digital marketing such as search engine optimization (SEO), search engine marketing (SEM), content marketing, influencer marketing, content automation, e-commerce marketing, campaign marketing, and social media marketing, social media optimization, e-mail direct marketing, display advertising, e-books, optical disks and games, are becoming more and more common in our advancing technology. Today we all are connected through whats app and facebook and the increasing use of social media is creating new opportunities for digital marketers to attract the customers through digital platform. Digital marketing is cost effective and having a great commercial impact on the business..

References

1. Pratik Dholakiya (14 April 2015). "3 Digital Marketing Channels That Work for Every Advertiser"
2. Mohammed R., "Internet Marketing , McGraw Hill, New York, Vol. 4, 2001
3. Devi .C.S and Anita.M (2013) : "E marketing challenges and opportunities pg. 96 – 105 retrieved from www.ijrm.in
4. Shanker, Ravi (1998), Marketing on the Net, (Dissertation), Banaras Hindu University, Varanasi, India.
5. Karakaya F., T.E. Charlton., "Electronic Commerce: Current and Future Practices , Managerial Finance, Vol. 27 (7), pp. 42-53, 2006
6. Krishnamurthy, S. & Singh, N. (2005), The International E-Marketing Framework (IEMF):
7. Reedly, J., Schullo, S., And Zimmerman, K. (2000), Electronic Marketing (Integrating Electronic Resources Into The Marketing Process), Harcourt College Publishers
8. Boudreau, M.-C. & Watson, R. T. (2006), Internet Advertising Strategy Alignment Internet Research, 16, 23
9. www.google.co.in

Mode of digital payments in retails: progress and challenges

Dr. G.M. Morey

Assistant Professor, Dept . Of commerce,
Arts, commerce & Science College Taloda,
Dist- Nandurbar

Abstract:In India retail sectors is very wide. It is one of the pillars of Indian economy. The shares of retail sector in GDP are up to 10 percent and employment generated around 8 percent. the retail sector of India is divided into two types. Unorganized retail and organized retail. Where unorganized trade forms around 93 per cent of the overall trade and remaining shares of organized retail trade.

The online retail trade is growing very fast in India. One of the major cause to growing online retailing is the e-commerce. E-commerce change the face of Indian retail sector. In the e-commerce apply the online business function and payment methods therefor day by day the new digital payment is arising in the e-commerce and that payment method adopted in retail trade also. Therefor in the present paper analysis the digital payment in retail sector.

Keyword- Digital Payment, Methods, Digital Retail.

Introduction –

E-commerce growing in the India from past two decades. Now all sectors acquires form e-commerce so retail sector are not except. E-commerce creates new revolution in retail sector. The online retail business is growing very fast. Foreign investment and organized retailer change the look of traditional retail sector and

VOL. 5
SPECIAL ISSUE 1
SEPTEMBER 2019



ISSN:2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197 (IIJIF)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of NAAC sponsored seminar on
Use of Technology and E-Content in Teaching and Learning
23rd September, 2019



Issue Editors

Dr Vishnu Patil

Dr Avinash Dhotre



Organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
DEOGIRI COLLEGE, AURANGABAD



27. Role of ICT in the Enhancement of English Language Teaching	Dr.R.A. Landage	96
28. Electronic Media as an Alternative Media for Minorities, Dalits in India: Prospects and challenges	Dr. P. B. Pagare R.A. Gaikwad	98
29. Teaching of English Prose and Poetry: A Technical Way	Dr.D. M. More	102
30. Mobile Technologies and Applications: Facilitator of Teaching and Learning in Science	V.S Suryavanshi A.W. Suryavanshi	105
31. An Impact of Effective Use of ICT for Improving the Quality of Teaching & Learning Process	V.B. Bhise, S. B. Gaikwad, S.N. Tayade, S.M. Shende, V.B. Bhise & S.A. Chandrashekhar	111
32. Role of E-PG Pathshala In Teaching And Learning Sanskrit	Dr. Pradnya Konarde	111
33. Role of ICT in the Process of Teaching and Learning	Dr. G.S. Adgaonkar	111
34. Training through Blended Mode in ICT for Effective Teaching Learning Process	B.G.Toksha, T.P. Kulkarni, S.V. Lomte, P. M. Ambad, G.S. Sable, K. B. Kulkarni, S. P. Bhosle	111
35. Uses of Mobile Apps in Teaching and Learning	D.A.Yewale	121
36. Significance of ICT in Twenty First Century in Education: An overview	Dr. S.R. Sawate	121
37. Innovations in Education Technology: Getting the Classroom Interactive	Dr. M.Y. Suryavanshi	131
38. E-learning: Scope and Challenges in India	P.M. Dhengle	131
39. Importance of Technology in Teaching and Learning Process	Dr. Mohini Gurav	137
40. Rethinking the Optimization of Technology in Teaching Learning and Evaluation	Bharat Sonar	140
41. NPTEL-A Source of E-Content	Dr.S.Chawthaiwale Dr.S. N. Dhage	142
42. E-learning the Need of Today's Education	Dr. V. P. Pagore Dr. P.N. Bajad	145
43. The Innovative Concept of Google Classroom	A. K. Patil	148
44. Evaluation of Utility of Technology Assisted Teaching Learning In Legal Education	Dr. A. N. Kottapalle	148
45. Use of Interactive Whiteboard in Teaching-Learning	A.N. Ardad	151
46. Using Technology for Effective Teaching and Learning	Dr. R.Shesham, Dr. K. Thombre, Dr. P.Sonune	154
47. Difficulties to Implement the Massive Open Online Course at Rural Level	Dr. V. D.Matkar	157
48. MOOC आणि मराठी	डॉ.सर्मिता जाधव	158
49. प्रसारमाध्यमे व भाषिक कौशल्ये यांचे अभ्यासक्रमात स्थान	डॉ. दत्तात्रय प्र. हुंबरे	161

Role of ICT in the Process of Teaching and Learning

Dr. Adgaonkar Ganesh Sudhakar

Dept. of Commerce

Kalikadevi Arts, Commerce and Science College Shirur (Kasar)

Tq. Shirur (Kasar), Dist. Beed

Abstract:

The use of ICT in teaching-learning method could be a comparatively new development and it's been the tutorial researchers' focus. The effective integration of this technology into room practices poses a challenge to lecturers and directors. This empirical study aimed toward searching for the factors influencing use of ICT to create teaching learning effective in higher establishments of learning in Asian country and characteristic the innovations that ICT has brought into teaching-learning process, particularly in higher institutions of learning in India. A survey was utilized and so as to by trial and error investigate the study. The findings of this study unconcealed that teaching employees and directors had a robust need to integrate ICT into teaching-learning processes. The innovations that ICT has brought in teaching learning process include: E-learning, e-communication, quick access to information, online student registration, online advertisement, reduced burden of keeping hardcopy, networking with resourceful persons, etc. However, the presence of of these factors inflated the possibility of fantastic integration of ICT in teaching-learning method. Therefore, the coaching of teaching employees within the pedagogic problems and directors in administration ought to be inflated if lecturers and directors are to be convinced of the worth of using ICT in their teaching-learning process and administration.

Keywords :- Process, Teaching, Learning Application

Introduction : Technology is developed to solve problems associated with human need in more productive ways. If there is no problem to solve, the technology may not be developed and/or not adopted. Applying this principle to educational technology would mean that educational institution should create and adopt technologies that address educational problems, of which there are many. Furthermore, a technology will not be adopted by educators where there is no perceived need or productivity gain. This is what Lankshear, Snyder and Green (2000) refer to as the „workability” principle. Therefore, when discussing applications of computer technology to education the question must always be asked, „what educational problem needs to be addressed? This question needs to be asked at all levels of decision making from the teacher planning a programme, to a school administrator purchasing hardware and software, to an educational system officer developing policy and strategic plans. At the teacher level the question becomes: am I satisfied with the educational opportunities I am able to offer children in school

classrooms? While teachers should never be completely satisfied, and they will always strive to do better, the question really is whether what they provide adequately develops the potential of the students and adequately prepares them for a productive life in the society. Many educators (for example National Centre for Vocational Education Research, 2002) and educational commentator (Muroch, 2001) believe that what is during the late 1970s and early 1980s, computers became more affordable to schools. The use of information and communication technology in schools is taken very seriously by governments and educational systems around the world. As educational systems move towards the mainstream use of ICT in teaching and learning there appear to be more critical steps and vital ingredients needed for the successful infusion of ICT into educational environments. Although stand alone computers have been in most schools for more than two decades now, networked ICT is relatively new for many schools as they continue to grapple with how to use ICT to enhance teaching and learning

environments. Since the development of the first computers many have argued that computers should be used to support learning. These arguments have amplified as computers have evolved into powerful relatively low cost technology available today. However, there is considerable debate over how computers should be used in schools (Riel, 1998). This paper focuses on the use of ICT in schools by students to support the processes of learning and teaching. It will aim to describe the ways in which teachers could and/or should facilitate student use of computer systems and how they can progress. This paper begins with a background to the use of computers in schools, touching on the rationale for computers in schools. This leads into a discussion of the professional development needs of teachers for the progression of using ICT in learning and teaching.

Objectives

To Find Role of ICT in the Process of Teaching and Learning

To Study importance of ICT in Education

Methodology:

This present study is based on secondary sources like books, Articles, Journals, Thesis, University News, Expert opinion and websites etc. The method used is Descriptive Analytic method

Significance of ICT in Teaching-Learning

Assessment

ICT has changed the education scenario in the last few decades by emerging as one of the most efficient tools used in the learning process, both by tutors and learners.

ICT has changed the face of education over the last few decades. "It has proved to be a boon to both the teachers and the learners. Looking for matter beyond the textbooks is no longer a challenge with respect to time and resources anymore."

Assisting in the growth of ICT learning in the country, several brands are ensuring to create options for educational institutions.

Recognizing the importance of digital literacy in rural India, in 2013 Samsung India launched a Smart Class initiative in collaboration with Navodaya Vidyalaya Samiti. The initiative is available across 500 Jawahar Navodaya Vidyalaya Schools, benefitting over 2.5 lakh students. The brand has imparted training to over 8,000 teachers on interacting technology.

Jawahar Navodaya Vidyalaya, feels "60 per cent of the students in our school are the first time users of technology or Smart Class".

Stating that students are now confident and the use of technology is helping our teaching also to a great

extent, he said, "Our results have improvement post-ICT."

"Smart Classes have helped one of our students in developing a mobile application. This app helps the user in calling his/her dear and near ones in case of any emergency just by using the app and that too by a single touch."

Lately, technology is playing a vital role to ensure effective and efficient assessment of learning. Modern technology is offering educators with a wide range of tools that can be used in the classroom.

ICT overpowering Traditional methods

Technology has brought in major changes in the way education is imparted. Teaching and learning process has evolved from being a one-sided activity to an active process involving exchange of ideas. Indulgence of various creative tools and techniques has made the process a collaborative initiative.

Students in today's classrooms are encouraged to participate actively in the learning process and become active producers of ideas and thoughts. "The students are equipped with the correct knowledge, skill and attitude to take full advantage of all the new opportunities that will be available for them in future."

Need and Importance of ICT in Education

"Smart technology" is the familiar terminology that is widely being used in every being's life. Smartphone, tablets, gadgets, smart televisions, etc., are the products of smart technology that have made human life smarter, easier and accessible. Smart technology has not only enhanced the way of living but also became an integrated part of everyone's life. The Information and Communication technology to be precise has become a driving force behind economic growth and a developmental tool as well.

ICT is an extended term for Information technology which is a technological source to make information available at the right time, right place in the right form to the right user. Earlier, one had to wait for the newspapers to get the information across the world. Now with the smarter technology, information can be accessed from anywhere using smart phones and gadgets. All this is made possible with the help of Information and Communication Technology. Information technology has been influencing our lives in the recent years in the fields of education, healthcare, and business. Going an extra mile, Information and communication technology in schools has had a major impact.

Information and communication technology in schools can be used as a school communication tool to improve student learning and better teaching techniques. With the advancement of technology in

education, schools adopt school communication software to transmit, store, share or exchange information. In this technological era, ICT in education has compelled many schools to get accustomed to smart technology. This school communication software uses computers, the internet, and multimedia as the medium of communication.

Computer-based learning: Computer-based learning is one of the modules of school communication tool that helps students to enhance their learning skills through computer aided education. It imparts computer knowledge in students and enables them to obtain large amounts of information from various websites. After two decades of introducing computers to schools, education has been revolutionized ever since then. It reduces time spent on mechanical tasks such as rewriting, producing graphs and increases the scope of searching. It not only helps in finding information but also in organizing information making it easier to share with others.

Internet: Internet tools like Email, social networks, newsgroups and video transmission have connected the world like never before. Students can now communicate using emails and social networking groups that provide knowledge based information. Distance learning, online learning is also enabled through the internet. Students can learn online and also talk to experts online. Notes, readings, tutorials, assignments can be received by students from anywhere. The Internet provides major information in texts, audios, videos and graphics which can be accessed by the individual. Online learning allows students to interact with each other and faculty to interact with students.

Classroom Learning: With the introduction of ICT in education, classroom learning is one attribute that makes learning experiential and experimental to students. Students can listen to the instructor or teacher, receive visual cues through PowerPoint images, handouts or whiteboard lists and participate actively. This helps in immediate interaction and students have opportunities to ask questions and participate in live discussions. This school communication software module further benefits in building and maintaining personal and professional relationships as classrooms offer greater personal contact with other students and teachers.

Video conferencing: This is yet another medium of communication wherein students can communicate

with other students or instructors online. It enables students to become active participants in their own learning. Video Conferencing is a powerful communication tool that has the potential to change the way we deliver information to students. It is just one of the today's integrative technologies that empower students to prepare for a better future. Here are few characteristics that make ICT in education a prominent school communication tool.

- It offers the wide variety of services.
- It is reliable and provides interactive learning experiences.
- It is flexible and provides comfortable learning.
- It motivates students to learn.
- It facilitates communication and promotes creativity.
- It also provides access to the digital library where information can be retrieved and stored beyond textbooks.

The use of ICT in education adds value to teaching and learning, by enhancing the effectiveness of learning. It added a dimension to learning that was not previously available. After the inception of ICT in schools, students found learning in a technology-enhanced environment more stimulating and engaging than in a traditional classroom environment.

My Classboard is yet another school communication tool that bridges the gap between teachers, parents, and students by using its school messenger module. Parents and teachers can interact with each other using this module emphasizing on transparency between the duo. Become a partner with us and build the communication between your teachers and parents with effectiveness and ease.

References :

1. Desai, S. (2010). Role of information communication technologies in education. Proceedings of the 4th National Conference; INDIACom-2010. Computing For Nation Development. New Delhi.
2. Jeelani, S. & Murthy, M. V. R. (2013). ICT based learning in higher education: Challenges and Opportunities. University News, 51(36)
3. Pernia, E.E. (2008). Strategy Framework for Promoting ICT Literacy
4. <https://www.myclassboard.com/blog/need-importance-ict-education/>
5. <https://digitalllearning.eletsonline.com/2017/11/ict-defining-the-role-of-future-education-in-india/>
6. www.google.co.in